Al-Fatah Exclusive Exam Aid

FAZIL (Hon's) First Year Exam-2024

আল-কুরআন অ্যান্ড ইসলামিক স্টাডিজ

তাজভীদুল কুরআনিল কারীমি ওয়া হিফযুহূ ওয়া তারজামাতু মায়ানীহ

Subject Code | 2 | 0 | 1 | 1 | 0 | 2 |

Marks Distribution

☐ **ইনকোর্স পরীক্ষা ও উপস্থিতি : মান– ২০**

ক. ইনকোর্স পরীক্ষা ১৫

খ. উপস্থিতি ৫

☐ **সমাপনী পরীক্ষা : মান– ৮০**

ক-অংশ ▸ তাজভীদুল কুরআনিল কারীম : মান-৩০

১. রচনামূলক প্রশ্ন : ৪টি প্রশ্ন থেকে যে-কোনো ২টি প্রশ্নের উত্তর লিখতে হবে– ১০ × ২ = ২০

২. সংক্ষিপ্ত প্রশ্ন : ৪টি প্রশ্ন থেকে যে-কোনো ২টি প্রশ্নের উত্তর লিখতে হবে– ৫ × ২ = ১০

খ-অংশ ▸ হিফযুল কুরআনিল কারীম : মান-২০

৪টি প্রশ্ন থেকে যে-কোনো ২টি প্রশ্নের উত্তর লিখতে হবে– ১০ × ২ = ২০

গ-অংশ ▸ তারজামাতু মায়ানিয়িল কুরআনিল কারীম : মান-৩০

আল কুরআনের ৪টি নস থাকবে; ২টি নসের অনুবাদ এবং সংশ্লিষ্ট

২টি প্রশ্নের উত্তর লিখতে হবে (অনুবাদ : ৭; সংশ্লিষ্ট প্রশ্ন : ৪ + ৪)– ১৫ × ২ = ৩০

সর্বমোট = ১০০

Exclusive Suggestions

مجموعة (الف)

الدرجات : ٣٠

সম্ভাবনার হার

১- اجب عن اثنين من الاسئلة التالية : ١٠ × ٢ = ٢٠ — ৯৯%

(الف) عرف علم التجويد۔ وما حكمه؟ بين بالايضاح۔

[علم التجويد-এর সংজ্ঞা দাও। এর হুকুম কী? স্পষ্টভাবে বর্ণনা কর।]

(ب) ما معنى التلاوة؟ وما اهمية تلاوة القران؟ اكتب فى ضوء القران والسنة۔

[التلاوة-এর অর্থ কী? আল কুরআন তেলাওয়াতের গুরুত্ব কী? কুরআন ও সুন্নাহর আলোকে লিপিবদ্ধ কর।]

(ج) عرف المد۔ وكم نوعا له؟ اكتب كل قسم بالامثلة۔

[المد-এর পরিচয় দাও। তা কত প্রকার? প্রত্যেক প্রকার উদাহরণসহ লেখ।]

(د) ما المراد بصفات الحروف؟ وكم نوعا لها؟ اكتب بالامثلة۔

[صفات الحروف দ্বারা উদ্দেশ্য কী? এটা কত প্রকার? উদাহরণসহ লেখ।]

أو- اجب عن اثنين من الاسئلة التالية : — ৯৯%

(الف) عرف علم التجويد۔ وما غرضه وموضوعه ونشأته وتطوره؟ بين بالايضاح۔

[ইলমুত তাজভীদ-এর সংজ্ঞা দাও। এর উদ্দেশ্য, আলোচ্য বিষয়, উৎপত্তি ও ক্রমবিকাশ কী? সুস্পষ্টভাবে বর্ণনা কর।]

(ب) اكتب اهمية تلاوة القران الكريم بالتجويد مستدلا من القران والسنة۔

[আল কুরআন ও সুন্নাহর দলীল দ্বারা তাজভীদসহ বিশুদ্ধভাবে আল কুরআনুল কারীম তেলাওয়াতের গুরুত্ব লেখ।]

সম্ভাবনার হার

(ج) عرف المخرج ـ ثم اكتب مخارج الحروف العربية موضحا ـ

[মাখরাজ-এর পরিচয় দাও। অতঃপর আরবি হরফের মাখরাজসমূহ সুস্পষ্টভাবে লেখ।]

(د) اذكر احكام النون الساكنة والتنوين ممثلا ـ

[নূন সাকিন ও তানভীনের বিধানসমূহ উদাহরণসহ উল্লেখ কর।]

٢ـ اجب عن اثنين من الاسئلة التالية بالاختصار : ٥ × ٢ = ١٠ — ৯৯%

(الف) عرف البسملة ـ هل هى جزء من السور ام لا؟ بين بالايضاح ـ

[البسملة-এর পরিচয় দাও। তা কি সূরাসমূহের অংশ না কি অংশ নয়? স্পষ্টভাবে বর্ণনা কর।]

(ب) ما معنى اللحن وكم قسما له؟ بين ـ

[اللحن অর্থ কী? তা কত প্রকার? বর্ণনা কর।]

(ج) اكتب احكام الميم الساكنة ـ

[মীম সাকিনের হুকুমসমূহ উদাহরণসহ লেখ।]

(د) تحدث عن نشأة علم التجويد وتطوره بالايجاز ـ

[علم التجويد-এর উৎপত্তি ও ক্রমবিকাশ সম্পর্কে সংক্ষেপে আলোচনা কর।]

أو ـ اجب عن اثنين من الاسئلة التالية : — ৯৯%

(الف) عرف الوقف واكتب علاماته ـ

[وقف-এর পরিচয় দাও এবং এর আলামতসমূহ লিপিবদ্ধ কর।]

(ب) اكتب انواع صفات الحروف بالايجاز ـ

[صفات الحروف-এর প্রকারসমূহ সংক্ষেপে লেখ।]

(ج) اكتب احكام اللحن ممثلا ـ

[লাহন-এর হুকুমসমূহ উদাহরণসহ লেখ।]

(د) تحدث عن احكام الراء موضحا ـ

[راء-এর বিধানসমূহ সুস্পষ্টভাবে আলোচনা কর।]

مجموعة (ب)

الدرجات : ٢٠

٣ـ اكتب من حفظك اثنين من السور التالية : ١٠ × ٢ = ٢٠ — ৯৯%

(الف) سورة الانفطار؛ (ب) سورة الطارق؛ (ج) سورة الزلزال؛

(د) سورة الليل ـ (ه) سورة العلق؛ (و) سورة الضحى؛

مجموعة (ج)

الدرجات : ٣٠

٤ـ ترجم اثنين من النصوص القرانية واجب عن الاسئلة الملحقة بها : ١٥ × ٢ = ٣٠ — ৯৯%

(الف) الهكم التكاثر ـ حتى زرتم المقابر ـ كلا سوف تعلمون ـ ثم كلا سوف تعلمون ـ كلا لو تعلمون علم اليقين ـ لترون الجحيم ـ ثم لترونها عين اليقين ـ ثم لتسئلن يومئذ عن النعيم ـ

١ـ حلل الكلمات الاتية : التكاثر ـ لترون ـ لتسئلن ـ تعلمون ـ

٢ـ اكتب شأن نزول هذه السورة ـ

(ب) الم نشرح لك صدرك ـ ووضعنا عنك وزرك ـ الذى انقض ظهرك ـ ورفعنا لك ذكرك ـ فان مع العسر يسرا ـ ان مع العسر يسرا ـ فاذا فرغت فانصب ـ والى ربك فارغب ـ

١ـ حلل الكلمات الاتية : نشرح ـ انقض ـ رفعنا ـ فانصب ـ

সম্ভাবনার হার

২- كيف شرح الله صدر النبى صلى الله عليه وسلم؟ بين بالايضاح-

(ج) لا يصلها الا الاشقى- الذى كذب وتولى- وسيجنبها الاتقى- الذى يؤتى ماله يتزكى- وما لاحد عنده من نعمة تجزى- الا ابتغاء وجه ربه الاعلى- ولسوف يرضى-

১- حلل الكلمات الاتية : الاشقى- كذب- يؤتى- تجزى-

২- من الاشقى؟ اذكر صفاته فى ضوء هذه الايات الكريمة-

(د) والعصر- ان الانسان لفى خسر- الا الذين امنوا وعملوا الصلحت- وتواصوا بالحق- وتواصوا بالصبر-

১- حلل الكلمات الاتية : خسر- الصلحت- تواصوا- الصبر-

২- اكتب شأن نزول هذه السورة-

৯৯% أو- ترجم اثنين من النصوص القرانية واجب عن الاسئلة الملحقة :

(الف) والعصر- ان الانسان لفى خسر- الا الذين امنوا وعملوا الصلحت وتواصوا بالحق- وتواصوا بالصبر-

১- فسر قوله تعالى "ان الانسان لفى خسر"-

[আল্লাহ তায়ালার বাণী– ان الانسان لفى خسر-এর তাফসীর কর।]

২- حقق الكلمات الاتية : خسر، عملوا، تواصوا، الحق-

[নিচের শব্দগুলো বিশ্লেষণ কর : خسر، عملوا، تواصوا، الحق]

(ب) انا انزلنه فى ليلة القدر- وما ادرك ما ليلة القدر- ليلة القدر خير من الف شهر- تنزل الملئكة والروح فيها باذن ربهم من كل امر- سلم هى حتى مطلع الفجر-

১- فسر قوله تعالى "تنزل الملئكة والروح فيها باذن ربهم من كل امر"-

[আল্লাহ তায়ালার বাণী– تنزل الملئكة والروح فيها باذن ربهم من كل امر-এর তাফসীর কর।]

২- تحدث عن اهمية ليلة القدر بالايجاز-

[লাইলাতুল কদরের গুরুত্ব সংক্ষেপে আলোচনা কর।]

(ج) واليل اذا يغشى- والنهار اذا تجلى- وما خلق الذكر والانثى- ان سعيكم لشتى- فاما من اعطى واتقى- وصدق بالحسنى- فسنيسره لليسرى-

১- اكتب مميزات الليل والنهار-

[রাত ও দিনের বৈশিষ্ট্যাবলি লেখ।]

২- حلل الكلمات الاتية : يغشى، تجلى، لشتى، واتقى-

[নিচের শব্দগুলো বিশ্লেষণ কর : يغشى، تجلى، لشتى، واتقى]

(د) قل يايها الكفرون- لا اعبد ما تعبدون- ولا انتم عبدون ما اعبد- ولا انا عابد ما عبدتم- ولا انتم عابدون ما اعبد- لكم دينكم ولى دين-

১- تحدث عن خلفية نزول هذه السورة-

[এ সূরাটি নাযিল হওয়ার প্রেক্ষাপট আলোচনা কর।]

২- فسر الاية "لكم دينكم ولى دين"-

[لكم دينكم ولى دين আয়াতের তাফসীর কর।]

Al-Fatah Exclusive Exam Aid

FAZIL (Hon's) First Year Exam-2024

আল-কুরআন অ্যান্ড ইসলামিক স্টাডিজ

তাজভীদুল কুরআনিল কারীমি ওয়া হিফযুহূ ওয়া তারজামাতু মায়ানীহ

Solution to Exclusive Suggestions

مجموعة (الف)

الدرجات : ٣٠

■ اَلسُّؤَالُ (١) : اجب عن اثنين من الاسئلة التالية : ١٠ × ٢ = ٢٠

(الف) عَرِّفْ عِلْمَ اَلتَّجْوِيْدِ۔ وَمَا حُكْمُهٗ؟ بَيِّنْ بِالْاِيْضَاحِ۔

[عِلْمُ اَلتَّجْوِيْدِ-এর সংজ্ঞা দাও। এর হুকুম কী? স্পষ্টভাবে বর্ণনা কর।]

উত্তর ।। **উপস্থাপনা :** তাজভীদ অর্থ– সুন্দর করা। কুরআন মাজীদ বিশুদ্ধরূপে পাঠ করার জন্য নিয়মকানুন সংবলিত শাস্ত্রকে ইলমে তাজভীদ বলে। আল কুরআন তাজভীদসহ মহানবী (স)-এর ওপর নাযিল হয়েছে। এজন্য ইলমে তাজভীদ অনুযায়ী কুরআন মাজীদ তেলাওয়াত করা ফরয। আর ইলমে তাজভীদ শিক্ষাগ্রহণ করা ফরযে কেফায়া। আল্লাহ তায়ালা বলেন– وَرَتِّلِ الْقُرْاٰنَ تَرْتِيْلًا অর্থাৎ, আপনি সুস্পষ্ট ও সুন্দরভাবে আল কুরআন তেলাওয়াত করুন। রাসূল (স) বলেন– رُبَّ قَارٍ يَقْرَأُ الْقُرْاٰنَ وَالْقُرْاٰنُ يَلْعَنُهٗ; সুতরাং عِلْمُ التَّجْوِيْدِ-এর প্রয়োজনীয়তা এবং বিশুদ্ধরূপে তা জানার গুরুত্ব অপরিসীম। নিচে প্রশ্নালোকে এ সম্পর্কে আলোচনা করা হলো।

➲ تَعْرِيْفُ عِلْمِ التَّجْوِيْدِ :

ইলমুত তাজভীদের পরিচয় : عِلْمُ اَلتَّجْوِيْدِ শব্দটি مُرَكَّب اِضَافِىّ তথা সম্বন্ধপদীয় যৌগিক শব্দ, যা عِلْم মুযাফ ও اَلتَّجْوِيْدُ মুযাফ ইলাইহ-এর সমন্বয়ে গঠিত। এ হিসেবে عِلْمُ اَلتَّجْوِيْدِ-এর দু'ধরনের পরিচয় দেওয়া যায়। যথা–

১. اَلْحَدُّ الْاِضَافِىُّ তথা সম্বন্ধপদীয় সংজ্ঞা।

২. اَلْحَدُّ اللَّقَبِىُّ তথা উপাধিগত সংজ্ঞা। নিচে উভয় প্রকার সংজ্ঞা প্রদান করা হলো–

এক. اَلْحَدُّ الْاِضَافِىُّ তথা সম্বন্ধপদীয় সংজ্ঞা : مُضَافْ ও مُضَافْ اِلَيْهِ-এর পৃথক পৃথক সংজ্ঞা প্রদান করাকে اَلْحَدُّ الْاِضَافِىُّ বলে। সুতরাং এখানে عِلْمُ ও اَلتَّجْوِيْدِ-এর পৃথক সংজ্ঞা প্রদত্ত হলো–

عِلْمُ-এর পরিচয় : عِلْمُ শব্দটি ইসমে মাসদার। এটি একবচন, বহুবচনে عُلُوْمٌ; শব্দটি বাবে سَمِعَ থেকে ব্যবহার হয়। এর অর্থ– বিদ্যা, শাস্ত্র, জ্ঞান ইত্যাদি। এর আভিধানিক অর্থ নিম্নরূপ–

১. اَلْاِدْرَاكُ وَالْفَهْمُ তথা অনুধাবন করা ও বোঝা।

২. اِدْرَاكُ الشَّىْءِ بِحَقِيْقَتِهٖ তথা বস্তুর প্রকৃত অবস্থা সম্পর্কে উপলব্ধি করা।

৩. اَلْمَعْرِفَةُ তথা পরিচয় লাভ করা।

৪. اَلنُّوْرُ তথা আলো।

৫. اَلْاِدْرَاكُ وَالْمَعْرِفَةُ তথা অনুধাবন করা ও জানা।

৬. اَلْفَهْمُ তথা বোঝা।

৭. اَلتَّعَقُّلُ তথা হৃদয়ঙ্গম করা।

পারিভাষিক সংজ্ঞা : عِلْم-এর পারিভাষিক সংজ্ঞা প্রদানে মনীষীগণের পক্ষ থেকে একাধিক অভিমত পাওয়া যায়। যেমন–

১. আল্লামা আবদুল আযীম যারকানী (র) বলেন, আল্লাহ তায়ালা, তাঁর আয়াত তথা নিদর্শনাবলি এবং মানুষ ও অন্যান্য সৃষ্টির প্রতি তাঁর কার্যাবলি অনুধাবন করার নাম عِلْم;

২. সাইয়েদ শরীফ জুরজানী (র) বলেন– اَلْعِلْمُ هُوَ الْاِعْتِقَادُ الْجَازِمُ الْمُطَابِقُ لِلْوَاقِعِ অর্থাৎ, عِلْم হলো বাস্তবতার অনুকূলে সুদৃঢ় বিশ্বাস।

৩. ইমাম গাযালী (র) বলেন– قَدْ كَانَ الْعِلْمُ يُطْلَقُ عَلَى الْعِلْمِ بِاللّٰهِ تَعَالٰى وَاٰيَاتِهٖ بِاَفْعَالِهٖ فِىْ عِبَادِهٖ وَخَلْقِهٖ অর্থাৎ, আল্লাহ তায়ালা ও তাঁর নিদর্শনাবলি এবং বান্দা ও সৃষ্টির প্রতি তাঁর কার্যাবলি সম্পর্কে জ্ঞানলাভকে عِلْم বলে।

৪. দার্শনিকদের মতে– اَلْعِلْمُ هُوَ حُصُوْلُ صُوْرَةِ الشَّىْءِ فِىْ الْعَقْلِ অর্থাৎ, স্মৃতিপটে কোনো বস্তুর আকৃতি অর্জিত হওয়াকে عِلْمُ বলে।

৫. আল্লামা ফখরুদ্দীন রাযী (র) বলেন– اَلْعِلْمُ هُوَ اَجْلَى الْبَدِيْهَاتِ অর্থাৎ, ইলম হলো তাৎক্ষণিক অর্জিত স্পষ্ট জ্ঞান।

৬. تَيْسِيْرُ الْوُصُوْلِ شَرْحُ ثَلَاثَةِ الْاُصُوْلِ গ্রন্থপ্রণেতা ড. আবদুল মুহসিন (র) বলেন–

اَلْعِلْمُ هُوَ مَعْرِفَةُ اللّٰهِ وَمَعْرِفَةُ نَبِيِّهٖ وَمَعْرِفَةُ الدِّيْنِ الْاِسْلَامِ بِالْاَدِلَّةِ۔

অর্থাৎ, ইলম হলো, দলীলসহ আল্লাহ তায়ালার পরিচয়, তাঁর নবী এবং দ্বীন ইসলামের পরিচয় জানা।

৭. আল্লামা বদরুদ্দীন আইনী (র) বলেন– اِنَّهٗ صِفَةٌ مِنْ صِفَاتِ النَّفْسِ تُوْجِبُ تَمْيِيْزًا لَا يَحْتَمِلُ النَّقِيْضَ فِىْ الْاُمُوْرِ الْمَعْنَوِيَّةِ

اَلتَّجْوِيْدُ-এর পরিচয় : اَلتَّجْوِيْدُ শব্দটি বাবে تَفْعِيْل-এর মাসদার। এটি جَوْدٌ মাদ্দাহ থেকে গঠিত। এর আভিধানিক অর্থ সম্পর্কে মনীষীগণের অভিমত নিম্নরূপ–

১. هِدَايَةُ الْقَارِئْ اِلَى تَجْوِيْدِ كَلَامِ الْبَارِئْ গ্রন্থপ্রণেতা আল্লামা আবদুল ফাত্তাহ সাইয়েদ আজমী আল মারসাফী (র) বলেন–

اَلتَّجْوِيْدُ هُوَ ضِدُّ الرَّدَاءَةِ وَهُوَ فِىْ اللُّغَةِ اَلتَّحْسِيْنُ ـ وَيُقَالُ لِقَارِئِ الْقُرْاٰنِ الْكَرِيْمِ اَلْمُحْسِنُ لِتِلَاوَتِهٖ مُجَوِّدٌ ـ

অর্থাৎ, তাজভীদ হলো, মন্দ ও অসুন্দরের বিপরীত। এর আভিধানিক অর্থ– সুন্দর করা, সজ্জিত করা। যেমন সুন্দরভাবে কুরআন মাজীদ তেলাওয়াতকারীকে আরবিতে বলা হয় مُجَوِّدٌ;

২. اَلْبُرْهَانُ فِىْ تَجْوِيْدِ الْقُرْاٰنِ গ্রন্থপ্রণেতা আল্লামা সাদেক কামহাভী (র) বলেন– اَلتَّجْوِيْدُ لُغَةً التَّحْسِيْنُ كَمَا يُقَالَ هٰذَا شَىْءٌ جَيِّدٌ اَىْ حَسَنٌ অর্থাৎ, আভিধানিক দিক থেকে তাজভীদ শব্দের অর্থ– সুন্দর করা। যেমন কোনো সুন্দর বস্তুকে বলা হয়– هٰذَا شَىْءٌ جَيِّدٌ

৩. اَلتَّمْهِيْدُ فِىْ عِلْمِ التَّجْوِيْدِ গ্রন্থপ্রণেতা আল্লামা শামসুদ্দীন আবুল খায়ের মুহাম্মাদ ইবনে জাযারী (র) বলেন–

مَعْنَاهُ اِنْتِهَاءُ الْغَايَةِ فِىْ اِتْقَانِهٖ وَبُلُوْغُ النِّهَايَةِ فِىْ تَحْسِيْنِهٖ ـ

অর্থাৎ, এর অর্থ হলো, সৌন্দর্য ও পূর্ণতার চূড়ান্ত সীমায় পৌঁছা।

৪. اَلْقَوْلُ السَّدِيْدُ فِىْ اَحْكَامِ اَلتَّجْوِيْدِ গ্রন্থপ্রণেতা আল্লামা আহমাদ হেজাযী (র) বলেন–

اَلتَّجْوِيْدُ فِىْ اللُّغَةِ هُوَ التَّحْسِيْنُ مُطْلَقًا وَالْمُرَادُ بِهٖ اِعْطَاءُ الْحُرُوْفِ حَقَّهَا ـ

অর্থাৎ, আভিধানিকভাবে তাজভীদ অর্থ হলো– সুন্দরকরণ। আর তা দ্বারা উদ্দেশ্য হলো– আরবি বর্ণসমূহ উচ্চারণে যথাযথ হক আদায় করা। এছাড়াও اَلتَّجْوِيْدُ শব্দটি নিম্নোক্ত অর্থেও ব্যবহার হয়ে থাকে–

৫. اَلتَّزْيِيْنُ তথা সজ্জিত করা।

৬. اَلْغَايَةُ فِىْ الْحَسَنِ তথা পরিপূর্ণ সুন্দরকরণ।

৭. اَلتَّرْتِيْلُ তথা স্পষ্ট ও সুন্দর তেলাওয়াত।

৮. اَلتَّجْمِيْلُ তথা সুন্দর করা।

৯. اَلتَّغَنِّىْ بِالْقُرْاٰنِ তথা সুর করে কুরআন মাজীদ তেলাওয়াত করা।

১০. ইংরেজিতে এর প্রতিশব্দ হলো– To beautify, To prettify ইত্যাদি।

পারিভাষিক সংজ্ঞা : তাজভীদের পারিভাষিক সংজ্ঞা নিম্নরূপ–

১. আল্লামা আবদুল ফাত্তাহ সাইয়েদ আজমী আল মারসাফী (র) বলেন–

هُوَ فِىْ الْاِصْطِلَاحِ اِخْرَاجُ كُلِّ حَرْفٍ مِنَ مَخْرَجِهٖ وَاِعْطَائُهٗ حَقَّهٗ وَمُسْتَحِقَّهٗ مِنَ الصِّفَاتِ ـ

অর্থাৎ, পরিভাষায় তাজভীদ হলো, প্রতিটি বর্ণকে স্বীয় উচ্চারণস্থল হতে উচ্চারণ করা এবং সিফাতের ক্ষেত্রে তার যথাযথ হক আদায় করা।

২. اَلْبُرْهَانُ فِىْ تَجْوِيْدِ الْقُرْاٰنِ গ্রন্থপ্রণেতা বলেন– اَلتَّجْوِيْدُ اِصْطِلَاحًا اِخْرَاجُ كُلِّ حَرْفٍ مِنْ مَخْرَجِهٖ مَعَ اِعْطَائِهٖ حَقَّهُ وَمُسْتَحِقَّهٗ অর্থাৎ, পরিভাষায় তাজভীদ হলো, প্রতিটি বর্ণকে স্বীয় উচ্চারণস্থল হতে তার যথাযথ হক আদায়সহ উচ্চারণ করা।

৩. আল্লামা শামসুদ্দীন আবুল খায়ের মুহাম্মাদ ইবনে জাযারী (র) বলেন–

اَلتَّجْوِيْدُ هُوَ حُلْيَةُ التِّلَاوَةِ وَزِيْنَةُ الْقِرَائَةِ وَهُوَ اِعْطَاءُ الْحُرُوْفِ حُقُوْقَهَا وَتَرْتِيْبُهَا مَرَاتِبَهَا وَرَدُّ الْحَرْفِ اِلٰى مَخْرَجِهٖ وَاَصْلِهٖ وَاِلْحَاقُهٗ بِنَظِيْرِهٖ وَشِكْلِهٖ وَاَشْبَاعِ لَفْظِهٖ وَتَلْطِيْفُ النُّطْقِ بِهٖ عَلٰى حَالِ صِيْغَتِهٖ وَهَيْئَتِهٖ مِنْ غَيْرِ اِسْرَافٍ وَلَا تَعَسُّفٍ وَلَا اِفْرَاطٍ وَلَا تَكَلُّفٍ ـ

৪. ড. আবু আসেম আবদুল আযীয (র) বলেন– هُوَ تَحْسِيْنُ الْقِرَاءَةِ بِالْقُرْاٰنِ الْكَرِيْمِ مُرَتِّلاً وَمُفَسِّرَةً حُرُوْفَهٗ

দুই. اَلْحَدُّ اللَّقَبِىُّ তথা পদবিগত সংজ্ঞা : مُضَافْ ও مُضَافْ اِلَيْهِ-এর একত্রে সংজ্ঞা প্রদান করাকে اَلْحَدُّ اللَّقَبِىُّ বলে। এটাকে পারিভাষিক সংজ্ঞাও বলা হয়। عِلْمُ التَّجْوِيْدِ-এর اَلْحَدُّ اللَّقَبِىُّ নিম্নরূপ–

১. শায়খ আহমাদ হেজাযী আল ফকীহ (র) বলেন– هُوَ عِلْمٌ يُبْحَثُ فِيْهِ عَنْ مَخَارِجِ الْحُرُوْفِ وَصِفَاتِهَا وَغَيْرِ ذٰلِكَ অর্থাৎ, এটি এমন এক শাস্ত্র, যার মধ্যে আরবি বর্ণসমূহের মাখরাজ, সিফাত ইত্যাদি সম্পর্কে আলোচনা করা হয়।

২. ড. এবিএম হিযবুল্লাহ (দা. বা.) বলেন–

هُوَ عِلْمٌ يُعْرَفُ بِهٖ كَيْفِيَّةُ قِرَاءَةِ الْقُرْاٰنِ الْكَرِيْمِ مُجَوَّدًا وَمُرَتَّلاً بِحَيْثُ يَصُوْنُ اللِّسَانُ عَنِ الْوُقُوْعِ فِىْ الْخَطَاءِ وَاللَّحْنِ عِنْدَ قِرَاءَةِ كِتَابِ اللّٰهِ تَعَالٰى ـ

৩. ইলমে কেরাতের পরিভাষায়, যে শাস্ত্র পাঠ করলে কুরআন মাজীদ শুদ্ধরূপে তেলাওয়াত করা যায় এবং এর প্রতিটি হরফ সঠিকভাবে সিফাতসহ যথাযথভাবে উচ্চারণের পদ্ধতি জানা যায় তাকে তাজভীদ বলা হয়।

৪. ড. মান্না আল কাত্তান (র) বলেন– عِلْمُ التَّجْوِيْدِ عِلْمٌ يُعْرَفُ بِهٖ كَيْفِيَّاتُ النُّطْقِ بِالْكَلِمَاتِ الْقُرْاٰنِيَّةِ অর্থাৎ, ইলমুত তাজভীদ এমন শাস্ত্র, যার মাধ্যমে আল কুরআনের শব্দাবলির উচ্চারণ পদ্ধতি জানা যায়।

➲ حُكْمُ مَعْرِفَةِ عِلْمِ التَّجْوِيْدِ :

ইলমে তাজভীদ জানার হুকুম : আল কুরআনুল কারীম তাজভীদসহ নাযিল হয়েছে। এজন্য তাজভীদসহ তা তেলাওয়াত করা ফরয। এটি সর্বসম্মত বিধান। তবে ওলামায়ে কেরাম তাজভীদের বিধানকে দুটি স্তরে বর্ণনা করেছেন। এ প্রসঙ্গে ড. এবিএম হিযবুল্লাহ (দা. বা.) বলেন– اَلتَّجْوِيْدُ لَهُ جِهَتَانِ اَلْجِهَةُ الْعِلْمِيَّةُ وَالْجِهَةُ الْعَمَلِيَّةُ অর্থাৎ, তাজভীদের দুটি দিক রয়েছে– একটি হলো ইলমী দিক আর অপরটি হলো আমলী তথা প্রয়োগগত দিক। এতদুভয়ের হুকুম নিম্নরূপ–

১. اَلْجِهَةُ الْعِلْمِيَّةُ দ্বারা উদ্দেশ্য হলো– তাজভীদের নিয়মকানুন ও নীতিমালাসমূহ সম্পর্কে জ্ঞানার্জন করা। এর বিধান হলো, সর্বসাধারণের জন্য তা শিক্ষা করা নফল। আর বিশেষ ব্যক্তিবর্গের জন্য তা শিক্ষা করা ফরযে কেফায়া। এ সম্পর্কে دُرُوْسٌ فِىْ عِلْمُ التَّجْوِيْدِ প্রণেতা বলেন– حُكْمُهَا اَلْمَنْدُوْبُ لِلْعَامَّةِ وَالْفَرْضُ الْكِفَائِىُّ لِلْخَاصَّةِ

২. اَلْجِهَةُ الْعَمَلِيَّةُ দ্বারা উদ্দেশ্য হলো– আল কুরআনুল কারীম তেলাওয়াতের সময় তাজভীদের নিয়মকানুনসমূহ অনুসরণ করা, তা তেলাওয়াতে প্রয়োগ করা। এর বিধান হলো, প্রত্যেক মুসলমানের জন্য তা ফরয। অর্থাৎ তাজভীদ অনুসারে কুরআন মাজীদ তেলাওয়াত করা ফরয। এ সম্পর্কে دُرُوْسٌ فِىْ عِلْمِ التَّجْوِيْدِ প্রণেতা বলেন– حُكْمُهَا فَرْضٌ عَيْنٌ عَلٰى كُلِّ مُكَلَّفٍ مَنْ يُرِيْدُ قِرَاءَةَ الْقُرْاٰنِ الْكَرِيْمِ

আল্লামা আবদুল ফাত্তাহ সাইয়েদ আজমী আল মারসাফী (র) বলেন–

حُكْمُ الشَّارِعِ فِيْهِ هُوَ الْوُجُوْبُ الْعَيْنِىُّ عَلٰى كُلِّ مُكَلَّفٍ مِنْ مُسْلِمٍ وَمُسْلِمَةٍ يَحْفَظَانِ الْقُرْاٰنَ كُلَّهُ اَوْ بَعْضَهُ وَلَوْ سُوْرَةً وَاحِدَةً لِثُبُوْتِ ذٰلِكَ بِالْكِتَابِ وَالسُّنَّةِ وَاِجْمَاعِ الْاُمَّةِ۔

অর্থাৎ, তাজভীদ অনুযায়ী কুরআন মাজীদ তেলাওয়াতের ক্ষেত্রে شارع-এর নির্দেশ হলো, প্রত্যেক প্রাপ্তবয়স্ক মুসলিম নর নারীর ওপর ফরযে আইন। চাই তারা সম্পূর্ণ কুরআন মাজীদ মুখস্থ করুক অথবা তার অংশবিশেষ মুখস্থ করুক, যদিও তা মাত্র একটি সূরাও হয়। কারণ কিতাবুল্লাহ, সুন্নাহ ও ইজমায়ে উম্মতের ভিত্তিতে এটা প্রমাণিত যে, তাজভীদসহ কুরআন মাজীদ তেলাওয়াত করা ফরযে আইন। এ সম্পর্কিত বিভিন্ন দলীল নিম্নরূপ–

ক. আল কুরআনুল কারীম থেকে দলীল : তাজভীদসহ কুরআন মাজীদ তেলাওয়াত করা ফরয হওয়ার দলীল আল কুরআনের বিভিন্ন আয়াতে পাওয়া যায়। যেমন–

১. وَرَتِّلِ الْقُرْاٰنَ تَرْتِيْلاً۔ (اَلْمُزَّمِّلُ : ٤)

অত্র আয়াতের ব্যাখ্যায় হজরত আলী ইবনে আবি তালেব (রা) বলেন– اَلتَّرْتِيْلُ هُوَ تَجْوِيْدُ الْحُرُوْفِ وَمَعْرِفَةُ الْوُقُوْفِ অর্থাৎ, তারতীল হলো, আরবি বর্ণসমূহ সুন্দর করে পড়া এবং এর বিরামস্থল সম্পর্কে অবগত হওয়া।

২. وَرَتَّلْنٰهُ تَرْتِيْلاً۔ (اَلْفُرْقَانُ : ٣٢)

৩. اَلَّذِيْنَ اٰتَيْنٰهُمُ الْكِتٰبَ يَتْلُوْنَهُ حَقَّ تِلَاوَتِهٖ۔ (اَلْبَقَرَةُ : ١٢١)

উপরিউক্ত আয়াতে কারীমাসমূহে আল্লাহ তায়ালা কুরআন মাজীদ তাজভীদসহ তেলাওয়াতের প্রতি ইঙ্গিত করেছেন।

খ. সুন্নাহ থেকে দলীল : তাজভীদসহ কুরআন মাজীদ তেলাওয়াত করা ফরয হওয়ার বিষয়ে সুন্নাহর দলীল হলো, হজরত মুসা ইবনে ইয়াযিদ আল কিন্দী (রা)-এর বর্ণিত হাদীসটি, যা আল্লামা হাফেয জালালুদ্দীন সুয়ুতী (র) তাঁর اَلدُّرُّ الْمَنْثُوْرُ فِىْ التَّفْسِيْرِ بِالْمَأْثُوْرِ গ্রন্থে উল্লেখ করেছেন। আর আল্লামা তাবারানী (র) তাঁর اَلْاَوْسَطُ নামক গ্রন্থে তা সুদৃঢ়ভাবে বর্ণনা করেছেন। হজরত মুসা ইবনে ইয়াযিদ আল কিন্দী (রা) বলেন–

كَانَ ابْنُ مَسْعُوْدٍ (رضـ) يُقْرِأُ رَجُلاً فَقَرَأَ الرَّجُلُ (اِنَّمَا الصَّدَقَاتُ لِلْفُقَرَاءِ وَالْمَسَاكِيْنَ) مُرْسَلَةً فَقَالَ ابْنُ مَسْعُوْدٍ (رضـ) مَا هٰكَذَا اَقْرَأَنِيْهَا النَّبِىُّ (صـ) فَقَالَ وَكَيْفَ اَقْرَأَكَ؟ قَالَ اَقْرَأَنِيْهَا (اِنَّمَا الصَّدَقَاتُ لِلْفُقَرَاءِ وَالْمَسَاكِيْنَ) فَمَدَّهَا۔ فَابْنُ مَسْعُوْدٍ (رضـ) اَلَّذِىْ هُوَ اَشْبَهُ النَّاسِ سَمْتًا وَدَلًّا بِرَسُوْلِ اللّٰهِ (صـ) اَنْكَرَ عَلٰى الرَّجُلِ اَنْ يَقْرَأَ كَلِمَةَ الْفُقَرَاءِ مِنْ غَيْرِ مَدٍّ وَلَمْ يُرَخِّصْ لَهُ فِىْ تَرْكِهٖ۔

উপরিউক্ত হাদীস দ্বারা তাজভীদসহ কুরআন মাজীদ তেলাওয়াতের আবশ্যকতা সুস্পষ্টভাবে প্রমাণ হয়েছে।

গ. ইজমা থেকে দলীল : আল্লামা শায়খ মুহাম্মাদ মাক্কী (র) বলেন–

فَقَدْ اِجْتَمَعَتِ الْاُمَّةُ الْمَعْصُوْمَةُ مِنَ الْخَطَاءِ عَلٰى وُجُوْبِ التَّجْوِيْدِ مِنْ زَمَنِ النَّبِىِّ صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ اِلٰى زَمَانِنَا وَلَمْ يَخْتَلِفْ فِيْهِ اَحَدٌ مِنْهُمْ۔

অর্থাৎ, নিষ্পাপ উম্মতে মুহাম্মাদী নবী কারীম (স)-এর যুগ থেকে আমাদের বর্তমান যুগ পর্যন্ত তাজভীদের আবশ্যকতার ওপর ঐকমত্য পোষণ করেছেন। তাঁদের একজনও এ বিষয়ে মতবিরোধ করেননি। সুতরাং কুরআন, সুন্নাহ ও ইজমার আলোকে এটা প্রমাণ হলো যে, عملى তথা প্রয়োগগত দৃষ্টিকোণ থেকে ইলমে তাজভীদ অনুযায়ী কুরআন মাজীদ তেলাওয়াত করা প্রত্যেকের ওপর ফরযে আইন।

সমাপনী : আরবি বর্ণসমূহ সুন্দরস্বরে উচ্চরণ ও তার সিফাতসমূহ জানার নাম হলো তাজভীদ। তা শিক্ষাগ্রহণ করা ফরযে কেফায়া। আর সে অনুযায়ী কুরআন মাজীদ তেলাওয়াত করা ফরযে আইন। তাজভীদসহ সুললিত কণ্ঠে কুরআন মাজীদ তেলাওয়াত করলে প্রতিটি হরফের বিনিময়ে কমপক্ষে দশটি নেকি অর্জন করা যায়। এজন্য মুমিনজীবনে তাজভীদের গুরুত্ব অপরিসীম।

(ب) ما معنى التلاوة؟ وما اهمية تلاوة القران؟ اكتب فى ضوء القران والسنة۔

[التلاوة-এর অর্থ কী? আল কুরআন তেলাওয়াতের গুরুত্ব কী? কুরআন ও সুন্নাহর আলোকে লিপিবদ্ধ কর।]

উত্তর ।। **উপস্থাপনা :** আসমানি কিতাবসমূহের মধ্যে আল কুরআন সর্বশ্রেষ্ঠ। এটি সর্বকালের সকল মানুষের হেদায়াতের পথপ্রদর্শক এবং আধ্যাত্মিক ও নৈতিক প্রশিক্ষণের একমাত্র উৎস। মানবজাতির ইহকালীন শান্তি ও পরকালীন মুক্তির গ্যারান্টি এতে নিহিত। আল কুরআন একটি পরশপাথর। এর সংস্পর্শে আসলে মানুষ সোনার মানুষে পরিণত হয়। এজন্য কুরআন ও সুন্নাহতে তা তেলাওয়াতের প্রতি বিশেষ গুরুত্বারোপ করা হয়েছে। রাসূল (স) বলেন– اَلْمَاهِرُ بِالْقُرْاٰنِ مَعَ السَّفَرَةِ الْكِرَامِ الْبَرَرَةِ অর্থাৎ, আল কুরআনে দক্ষ ব্যক্তি সম্মানিত ও পুণ্যবান ফেরেশতাগণের সাথে থাকবে। কুরআন মাজীদ বিশুদ্ধরূপে তেলাওয়াতে অগণিত সাওয়াব রয়েছে। নিচে প্রশ্নালোকে তাজভীদসহ আল কুরআন তেলাওয়াতের গুরুত্ব সম্পর্কে আলোচনা করা হলো।

➲ مَعْنَى التِّلَاوَةِ :

تِلَاوَة-এর অর্থ : আল কুরআনুল কারীম পাঠ করাকে تِلَاوَة (তেলাওয়াত) বলা হয়। اَلتِّلَاوَةُ শব্দের সাধারণ অর্থ হলো– اَلْقِرَاءَةُ তথা পাঠ করা। আর اَلتِّلَاوَةُ-এর পারিভাষিক সংজ্ঞা হলো– هِيَ قِرَاءَةُ الْقُرْاٰنِ الْكَرِيْمِ بِلَفْظِهٖ وَمَعَانِيْهِ مَعَ مُرَاعَاةِ اَحْكَامِ التَّجْوِيْدِ অর্থাৎ, ইলমুত তাজভীদের নিয়মনীতির আলোকে আল কুরআনুল কারীমের শব্দ ও অর্থ পাঠ করা।

মোটকথা, ইলমুত তাজভীদের কায়দা অনুসারে বিশুদ্ধভাবে আল কুরআনুল কারীম পাঠ করাকে তেলাওয়াত বলা হয়।

➲ اَهَمِّيَّةُ تِلَاوَةِ الْقُرْاٰنِ الْكَرِيْمِ بِالتَّجْوِيْدِ :

তাজভীদসহ আল কুরআনুল কারীম তেলাওয়াতের গুরুত্ব : আল কুরআন মহান আল্লাহর অমীয় বাণী, যা তিনি হজরত জিবরাঈল (আ)-এর মাধ্যমে নাযিল করেছেন। এটি মানবজাতির সংবিধান। এটা বিশুদ্ধরূপে তাজভীদ অনুযায়ী তেলাওয়াত করা ফরয। ইসলামের অন্যতম রোকন নামাজে তাজভীদসহ বিশুদ্ধরূপে কুরআন মাজীদ তেলাওয়াত করা ফরয। অন্যথা নামাজ শুদ্ধ হয় না। এজন্য মুমিনজীবনে তাজভীদসহ আল কুরআনুল কারীম তেলাওয়াতের গুরুত্ব অপরিসীম। আরবি প্রবাদে রয়েছে– كَلَامُ الْمُلُوْكِ مُلُوْكُ الْكَلَامِ; সুতরাং আল্লাহ তায়ালা যেমন রাজাধিরাজ ও মহামর্যাদাবান, তাঁর বাণীও তদ্রূপ মর্যাদাপূর্ণ। তাজভীদসহ এটি তেলাওয়াতের গুরুত্ব ও ফযিলত আল কুরআন ও হাদীস দ্বারা প্রমাণিত। আল্লাহ তায়ালা বলেন–

اِنَّ الَّذِيْنَ يَتْلُوْنَ كِتَابَ اللّٰهِ وَاَقَامُوا الصَّلٰوةَ وَاَنْفَقُوْا مِمَّا رَزَقْنَاهُمْ سِرًّا وَّعَلَانِيَةً يَّرْجُوْنَ تِجَارَةً لَّنْ تَبُوْرَ لِيُوَفِّيَهُمْ اُجُوْرَهُمْ وَيَزِيْدَهُمْ مِّنْ فَضْلِهٖ اِنَّهٗ غَفُوْرٌ شَكُوْرٌ۔ (فَاطِر : ٢٩ - ٣٠)

অর্থাৎ, নিশ্চয় যারা আল্লাহর কিতাব তেলাওয়াত করে, নামাজ আদায় করে এবং আমি যে রিজিক দিয়েছি তা হতে প্রকাশ্য ও গোপনে ব্যয় করে, তারা এমন ব্যবসায়ের আশা করে যাতে কখনো লোকসান হবে না। কারণ তিনি তাদেরকে তাদের প্রতিফল পূর্ণমাত্রায় প্রদান করবেন এবং নিজ অনুগ্রহে আরও বেশি দেবেন। তিনি অতি ক্ষমাশীল ও গুণগ্রাহী।

রাসূল (স) ইরশাদ করেন–

مَنْ قَرَأَ حَرْفًا مِنْ كِتَابِ اللّٰهِ فَلَهٗ بِهٖ حَسَنَةٌ وَالْحَسَنَةُ بِعَشْرِ اَمْثَالِهَا۔ لَا اَقُوْلُ الم حَرْفٌ وَلٰكِنْ اَلِفٌ حَرْفٌ وَلَامٌ حَرْفٌ وَمِيْمٌ حَرْفٌ۔ (تِرْمِذِى)

অর্থাৎ, যে ব্যক্তি কিতাবুল্লাহ থেকে একটি হরফ পাঠ করলে তার জন্য এর বিনিময়ে একটি সাওয়াব রয়েছে। আর এ সাওয়াব তার দশগুণ সাওয়াবের সমান। আমি বলছি না যে, الم একটি হরফ; বরং اَلِف একটি হরফ, لَام একটি হরফ এবং مِيْم একটি হরফ।

এছাড়া তাজভীদসহ আল কুরআনুল কারীম তেলাওয়াতের গুরুত্বের আরও কতিপয় দিক নিচে আলোচনা করা হলো–

১. **আল্লাহ তায়ালার নির্দেশ :** তাজভীদসহ কুরআন মাজীদ তেলাওয়াত করতে আল্লাহ তায়ালা নির্দেশ দিয়েছেন। আল্লাহ তায়ালা বলেন–

وَرَتِّلِ الْقُرْاٰنَ تَرْتِيْلًا۔ (اَلْمُزَّمِّلُ : ٤)

অর্থাৎ, আপনি সুন্দর ও ধীরে ধীরে কুরআন তেলাওয়াত করুন। এখানে تَرْتِيْل শব্দের ব্যাখ্যায় হজরত আলী (রা) বলেন–

اَلتَّرْتِيْلُ هُوَ تَجْوِيْدُ الْحُرُوْفِ وَمَعْرِفَةُ الْوُقُوْفِ۔

২. **অশুদ্ধ তেলাওয়াত করা গুনাহ :** তাজভীদের নিয়মকানুন অনুসরণ না করে কুরআন তেলাওয়াত করলে গুনাহ হয়। রাসূল (স) বলেন–

رُبَّ تَالٍ لِلْقُرْاٰنِ وَالْقُرْاٰنُ يَلْعَنُهٗ۔

অর্থাৎ, আল কুরআনের এমন পাঠক আছে, কুরআন তাকে অভিশাপ দেয়।

আল্লামা শামসুদ্দীন আবুল খায়ের মুহাম্মাদ ইবনে জাযারী (র) বলেন– اَلْاَخْذُ بِالتَّجْوِيْدِ حَتْمٌ لَازِمٌ * مَنْ لَمْ يُجَوِّدِ الْقُرْاٰنَ اٰثِمٌ

৩. **সুন্দর ও সুললিত তেলাওয়াতের মাধ্যম :** তাজভীদ হলো এমন কতিপয় নিয়মকানুন জানার নাম, যা অনুসরণ করলে কুরআন মাজীদ শুদ্ধরূপে, সুন্দর উচ্চারণে, সুললিত কণ্ঠে তেলাওয়াত করা যায়। কুরআন মাজীদ সুন্দরভাবে তেলাওয়াতের প্রতি উদ্বুদ্ধ করে নবী কারীম (স) বলেন– مَنْ لَمْ يَتَغَنَّ بِالْقُرْاٰنِ فَلَيْسَ مِنَّا অর্থাৎ, যে সুন্দর স্বরে আল কুরআন তেলাওয়াত করে না, সে আমার দলভুক্ত নয়।

৪. **তাজভীদ শিক্ষা করা ফরয :** তাজভীদের গুরুত্বের অন্যতম দিক হলো, তা শিক্ষাগ্রহণ করা প্রতিটি মুসলমানের ওপর ফরযে কেফায়া। আর তাজভীদসহ কুরআন মাজীদ তেলাওয়াত করা প্রত্যেক মুসলিম নরনারীর ওপর ফরযে আইন। এজন্য সকল যুগের ইসলামী স্কলারগণ তাজভীদশাস্ত্রের প্রতি বিশেষ গুরুত্বারোপ করেছেন। সাধারণ মানুষকে তাঁরা তাজভীদসহ কুরআন মাজীদ শিক্ষা দিয়েছেন। অনেকে এ বিষয়ে গুরুত্বপূর্ণ গ্রন্থ রচনা করেছেন।

৫. **পুণ্য অর্জন হয় :** তাজভীদ অনুযায়ী কুরআন মাজীদ তেলাওয়াত করলে অনেক সাওয়াব অর্জন করা যায়। প্রতিটি হরফের বিনিময়ে আল্লাহ তায়ালা কমপক্ষে দশটি নেকি দান করেন। রাসূল (স) বলেন–

مَنْ قَرَأَ حَرْفًا مِنْ كِتَابِ اللّٰهِ فَلَهٗ بِهٖ حَسَنَةٌ وَالْحَسَنَةُ بِعَشْرِ اَمْثَالِهَا۔ لَا اَقُوْلُ الم حَرْفٌ وَلٰكِنْ اَلِفٌ حَرْفٌ وَلَامٌ حَرْفٌ وَمِيْمٌ حَرْفٌ۔

অর্থাৎ, যে ব্যক্তি কিতাবুল্লাহ থেকে একটি হরফ পাঠ করল তার জন্য এর বিনিময়ে একটি সাওয়াব রয়েছে। আর এ সাওয়াব তার দশগুণ সাওয়াবের সমান। আমি বলছি না যে, الم একটি হরফ; বরং اَلِف একটি হরফ, لَام একটি হরফ এবং مِيْم একটি হরফ।

সমাপনী : আরবি বর্ণসমূহ সুন্দরস্বরে উচ্চরণ ও তার সিফাতসমূহ জানার নাম হলো তাজভীদ। তা শিক্ষাগ্রহণ করা ফরযে কেফায়া। আর সে অনুযায়ী কুরআন মাজীদ তেলাওয়াত করা ফরযে আইন। তাজভীদসহ সুললিত কণ্ঠে কুরআন মাজীদ তেলাওয়াত করলে প্রতিটি হরফের বিনিময়ে কমপক্ষে দশটি নেকি অর্জন করা যায়। এজন্য মুমিনজীবনে তাজভীদের গুরুত্ব অপরিসীম।

(ج) عرف المد۔ وكم نوعا له؟ اكتب كل قسم بالامثلة۔

[اَلْمَدُّ-এর পরিচয় দাও। তা কত প্রকার? প্রত্যেক প্রকার উদাহরণসহ লেখ।]

উপস্থাপনা : আল কুরআন সর্বশ্রেষ্ঠ আসমানি কিতাব। এটি বিশ্বমানবতার হেদায়াতের দিশারি। তাজভীদসহ বিশুদ্ধরূপে কুরআন মাজীদ তেলাওয়াত করা ফরয। আল্লাহ তায়ালা বলেন– وَرَتِّلِ الْقُرْاٰنَ تَرْتِيْلًا; বিশুদ্ধরূপে কুরআন মাজীদ তেলাওয়াত করলে তা তার পাঠকের জন্য পরকালে সুপারিশ করবে। আর অশুদ্ধ তেলাওয়াত করলে স্বয়ং কুরআন মাজীদ তেলাওয়াতকারীকে অভিশাপ দেয়। এজন্য ইলমুল কেরাতের ইমামগণ বিশুদ্ধরূপে কুরআন মাজীদ তেলাওয়াতের নিমিত্ত তাজভীদশাস্ত্র প্রণয়ন করেছেন। এতে গুরুত্বপূর্ণ কিছু নিয়মকানুন উদ্ভাবন করা হয়। তন্মধ্যে মাদ্দের বিধান অন্যতম। মাদ্দের হরফ ও চিহ্নের আলোকে আরবি হরফকে উচ্চারণকালে শ্বাস এবং আওয়াজ দীর্ঘ করে পাঠ করাকে মাদ বলে। এ দীর্ঘকরণ এক আলিফ, তিন আলিফ ও চার আলিফ হিসেবে বিভিন্ন প্রকারে বিভক্ত। নিচে প্রশ্নালোকে মাদ্দের পরিচয় ও প্রকারভেদ বর্ণনা করা হলো।

➲ تَعْرِيْفُ الْمَدِّ (مَدّ-এর পরিচয়) :

আভিধানিক অর্থ : مَدَّ শব্দটি বাবে نَصَرَ-এর মাসদার, যা م۔ د۔ د মাদ্দাহ থেকে গঠিত। এর আভিধানিক অর্থ নিম্নরূপ–

১. اَلْمَطُّ তথা টেনে লম্বা করা।
২. اَلزِّيَادَةُ তথা বৃদ্ধি করা। যেমন আল্লাহ তায়ালার বাণী– اَمَدَّكُمْ بِاَنْعَامٍ وَّبَنِيْنَ۔ (اَلشُّعَرَاءُ : ١٣٣)
৩. اِطَالَةُ الصَّوْتِ তথা আওয়াজ দীর্ঘ করা।
৪. اَلْبَسْطُ তথা প্রসারিত করা।
৫. اَلتَّطْوِيْلُ তথা দীর্ঘ করা, বড় করা।
৬. اَلْمُعْجَمُ الْوَسِيْطُ অভিধানে এসেছে– مَدَّ الْحَرْفَ اَىْ طَوَّلَهٗ فِىْ النُّطْقِ অর্থাৎ, হরফ উচ্চারণে টেনে লম্বা করে পড়া।
৭. اَلتَّوْسِيْعُ তথা প্রশস্ত করা।
৮. اَلْجَرُّ তথা টানা।
৯. اَلْكَثْرَةُ তথা অধিক।
১০. ইংরেজিতে এর প্রতিশব্দ হলো– To lengthen, To extend ইত্যাদি।

পারিভাষিক সংজ্ঞা : مَدّ-এর পারিভাষিক সংজ্ঞা সম্পর্কে মনীষীগণের অভিমত নিম্নরূপ–

১. اَلْمَدُّ فِىْ اصْطِلَاحِ الْقُرَّاءِ اِطَالَةُ الصَّوْتِ بِحَرْفٍ مِنْ حُرُوْفِ الْمَدِّ الثَّلَاثَةِ –اَلْقَوْلُ السَّدِيْدُ فِىْ اَحْكَامِ التَّجْوِيْدِ গ্রন্থপ্রণেতা বলেন অর্থাৎ, কারীগণের পরিভাষায় মাদ হলো, মাদ্দের তিনটি হরফের কোনো একটি হরফের কারণে আওয়াজ দীর্ঘ করা।
২. اِطَالَةُ الصَّوْتِ بِحَرْفٍ مِنْ حُرُوْفِ اَلْمَدِّ الثَّلَاثَةِ عِنْدَ مُلَاقَاةِ هَمْزٍ اَوْ سُكُوْنٍ –اَلْبُرْهَانُ فِىْ تَجْوِيْدُ الْقُرْاٰنِ গ্রন্থপ্রণেতা বলেন–
৩. اِطَالَةُ اَلصَّوْتِ بِحَرْفٍ مِنْ حُرُوْفِ الْمَدِّ وَاللِّيْنِ –هِدَايَةُ الْقَارِىْ اِلٰى تَجْوِيْدِ كَلَامِ الْبَارِىْ গ্রন্থপ্রণেতা বলেন অর্থাৎ, মাদ ও লীনের হরফ থেকে কোনো একটি হরফের কারণে আওয়াজ দীর্ঘ করাকে মাদ বলে।
৪. قَامُوْسُ الْاِمْلَاءِ গ্রন্থপ্রণেতা বলেন–
اِطَالَةُ الصَّوْتِ بِحَرْفٍ مِنْ حُرُوْفِ الْمَدِّ وَهِىَ الْاَلِفُ السَّاكِنَةُ اَلْمَفْتُوْحُ مَا قَبْلَهَا وَالْوَاوُ السَّاكِنَةُ اَلْمَضْمُوْمُ مَا قَبْلَهَا وَالْيَاءُ السَّاكِنَةُ الْمَكْسُوْرُ مَا قَبْلَهَا۔
অর্থাৎ, মাদ্দের হরফসমূহ থেকে কোনো একটি হরফের উপস্থিতির কারণে আওয়াজ দীর্ঘ করা। মাদ্দের হরফসমূহ হলো– আলিফ সাকিন তার পূর্বে যবর, ওয়াও সাকিন তার পূর্বে পেশ এবং ইয়া সাকিন তার পূর্বে যের হওয়া।
৫. اَلْمَدُّ فِىْ الْاِصْطِلَاحِ اِطَالَةُ الصَّوْتِ بِحَرْفِ الْمَدِّ اَوْ بِحَرْفِ اللِّيْنِ –دُرُوْسٌ فِىْ عِلْمِ التَّجْوِيْدِ গ্রন্থপ্রণেতা বলেন অর্থাৎ, পরিভাষায় মাদ হলো, মাদ্দের হরফ অথবা লীনের হরফের কারণে আওয়াজ দীর্ঘ করা।

মোটকথা, কোনো শব্দের সাথে মাদ্দের হরফ আসলে মাদবিশিষ্ট ঐ হরফটি উচ্চারণকালে শ্বাস ও আওয়াজকে দীর্ঘ করে পাঠ করাকে মাদ বলে।

➲ اَقْسَامُ الْمَدِّ :

মাদ্দের প্রকারভেদ : মাদ প্রথমত দু'প্রকার। যথা– ক. اَلْمَدُّ الْاَصْلِىُّ তথা মূল মাদ এবং খ. اَلْمَدُّ الْفَرْعِىُّ তথা শাখা মাদ বা উপ-মাদ।
এ দু'প্রকার মাদ্দের বিবরণ নিম্নরূপ–

ক. اَلْمَدُّ الْاَصْلِىُّ-এর পরিচয় :

আভিধানিক অর্থ : اَلْمَدُّ الْاَصْلِىُّ শব্দটি مُرَكَّب تَوْصِيْفِى; যা اَلْمَدُّ মাওসুফ ও اَلْاَصْلِىُّ সিফাতের সমন্বয়ে গঠিত। এর শাব্দিক অর্থ হলো– মূল মাদ বা ভিত মাদ। এর অপর নাম মাদ্দে তবায়ী। এটাকে مَدّ ذَاتِىّ-ও বলা হয়।

পারিভাষিক সংজ্ঞা : مَدّ اَصْلِىّ-এর পারিভাষিক সংজ্ঞা সম্পর্কে মনীষীগণের অভিমত নিম্নরূপ–

১. اَلْاَصْلِىُّ هُوَ الَّذِىْ لَا يَتَوَقَّفُ عَلٰى سَبَبٍ وَلَيْسَ بَعْدَهٗ هَمْزَةٌ وَلَا سُكُوْنٌ –اَلْقَوْلُ السَّدِيْدُ فِىْ اَحْكَامِ التَّجْوِيْدِ গ্রন্থপ্রণেতা বলেন অর্থাৎ, মাদ্দে আসলী হলো, যা কোনো কারণের ওপর প্রতিষ্ঠিত নয় এবং এরপর কোনো হামযা কিংবা সুকুন থাকে না।
২. هِدَايَةُ الْقَارِىْ اِلٰى تَجْوِيْدِ كَلَامِ الْبَارِىْ গ্রন্থপ্রণেতা বলেন–
هُوَ الَّذِىْ لَا تَقُوْمُ ذَاتُ حَرْفِ الْمَدِّ اِلَّا بِهٖ وَلَا يَتَوَقَّفُ عَلٰى سَبَبٍ مِنْ اَسْبَابِ الْمَدِّ الْفَرْعِىِّ۔
অর্থাৎ, মাদ্দে আসলী হলো, যার মাধ্যমেই মাদ্দের হরফের অস্তিত্ব পাওয়া যায় এবং যা مَدّ فَرْعِىّ-এর কোনো কারণের ওপর প্রতিষ্ঠিত নয়।

৩. ড. এবিএম হিযবুল্লাহ (দা. বা.) বলেন– اَلْمَدُّ الْاَصْلِيُّ مَا لَا يَقَعُ بَعْدَ حَرْفِ الْمَدِّ هَمْزَةٍ اَوْ سُكُوْنٍ অর্থাৎ, যে মাদ্দের হরফের পর হামযা কিংবা সুকুন হয় না, তাকে মাদ্দে আসলী বলে।

اَلْمَدُّ الْاَصْلِيُّ-এর উদাহরণ : আল্লাহ তায়ালার বাণী– ١- فِىْ قُلُوْبِهِمْ مَّرَضٌ - ٢- يُخَادِعُوْنَ اللّٰهَ - ٣- نُوْحِيْهَا

اَلْمَدُّ الْاَصْلِيُّ-এর বিধান ও তার পরিমাণ : مَدُّ الْاَصْلِيِّ-এর বিধান হলো– এ মাদ এক আলিফ পরিমাণ দীর্ঘ করে পড়া ওয়াজিব। অন্যথা শব্দের অর্থ পরিবর্তন হওয়ার সম্ভাবনা থাকে। এক আলিফের পরিমাণ দুই হরকতের সমান। যেমন– بَ + بَ বলতে যে সময় প্রয়োজন হয় তাই এক আলিফের পরিমাণ। অথবা, হাতের একটি আঙুল সোজা অবস্থা থেকে মধ্যম গতিতে বন্ধ করতে যে সময়ের প্রয়োজন হয় তাকে এক আলিফের পরিমাণ ধরা যায়।

اَلْمَدُّ الْاَصْلِيُّ পড়ার পদ্ধতি : মাদ্দের হরফ তিনটি। যথা– ا - و - ى; একে একত্রে বলা হয়– وَاْىٌ; وَاو সাকিন তার পূর্বে পেশ, اَلِفْ সাকিন তার পূর্বে যবর এবং يَاء সাকিন তার পূর্বে যের হলে তাকে এক আলিফ পরিমাণ দীর্ঘ করে পড়তে হয়। এটাই মাদ্দে আসলী পড়ার নিয়ম।

মাদ্দে আসলী পড়ার আরেকটি নিয়ম হলো– যখন কোনো হরফে খাড়া যবর, খাড়া যের, কিংবা উলটা পেশ থাকে তখন তাকে এক আলিফ পরিমাণ দীর্ঘ করে পড়তে হয়।

اَلْمَدُّ الْاَصْلِيُّ-এর প্রকারভেদ : মাদ্দে আসলী-এর অপর নাম মাদ্দে তবায়ী। এর প্রকারভেদ সম্পর্কে ওলামায়ে কেরামের দুটি অভিমত রয়েছে। যথা–

ক. শায়খ আবদুল ফাত্তাহ (র)-এর অভিমত : বিখ্যাত তাজভীদগ্রন্থ هِدَايَةُ الْقَارِىْ اِلٰى تَجْوِيْدِ كَلَامِ الْبَارِىْ-এর গ্রন্থকার শায়খ আবদুল ফাত্তাহ আল মারসাফী (র) বলেন–

يَنْقَسِمُ الْمَدُّ الطَّبِيْعِىُّ اِلٰى قِسْمَيْنِ - اَلْاَوَّلُ : اَلْمَدُّ الطَّبِيْعِىُّ الْكَلْمِىُّ وَالثَّانِىْ : اَلْمَدُّ الطَّبِيْعِىُّ الْحَرْفِىُّ -

অর্থাৎ, মাদ্দে আসলী বা তবায়ী দু'প্রকারে বিভক্ত। যথা– ১. اَلْمَدُّ الطَّبِيْعِىُّ الْكَلْمِىُّ এবং ২. اَلْمَدُّ الطَّبِيْعِىُّ الْحَرْفِىُّ

নিচে উভয় প্রকারের পরিচয় ও সংশ্লিষ্ট বিষয়াদি আলোচনা করা হলো–

১. **اَلْمَدُّ الطَّبِيْعِىُّ الْكَلْمِىُّ-এর পরিচয় :** مَدّ طَبِيْعِى كَلْمِى-এর পরিচয় সম্পর্কে শায়খ আবদুল ফাত্তাহ আল মারসাফী (র) বলেন– هُوَ مَا كَانَ مَوْجُوْدًا فِىْ كَلِمَةٍ অর্থাৎ, যে মাদ একটি শব্দের মধ্যে পাওয়া যায় তাকে مَدّ طَبِيْعِى كَلْمِى বলে। যেমন আল্লাহ তায়ালার বাণী– يُنَادُوْنَكَ - فَسَيَكْفِيْكَهُمُ اللّٰهُ

اَلْمَدُّ الطَّبِيْعِىُّ الْكَلْمِىُّ-এর প্রকারভেদ : আল্লামা শায়খ আবদুল ফাত্তাহ আল মারসাফী (র) বলেন– يَنْقَسِمُ هٰذَا الْمَدُّ اِلٰى ثَلَاثَةِ اَقْسَامٍ অর্থাৎ, এ মাদটি তথা মাদ্দে তবায়ী কালমী তিন প্রকারে বিভক্ত। যেমন–

ক. اَنْ يَكُوْنَ هٰذَا الْمَدُّ ثَابِتًا فِىْ الْوَصْلِ وَالْوَقْفِ অর্থাৎ, এ মাদটি وَصْل তথা মিলিয়ে পড়া ও وَقْف তথা বিরতি দেওয়া উভয় অবস্থায় বিদ্যমান থাকা। যেমন আল্লাহ তায়ালার বাণী– يَا قَوْمِ اسْتَغْفِرُوْا رَبَّكُمْ

খ. اَنْ يَكُوْنَ ثَابِتًا فِىْ الْوَقْفِ دُوْنَ الْوَصْلِ অর্থাৎ, তা ওয়াকফের অবস্থায় ঠিক থাকা, وَصْل অবস্থায় ঠিক না থাকা। যেমন কুরআন মাজীদে এসেছে– مُصَلًّى - هُدًى ইত্যাদি।

গ. اَنْ يَكُوْنَ ثَابِتًا فِىْ الْوَصْلِ دُوْنَ الْوَقْفِ অর্থাৎ, তা وَصْل-এর সময় ঠিক থাকা এবং وَقْف-এর সময় ঠিক না থাকা। যেমন কুরআন মাজীদে এসেছে– اِنَّ رَبَّهٗ كَانَ بِهٖ بَصِيْرًا

২. **اَلْمَدُّ الطَّبِيْعِىُّ الْحَرْفِىُّ-এর পরিচয় :** مَدّ طَبِيْعِىّ حَرْفِىّ-এর পরিচয় সম্পর্কে শায়খ আবদুল ফাত্তাহ আল মারসাফী (র) বলেন– هُوَ مَا كَانَ مَوْجُوْدًا فِىْ حَرْفٍ مِنَ الْحُرُوْفِ الْهِجَائِيَّةِ -

অর্থাৎ, যে মাদ আরবি বর্ণমালার কোনো এক বর্ণে পাওয়া যায় তাকে মাদ্দে তবায়ী হারফী বলে। আর আরবি বর্ণমালা দ্বারা উদ্দেশ্য হলো, আল কুরআনের সেসব বিশেষ হরফ যেগুলো দ্বারা আল কুরআনের ২৯টি সূরার সূচনা করা হয়েছে। যেমন– طٰهٰ - يٰسٓ - الٓمّٓ

খ. ড. হিযবুল্লাহর অভিমত : ড. এবিএম হিযবুল্লাহ (দা. বা.) বলেন– وَلَهٗ خَمْسَةُ اَنْوَاعٍ অর্থাৎ, মাদ্দে আসলী পাঁচ প্রকার। যথা–

১. مَدُّ الْبَدْلِ
২. مَدُّ الصِّلَةِ الْقَصِيْرَةِ
৩. مَدُّ الْعِوَضِ
৪. مَدُّ التَّمْكِيْنِ
৫. اَلْمَدُّ الطَّبِيْعِىُّ الْحَرْفِىُّ

এ পাঁচ প্রকার মাদ্দের পরিচয় নিম্নরূপ–

১. اَلْمَدُّ الْبَدْلُ : বদল অর্থ– পরিবর্তন করা। হামযা সাকিনকে পূর্বের হরফের হরকত অনুযায়ী মাদ্দের হরফ (و - ا - ى) দ্বারা বদল তথা পরিবর্তন করে পড়াকে مَدْ بَدْل বলে। যেমন– اٰمَنَ মূলে أَأْمَنَ ছিল। اُوْمِنَ মূলে أُؤْمِنَ ছিল। إِيْمَانًا মূলে إِإْمَانًا ছিল।

কেননা, হামযাতে হরফে শিদ্দাত-এর সিফাত আছে বিধায় একত্রে দু'হামযা উচ্চারণ করা কঠিন। সুতরাং, নিয়ম অনুযায়ী সহজ করণার্থে পূর্ববর্তী হরফের হরকত মোতাবেক হরফ দ্বারা হামযাকে পরিবর্তন করা হয়েছে। এই মাদ এক আলিফ পরিমাণ দীর্ঘ করে পড়তে হয়।

২. مَدُّ الصِّلَةِ الْقَصِيْرَةِ : হা (ه) যমীরের পূর্বে এবং পরে হরকত থাকলে এবং পরের হরফটি হামযা না হলে তখন তার পেশের সাথে ওয়াও (و) এবং যেরের সাথে ইয়া (ى) বৃদ্ধি করে মাদ্দে আসলীর ন্যায় এক আলিফ পরিমাণ দীর্ঘ করে পড়াকে مَدُّ الصِّلَةِ الْقَصِيْرَةِ বলে। যেমন– يُضِلُّ بِهٖ كَثِيْرًا এবং اِنَّهٗ هُوَ ইত্যাদি।

৩. اَلْمَدُّ الْعِرَضُ : এ মাদটি وَقْف তথা বিরতি অবস্থায় হয়। وَصْل তথা মিলিয়ে পাঠ করলে মাদ হয় না। ওয়াকফ বা বিরতির কারণে শব্দের শেষে হরফটিতে অস্থায়ী সাকিন করতে হয়। অস্থায়ী সাকিনের পূর্বে মাদ্দে আসলী থাকলে তাকে মাদ্দে আরিয বলে। এটা তিন আলিফ থেকে চার আলিফ পরিমাণ দীর্ঘ করে পড়া হয়। তবে চার আলিফ পরিমাণ দীর্ঘ করা উত্তম। যেমন– حِسَابٌ - تَعْلَمُوْنَ - رَبُّ الْعٰلَمِيْنَ ইত্যাদি।

৪. مَدُّ التَّمْكِيْنِ : পাশাপাশি এমন দুটি يَاء যাদের একটি সুকুনযুক্ত এবং তার পূর্বেরটি তাশদীদযুক্ত ও যেরবিশিষ্ট। যথা– حُيِّيْتُمْ অথবা, তাশদীদযুক্ত يَاء-এরপর মাদ্দের يَاء হওয়া। যথা– اَلنَّبِيِّيْنَ

৫. اَلْمَدُّ الطَّبِيْعَىُّ الْحُرْفِىُّ : مَدُّ طَبِيْعَىّ حُرْفِىَّ-এর পরিচয় সম্পর্কে শায়খ আবদুল ফাত্তাহ আল মারসাফী (র) বলেন–

هُوَ مَا كَانَ مَوْجُوْدًا فِىْ حَرْفٍ مِنَ الْحُرُوْفِ الْهِجَائِيَّةِ -

অর্থাৎ, যে মাদ আরবি বর্ণমালার কোনো এক বর্ণে পাওয়া যায় তাকে মাদ্দে তবায়ী হরফী বলে। আর আরবি বর্ণমালা দ্বারা উদ্দেশ্য হলো, আল কুরআনের সেসব বিশেষ হরফ যেগুলো দ্বারা আল কুরআনের ২৯টি সূরার সূচনা করা হয়েছে।

উদাহরণ : طٰهٰ - يٰسٓ - الٓمٓ

খ. اَلْمَدُّ الْفَرْعِىُّ-এর পরিচয় :

আভিধানিক অর্থ : اَلْمَدُّ الْفَرْعِىُّ শব্দটি مُرَكَّب تَوْصِيْفِى তথা গুণবাচক যৌগিক শব্দ, যা اَلْمَدُّ মাওসুফ ও اَلْفَرْعِىُّ সিফাত দ্বারা গঠিত। এর শাব্দিক অর্থ হলো– শাখাগত মাদ বা উপ-মাদ।

পারিভাষিক সংজ্ঞা : مَدّ فَرْعِىّ-এর পারিভাষিক সংজ্ঞা সম্পর্কে মনীষীগণের অভিমত নিম্নরূপ–

১. اَلْقَوْلُ السَّدِيْدُ فِىْ اَحْكَامِ التَّجْوِيْدِ গ্রন্থপ্রণেতা বলেন– اَلْمَدُّ الْفَرْعِىُّ هُوَ الَّذِىْ يَتَوَقَّفُ عَلٰى سَبَبِ هَمْزَةٍ اَوْ سُكُوْنٍ অর্থাৎ, মাদ্দে ফারয়ী হলো, যা হামযা অথবা সুকুন থেকে যে-কোনো একটির কারণে সংঘটিত হয়।

২. هِدَايَةُ الْقَارِىْ اِلٰى تَجْوِيْدِ كَلَامِ الْبَارِىْ গ্রন্থপ্রণেতা বলেন– فَهُوَ اَلْمَدُّ الزَّائِدُ عَلٰى مِقْدَارِ اَلْمَدِّ الطَّبِيْعِىِّ لِسَبَبٍ مِنَ الْاَسْبَابِ الْاٰتِيَةِ بَعْدُ অর্থাৎ, মাদ্দে ফারয়ী হলো, মাদ্দের হরফের পরে আসা কোনো কারণে মাদ্দে তবায়ীর পরিমাণ থেকে অতিরিক্ত মাদ।

৩. اَلْبُرْهَانُ فِىْ تَجْوِيْدِ الْقُرْاٰنِ গ্রন্থপ্রণেতা বলেন– هُوَ الْمَدُّ الزَّائِدُ عَلَى الْمَدِّ الطَّبِيْعِىِّ لِسَبَبٍ مِنَ الْاَسْبَابِ অর্থাৎ, কোনো কারণে মাদ্দে তবায়ী থেকে অতিরিক্ত পরিমাণ মাদকে মাদ্দে ফারয়ী বলে।

مَدّ فَرْعِىّ-এর উদাহরণ : আল্লাহ তায়ালার বাণী–

১- وَمَآ اُنْزِلَ مِنْ قَبْلِكَ -
২- رَبُّ الْعٰلَمِيْنَ -
৩- وَاٰمَنَهُمْ مِنْ خَوْفٍ -
৪- زَادَتْهُمْ اِيْمَانًا -
৫- مِنْ عِلْمِهٖ اِلَّا بِاِذْنِهٖ -
৬- اُولٰٓئِكَ هُمُ الْمُفْلِحُوْنَ -
৭- وَلَا الضَّآلِّيْنَ -
৮- اٰلْاٰنَ -
৯- الٓمٓ - طٰسٓمٓ -
১০- يٰسٓ - الٓرٰ - حٰمٓ -

مَدّ فَرْعِىّ-এর হুকুম ও তার পরিমাণ : মাদ্দে ফারয়ীর হুকুম তিন প্রকার। যথা– جَوَاز তথা বৈধ, وُجُوْب তথা ওয়াজিব ও لُزُوْم তথা আবশ্যক।

مَدّ فَرْعِىّ جَائِز-কে তিন আলিফ পরিমাণ দীর্ঘ করে পড়তে হয়। তবে দু'আলিফ পরিমাণও পড়া জায়েয। আবার চাইলে বা প্রয়োজন হলে চার আলিফ পরিমাণও পড়া জায়েয।

مَدّ فَرْعِىّ وُجُوْب-কে চার আলিফ পরিমাণ দীর্ঘ করে পড়া ওয়াজিব।

مَدّ فَرْعِىّ لُزُوْم-কে চার আলিফ পরিমাণ দীর্ঘ করে পড়া আবশ্যক। তবে এর মান ওয়াজিবের চেয়ে একটু কম।

مَدّ فَرْعِىّ-এর প্রকারভেদ : মাদ্দে ফারয়ীর প্রকারভেদ সম্পর্কে একাধিক অভিমত পরিলক্ষিত হয়। যেমন–

ক. শায়খ আবদুল ফাত্তাহ (র)-এর অভিমত : هِدَايَةُ الْقَارِىْ اِلٰى تَجْوِيْدِ كَلَامِ الْبَارِىْ গ্রন্থপ্রণেতা শায়খ আবদুল ফাত্তাহ আল মারসাফী (র) বলেন, মাদ্দে ফারয়ী পাঁচ প্রকার। যথা–

১. اَلْمَدُّ الْمُتَّصِلُ
২. اَلْمَدُّ الْمُنْفَصِلُ
৩. اَلْمَدُّ الْبَدْلُ
৪. اَلْمَدُّ الْعَارِضُ لِلسُّكُوْنِ
৫. اَلْمَدُّ اللَّازِمُ

খ. ড. হিযবুল্লাহর অভিমত : دُرُوْسٌ فِىْ عِلْمِ التَّجْوِيْدِ গ্রন্থপ্রণেতা ড. এবিএম হিযবুল্লাহ (দা. বা.)-এর মতে, মাদ্দে ফারয়ী আট প্রকার, যা দু'ভাগে বিভক্ত। যথা–

১. اَلْمَدُّ الْفَرْعِىُّ لِلْهَمْزَةِ-এর সাথে দুটি মাদ। যথা– ক. اَلْمَدُّ الْمُتَّصِلُ ও খ. اَلْمَدُّ الْمُنْفَصِلُ

২. اَلْمَدُّ الْفَرْعِىُّ لِلسُّكُوْنِ-এর সাথে ৬টি মাদ। যথা–

ক. اَلْمَدُّ الْعَارِضُ لِلسُّكُوْنِ
খ. مَدُّ اللِّيْنِ
গ. اَلْمَدُّ اللَّازِمُ الْكَلْمِىُّ الْمُثَقَّلُ
ঘ. اَلْمَدُّ اللَّازِمُ الْكَلْمِىُّ الْمُخَفَّفُ
ঙ. اَلْمَدُّ اللَّازِمُ الْحَرْفِىُّ الْمُثَقَّلُ
চ. اَلْمَدُّ اللَّازِمُ الْحَرْفِىُّ الْمُخَفَّفُ

গ. কারী বেলায়েত (র)-এর অভিমত : নূরানী পদ্ধতিতে বিশুদ্ধভাবে কুরআন মাজীদ শিক্ষা পদ্ধতির উদ্ভাবক মাওলানা কারী বেলায়েত হোসাইন (র)-এর মতে, মাদ্দে ফারয়ী সাত প্রকার। যথা–

১. اَلْمَدُّ الْعَارِضِىُّ
২. اَلْمَدُّ الْمُنْفَصِلُ
৩. اَلْمَدُّ الْمُتَّصِلُ
৪. اَلْمَدُّ اللَّازِمُ الْكَلْمِىُّ الْمُثَقَّلُ

৫. اَلْمَدُّ اللَّازِمُ الْكَلْمِيُّ الْمُخَفَّفُ
৬. اَلْمَدُّ اللَّازِمُ الْحَرْفِيُّ الْمُثَقَّلُ
৭. اَلْمَدُّ اللَّازِمُ الْحَرْفِيُّ الْمُخَفَّفُ

ঘ. জমহুরের অভিমত : জমহুর কারী ও আলেমের মতে, মাদ্দে ফারয়ী দশ প্রকার। যথা–

১. اَلْمَدُّ الْمُتَّصِلُ
২. اَلْمَدُّ الْمُنْفَصِلُ
৩. اَلْمَدُّ الْعَارِضُ
৪. مَدُّ اللِّيْنِ
৫. اَلْمَدُّ الْبَدْلُ
৬. مَدُّ الصِّلَةِ
৭. اَلْمَدُّ اللَّازِمُ الْكَلْمِيُّ الْمُثَقَّلُ
৮. اَلْمَدُّ اللَّازِمُ الْكَلْمِيُّ الْمُخَفَّفُ
৯. اَلْمَدُّ اللَّازِمُ الْحَرْفِيُّ الْمُثَقَّلُ
১০. اَلْمَدُّ اللَّازِمُ الْحَرْفِيُّ الْمُخَفَّفُ

এ দশ প্রকার মাদ্দের বিবরণ নিম্নরূপ–

১. اَلْمَدُّ الْمُتَّصِلُ : একই শব্দের মধ্যে মাদ্দে আসলীর পরে হামযা থাকলে তাকে মাদ্দে মুত্তাসিল বা ওয়াজিব মাদ বলে। এটা চার আলিফ পরিমাণ দীর্ঘ করে পড়তে হয়। যেমন– جَاءَ - سُوْءٌ - جِيْئَ ইত্যাদি।

২. اَلْمَدُّ الْمُنْفَصِلُ : পাশাপাশি দুটি শব্দের প্রথম শব্দের শেষে মাদ্দে আসলী এবং দ্বিতীয় শব্দের প্রথমে হামযা থাকলে তাকে মাদ্দে মুনফাসিল বা জায়েয মাদ বলে। যথা– وَمَا أُنْزِلَ - اَلَّذِىْ اَطْعَمَهُمْ - قُوْا اَنْفُسَكُمْ ইত্যাদি।

৩. اَلْمَدُّ الْعَارِضُ : এ মাদটি وَقْف তথা বিরতি অবস্থায় হয়। وَصْل তথা মিলিয়ে পাঠ করলে মাদ হয় না। ওয়াকফ বা বিরতির কারণে শব্দের শেষে হরফটিতে অস্থায়ী সাকিন করতে হয়। অস্থায়ী সাকিনের পূর্বে মাদ্দে আসলী থাকলে তাকে মাদ্দে আরিয বলে। এটা তিন আলিফ থেকে চার আলিফ পরিমাণ দীর্ঘ করে পড়া হয়। তবে চার আলিফ পরিমাণ দীর্ঘ করা উত্তম। যেমন– حِسَابٌ - تَعْلَمُوْنَ - رَبُّ الْعٰلَمِيْنَ ইত্যাদি।

৪. مَدُّ اللِّيْنِ : لِيْنٌ অর্থ– নরম করা বা সহজ করা। এটি وَقْف তথা বিরতি অবস্থায় মাদ হয়। وَصْل তথা মিলিয়ে পাঠ করলে মাদ হয় না। ওয়াও (و) সাকিন এবং ইয়া (ى) সাকিন-এর পূর্বের হরফে যবর থাকলে তাকে مَدّ لِيْن বলে। এটা এক আলিফ থেকে দু'আলিফ পরিমাণ দীর্ঘ করে পড়তে হয়। যেমন– خَوْفٌ - بَيْتٌ ইত্যাদি।

৫. اَلْمَدُّ الْبَدْلُ : بَدْلٌ অর্থ– পরিবর্তন করা। হামযা সাকিনকে পূর্বের হরফের হরকত অনুযায়ী মাদ্দের হরফ (و - ا - ى) দ্বারা বদল তথা পরিবর্তন করে পড়াকে مَدّ بَدْل বলে। যেমন– اٰمَنَ মূলে أَأْمَنَ ছিল। اُوْمِنَ মূলে أُأْمِنَ ছিল। إِيْمَانًا মূলে إِإْمَانًا ছিল।
কেননা, হামযাতে হরফে শিদ্দাত-এর সিফাত আছে বিধায় একত্রে দু'হামযা উচ্চারণ করা কঠিন। সুতরাং নিয়ম অনুযায়ী সহজ করণার্থে পূর্ববর্তী হরফের হরকত মোতাবেক হরফ দ্বারা হামযাকে পরিবর্তন করা হয়েছে। এ মাদ এক আলিফ পরিমাণ দীর্ঘ করে পড়তে হয়।

৬. مَدُّ الصِّلَةِ : সিলাহ অর্থ– হা (ه) যমীরে একটি মাদ বৃদ্ধি করা। অর্থাৎ হা (ه) যমীরে উলটা পেশ হলে তার সাথে ওয়াও সাকিন বৃদ্ধি করে পড়া এবং হা (ه) যমীরে খাড়া যের হলে তার সাথে ইয়া সাকিন বৃদ্ধি করে পড়া। একে মাদ্দে সিলাহ (مَدّ صِلَة) বলে। যেমন– لَهٗ-এর স্থলে لَهُوْ এবং بِهٖ-এর بِهِىْ ইত্যাদি।
মাদ্দে সিলাহ (مَدّ صِلَة) দু'প্রকার। যথা– ক. صِلَة طَوِيْلَة এবং খ. صِلَة قَصِيْرَة; এতদুভয়ের বর্ণনা নিম্নরূপ–

ক. صِلَة طَوِيْلَة : হা (ه) যমীরের পূর্বে এবং পরে হরকত থাকলে এবং পরের হরকতটি হামযাবিশিষ্ট হরফ হলে তার পেশের সাথে و (ওয়াও) বৃদ্ধি করে এবং যেরের সাথে ى (ইয়া) বৃদ্ধি করে মাদ্দে মুনফাসিলের ন্যায় তিন আলিফ পরিমাণ দীর্ঘ করে পড়াকে صِلَة طويلة বলে। যেমন– مِنْ عِلْمِهٖ اِلَّا بِاِذْنِهٖ - مَالَهٗ اَخْلَدَهٗ

খ. صِلَة قَصِيْرَة : হা (ه) যমীরের পূর্বে এবং পরে হরকত থাকলে এবং পরের হরফটি হামযা না হলে তখন তার পেশের সাথে ওয়াও (و) এবং যেরের সাথে ইয়া (ى) বৃদ্ধি করে মাদ্দে আসলীর ন্যায় এক আলিফ পরিমাণ দীর্ঘ করে পড়াকে صِلَة قَصِيْرَة বলে। যেমন– يُضِلُّ بِهٖ كَثِيْرًا এবং اِنَّهٗ هُوَ ইত্যাদি।

৭. اَلْمَدُّ اللَّازِمُ الْكَلْمِيُّ الْمُثَقَّلُ : একই শব্দের মধ্যে মাদ্দের হরফের পরে তাশদীদযুক্ত আসলী সাকিন হলে, তাকে মাদ্দে লাযেম কালমী মুসাককাল বলে। যথা– حَاجَّة - دَابَّة - ضَالِّيْن ইত্যাদি। এটা চার আলিফ পরিমাণ দীর্ঘ করে পড়তে হয়।

৮. اَلْمَدُّ اللَّازِمُ الْكَلْمِيُّ الْمُخَفَّفُ : একই শব্দের মধ্যে মাদ্দের হরফের পরে জযমযুক্ত আসলী সাকিন হলে তাকে মাদ্দে লাযেম কালমী মুখাফফাফ বলে। যথা– اٰلْاٰنَ; এটা তিন আলিফ পরিমাণ দীর্ঘ করে পড়তে হয়।

৯. اَلْمَدُّ اللَّازِمُ الْحَرْفِيُّ الْمُثَقَّلُ : حُرُوْف مُقَطَّعَات যা সূরার প্রারম্ভে থাকে, তার মধ্যে যে-সকল হরফের নাম তিন হরফবিশিষ্ট তাতে যদি মাদ্দের হরফের পরে তাশদীদযুক্ত আসলী সাকিন থাকে, তাহলে তাকে মাদ্দে লাযেম হারফী মুসাককাল বলে। যথা– الٓمّ - طسم ইত্যাদি। একে তিন আলিফ পরিমাণ দীর্ঘ করে পড়তে হয়।

১০. اَلْمَدُّ اللَّازِمُ الْحَرْفِيُّ الْمُخَفَّفُ : حُرُوْف مُقَطَّعَات যা সূরার প্রারম্ভে থাকে, তার মধ্যে যে-সকল হরফের নাম তিন হরফবিশিষ্ট তাতে মাদ্দের হরফের পরে জযমযুক্ত আসলী সাকিন হলে তাকে মাদ্দে লাযেম হারফী মুখাফফাফ বলে। যেমন– ص - ن - حم - الٓر - يٰس ইত্যাদি। একে তিন আলিফ পরিমাণ দীর্ঘ করে পড়তে হয়।

সমাপনী : ইলমুত তাজভীদের আলোচ্য বিষয়সমূহের মধ্যে মাদসংক্রান্ত আলোচনা খুবই গুরুত্বপূর্ণ। কুরআন মাজীদ তেলাওয়াতে ভুলত্রুটি থেকে মুক্ত থাকার জন্য মাদ্দের নিয়মকানুন সম্পর্কে জ্ঞানার্জন করা আবশ্যক। মাদ্দের তিনটি হরফ এবং হামযা ও সুকুনের কারণে অবস্থাভেদে কখনো এক আলিফ, কখনো তিন আলিফ আবার কখনো চার আলিফ পর্যন্ত টেনে পড়তে হয়। তাজভীদশাস্ত্রবিদগণ মাদ্দের বিধানকে جواز , وجوب ও لَازِم এ তিনস্তরে বিভাজন করেছেন।

(د) ما المراد بصفات الحروف؟ وكم نوعا لها؟ اكتب بالامثلة۔

[صفات الحروف দ্বারা উদ্দেশ্য কী? এটা কত প্রকার? উদাহরণসহ লেখ।]

উত্তর ।। **উপস্থাপনা :** আল কুরআন মানবজাতির হেদায়াতের পথনির্দেশক সর্বশেষ আসমানি কিতাব। এর প্রতিটি হরফ তেলাওয়াতে দশটি করে নেকি পাওয়া যায়। রাসূল (স) বলেন– اَفْضَلُ الْعِبَادَةِ تِلَاوَةُ الْقُرْاٰنِ; এজন্য বিশুদ্ধ ও সুন্দর স্বরে তা তেলাওয়াত করা ফরয। এদিকে লক্ষ করেই ইলমুত তাজভীদের উদ্ভব হয়েছে। এতে যেসব নীতিমালা ও নিয়মকানুন আলোচনা করা হয়েছে তন্মধ্যে সিফাতসংক্রান্ত আলোচনা উল্লেখযোগ্য। এর মাধ্যমে একই মাখরাজের একাধিক হরফের মধ্যে পার্থক্য করে আরবি হরফসমূহের উচ্চারণ সুন্দর করা যায়। এজন্য বিশুদ্ধ ও সুন্দর সুরে কুরআন মাজীদ তেলাওয়াত করার ক্ষেত্রে সিফাত সম্পর্কে জ্ঞানার্জন করা জরুরি। নিচে প্রশ্নালোকে সিফাতের পরিচয় ও প্রকারভেদ সম্পর্কে আলোচনা করা হলো।

➲ تَعْرِيْفُ صِفَاتِ الْحُرُوْفِ (صِفَاتُ الْحُرُوْفِ-এর পরিচয়) :

আভিধানিক অর্থ : صِفَات الْحُرُوْفِ শব্দটি مُرَكَّبِ اِضَافِىّ তথা সম্বন্ধসূচক যৌগিক শব্দ, যা صِفَات মুযাফ ও اَلْحُرُوْفُ মুযাফ ইলাইহ দ্বারা গঠিত। صِفَات শব্দটি বহুবচন, এর একবচন হলো صِفَة; এর আভিধানিক অর্থ নিম্নরূপ–

১. اَلنَّعْتُ তথা গুণ।

২. اَلْخَاصَّةُ তথা বৈশিষ্ট্য।

৩. اَلْوَصْفُ তথা গুণ।

৪. শায়খ আহমাদ হেজাযী আল ফকীহ (র) বলেন– اَلصِّفَاتُ لُغَةً مَا قَامَ بِالشَّيْءِ مِنَ الْاَعْرَاضِ كَالسَّوَادِ وَالْبَيَاضِ অর্থাৎ, সিফাতের আভিধানিক অর্থ হলো, কোনো বস্তুর সাথে প্রাসঙ্গিক যা কিছু যুক্ত হয়। যেমন– সাদা হওয়া, কালো হওয়া।

৫. শায়খ আবদুল ফাত্তাহ আল মারসাফী (র) বলেন–
اَلصِّفَاتُ لُغَةً مَا قَامَ بِالشَّيْءِ مِنَ الْمَعَانِىْ حِسِّيًّا كَالْبَيَاضِ وَالصُّفْرَةِ وَالْعُمْرَةِ وَاللَّمْسِ اَوْ مَعْنَوِيًّا كَالْعِلْمِ وَالْاَدَبِ۔

৬. শায়খ মুহাম্মাদ সাদেক কামহাভী (র) বলেন– اَلصِّفَاتُ لُغَةً مَا قَامَ بِالشَّيْءِ مِنَ الْمَعَانِىْ كَالْعِلْمِ اَوِ الْبَيَاضِ

৭. ড. এবিএম হিযবুল্লাহ (দা. বা.) বলেন–
وَفِى اللُّغَةِ الصِّفَةُ مَا قَامَ بِالشَّيْءِ مِنَ الْمَعَانِىِ الْحِسِّيَّةِ اَوِ الْمَعْنَوِيَّةِ كَالْبَيَاضِ وَالْحُمْرَةِ وَالْعِلْمِ وَالْاَدَبِ۔

৮. ইংরেজিতে এর প্রতিশব্দ হলো– Quality, Virtue ইত্যাদি।

আর حُرُوْف শব্দটি বহুবচন, একবচনে حَرْف; এর শাব্দিক অর্থ– اَلطَّرْفُ তথা পার্শ্ব, اَلْجَانِبُ তথা দিক, প্রান্ত ইত্যাদি। তবে এখানে حَرْف দ্বারা উদ্দেশ্য হলো বর্ণ। সুতরাং উভয়ের সম্মিলিত অর্থ হবে– বর্ণসমূহের সিফাত তথা বৈশিষ্ট্যাবলি।

পারিভাষিক সংজ্ঞা : সিফাত-এর পারিভাষিক সংজ্ঞা সম্পর্কে মনীষীগণের অভিমত নিম্নরূপ–

১. اَلْقَوْلُ السَّدِيْدُ فِىْ اَحْكَامِ التَّجْوِيْدِ গ্রন্থপ্রণেতা বলেন–
هِىَ كَيْفِيَّةٌ عَارِضَةٌ لِلْحَرْفِ عِنْدَ حُصُوْلِهٖ فِى الْمَخْرَجِ مِنَ الْجَهْرِ وَالْهَمْسِ وَالشِّدَّةِ وَالرَّخَاوَةِ وَنَحْوِ ذٰلِكَ۔
অর্থাৎ, মাখরাজ থেকে উচ্চারণের সময় হরফের বাহ্যিক অবস্থাকে সিফাত বলে। যেমন– জাহর, হামস, শিদ্দাত, রাখওয়াত ইত্যাদি।

২. هِدَايَةُ الْقَارِىْ اِلٰى تَجْوِيْدِ كَلَامِ الْبَارِىْ গ্রন্থপ্রণেতা বলেন–
هِىَ كَيْفِيَّةٌ تُعْرَضُ لِلْحَرْفِ عِنْدَ النُّطْقِ بِهٖ كَجِرْيَانِ النَّفْسِ فِى الْحُرُوْفِ الْمَهْمُوْسَةِ وَعَدْمُ جِرْيَانِهٖ فِى الْحُرُوْفِ الْمَجْهُوْرَةِ۔
অর্থাৎ, সিফাত হলো, হরফের এমন অবস্থা যা উচ্চারণের সময় প্রকাশ পায়। যেমন হামস হরফের ক্ষেত্রে নিঃশ্বাস চালু রাখা এবং জাহর হরফের ক্ষেত্রে নিঃশ্বাস চালু না রাখা।

৩. اَلْبُرْهَانُ فِىْ تَجْوِيْدِ الْقُرْاٰنِ গ্রন্থপ্রণেতা বলেন– هِىَ كَيْفِيَّةٌ عَارِضَةٌ لِلْحَرْفِ عِنْدَ حُصُوْلِهٖ فِى الْمَخْرَجِ مِنْ جَهْرٍ وَرَخَاوَةٍ وَاَشْبَهُ ذٰلِكَ

৪. اَلْفَيْضُ الْمَجِيْدُ গ্রন্থপ্রণেতা বলেন–
هِىَ كَيْفِيَّةٌ عَارِضَةٌ لِلْحَرْفِ عِنْدَ حُصُوْلِهٖ فِى الْمَخَارِجِ مِنَ الْجَهْرِ وَالرَّخْوَةِ وَالْهَمْسِ وَالشِّدَّةِ وَمَا اَشْبَهُ ذٰلِكَ۔

➲ اَقْسَامُ صِفَاتِ الْحُرُوْفِ :

صِفَاتُ الْحُرُوْفِ-এর প্রকারভেদ : আরবি হরফসমূহের সিফাত প্রধানত দু'প্রকার। যথা– ১. اَلصِّفَاتُ الْاَصْلِيَّةُ তথা মৌলিক সিফাত এবং ২. اَلصِّفَاتُ الْعَرْضِيَّةُ তথা প্রাসঙ্গিক বা অমৌলিক সিফাত।

এ দু'প্রকার সিফাতের বিবরণ নিম্নরূপ–

১. اَلصِّفَاتُ الْاَصْلِيَّةُ-এর পরিচয় : اَلصِّفَاتُ الْاَصْلِيَّةُ শব্দটি مُرَكَّب تَوْصِيْفِىّ তথা গুণবাচক যৌগিক শব্দ, যা اَلصِّفَاتُ মাওসুফ ও اَلْاَصْلِيَّةُ সিফাত দ্বারা গঠিত। এর শাব্দিক অর্থ হলো– মৌলিক সিফাত। এর অপর নাম হলো– صِفَات لَازِمَة তথা আবশ্যকীয় সিফাত।

পরিভাষায়, ক. শায়খ আবদুল ফাত্তাহ আল মারসাফী (র) বলেন–
اَمَّا الصِّفَاتُ الْاَصْلِيَّةُ فَهِىَ الْمُلَازِمَةُ لِلْحَرْفِ لَا تُفَارِقُهٗ بِحَالٍ مِنَ الْاَحْوَالِ كَالْجَهْرِ وَالْاِسْتِعْلَاءِ وَالْاِطْبَاقِ وَالْقَلْقَلَةِ۔
অর্থাৎ, সিফাতে আসলিয়া হলো, হরফের সাথে মিলিত এমন গুণ, যা কোনো অবস্থায় তার থেকে বিচ্ছিন্ন হয় না। যেমন– জাহর, ইস্তিলা, ইতবাক ও কলকলা।

খ. ড. এবিএম হিযবুল্লাহ (দা. বা.) বলেন– هِىَ الَّتِىْ تُلَازِمُ الْحَرْفَ وَلَا تُفَارِقُهٗ بِحَالٍ مِنَ الْاَحْوَالِ অর্থাৎ, যা সর্বদা হরফের সাথেই থাকে কোনো অবস্থায় তা হতে বিচ্ছিন্ন হয় না, তাকে صِفَات اَصْلِيَّة বলে।

صِفَات اَصْلِيَّة-এর সংখ্যা : صِفَات اَصْلِيَّة-এর সংখ্যা সম্পর্কে কারী ও তাজভীদশাস্ত্রবিদগণের একাধিক অভিমত পরিলক্ষিত হয়। যেমন–

ক. মাক্কী ইবনে আবি তালেব (র)-এর মতে, সিফাতে আসলিয়া বা লাযেমার সংখ্যা ৪৪টি।

খ. শায়খ মুহাম্মাদ ইবনে জাযারী (র)-এর মতে, সিফাতে আসলিয়া বা লাযেমার সংখ্যা ৩৪টি।

গ. قَوَاعِدُ التَّجْوِيْدِ প্রণেতার মতে, সিফাতে আসলিয়া বা লাযেমা ১৭টি।

ঘ. শায়খ আবদুর রহীম বদরুদ্দীন (র)-এর মতে, সিফাতে আসলিয়া বা লাযেমা ২০টি।

ঙ. শায়খ আবদুল ফাত্তাহ আল মারসাফী (র)-এর মতে, ১৪টি।

হাফেয ড. এবিএম হিযবুল্লাহ (দা. বা.) বলেন, প্রসিদ্ধ ও পছন্দনীয় মত হলো– সিফাতে আসলিয়া বা লাযেমা সর্বমোট বিশ প্রকার। এ বিশ প্রকারকে আবার দু'ভাগে ভাগ করা হয়। যথা– ক. اَلصِّفَاتُ الْمُتَضَادَّةُ তথা যেসব সিফাতের বিপরীত সিফাত রয়েছে এবং খ. اَلصِّفَات غَيْرُ الْمُتَضَادَّةِ তথা যেসব সিফাতের বিপরীত সিফাত নেই।

এতদুভয়ের বিবরণ নিম্নরূপ–

ক. اَلصِّفَاتُ الْمُتَضَادَّةُ-এর পরিচয় : যেসব হরফের সিফাতের বিপরীত সিফাত রয়েছে সেগুলোকে اَلصِّفَاتُ الْمُتَضَادَّةُ বলে।

ড. এবিএম হিযবুল্লাহ (দা. বা.) বলেন– صِفَات مُتَضَادَّة হলো– هِيَ مَا لَهُ ضِدٌّ তথা যার বিপরীত সিফাত রয়েছে।

اَلصِّفَاتُ الْمُتَضَادَّةُ-এর সংখ্যা : জমহুর কারীর মতে– صِفَات مُتَضَادَّة এগারোটি। যথা–

১. اَلْهَمْسُ তথা অস্পষ্ট করা।
২. اَلْجَهْرُ তথা স্পষ্ট করা।
৩. اَلشِّدَّةُ তথা শক্ত।
৪. اَلتَّوَسُّطُ তথা মধ্যম।
৫. اَلرَّخَاوَةُ তথা নরম।
৬. اَلْاِسْتِعْلَاءُ তথা উঁচু করা।
৭. اَلْاِسْتِفَالُ তথা নিচু করা।
৮. اَلْاِطْبَاقُ তথা মিলানো।
৯. اَلْاِنْفِتَاحُ তথা পৃথক হওয়া।
১০. اَلْاِذْلَاقُ তথা জিহ্বায় ধার দেওয়া।
১১. اَلْاِصْمَاتُ তথা চুপ করানো।

খ. اَلصِّفَاتُ غَيْرُ الْمُتَضَادَّةِ-এর পরিচয় : ড. এবিএম হিযবুল্লাহ (দা. বা.) বলেন– هِيَ مَا لَا ضِدَّ لَهُ অর্থাৎ, যে সিফাতের কোনো বিপরীত সিফাত নেই তাকে اَلصِّفَاتُ غَيْرُ الْمُتَضَادَّةِ বলে।

اَلصِّفَاتُ غَيْرُ الْمُتَضَادَّةِ-এর সংখ্যা : صِفَات غَيْر مُتَضَادَّة হলো নয়টি। যথা–

১. اَلصَّفِيْرُ তথা শিসধ্বনি।
২. اَلْقَلْقَلَةُ তথা নাড়াদান, কম্পন।
৩. اَللِّيْنُ তথা কোমল, নরম।
৪. اَلْاِنْحِرَافُ তথা ঝুঁকে পড়া।
৫. اَلتَّكْرِيْرُ তথা বারবার উচ্চারণ করা।
৬. اَلتَّفَشِّىْ তথা বিস্তৃত হওয়া।
৭. اَلْاِسْتِطَالَةُ তথা দীর্ঘায়িত হওয়া।
৮. اَلْخَفَاءُ তথা গোপন করা।
৯. اَلْغُنَّةُ তথা নাকের বাঁশির আওয়াজ।

২. **اَلصِّفَاتُ الْعَرْضِيَّةُ-এর পরিচয় :** اَلصِّفَاتُ الْعَرْضِيَّةُ শব্দটি مُرَكَّب تَوْصِيْفِىّ তথা গুণবাচক যৌগিক শব্দ, যা اَلصِّفَاتُ মাওসুফ ও اَلْعَرْضِيَّةُ সিফাত দ্বারা গঠিত। এর শাব্দিক অর্থ হলো– অমৌলিক সিফাত।

পরিভাষায়, ক. শায়খ আবদুল ফাত্তাহ আল মারসাফী (র) বলেন–

هِيَ الَّتِىْ تُعْرَضُ لِلْحَرْفِ فِىْ بَعْضِ الْاَحْوَالِ وَتَنْفَكُّ عَنْهُ فِى الْبَعْضِ الْاٰخَرِ لِسَبَبٍ مِنَ الْاَسْبَابِ۔

অর্থাৎ, যে সিফাত কতিপয় অবস্থায় হরফের সাথে মিলিত হয় আবার কতিপয় অবস্থায় কোনো এক কারণে তার থেকে পৃথক হয়।

খ. ড. এবিএম হিযবুল্লাহ (দা. বা.) বলেন–

هِيَ الصِّفَاتُ الَّتِىْ لَمْ تَكُنْ مُلَازِمَةً لِلْحَرْفِ فِى كُلِّ حَالٍ بَلْ تُعْرَضُ لَهُ فِىْ بَعْضِ الْاَحْوَالِ وَتَنْفَكُّ عَنْهُ فِى الْبَعْضِ الْاٰخَرِ لِسَبَبٍ مِنَ الْاَسْبَابِ كَالتَّفْخِيْمِ وَالتَّرْقِيْقِ وَمَا اِلٰى ذٰلِكَ۔

অর্থাৎ, এটা এমন সিফাত যা সর্বাবস্থায় হরফের সাথে যুক্ত থাকে না; বরং কোনো এক কারণে কতিপয় অবস্থায় তার সাথে মিলিত হয় আর অপর কতিপয় অবস্থায় তা থেকে পৃথক থাকে। যেমন– اَلتَّفْخِيْمُ তথা মোটা করে পড়া, اَلتَّرْقِيْقُ তথা চিকন করে পড়া ইত্যাদি।

اَلصِّفَاتُ الْعَرْضِيَّةُ-এর সংখ্যা : সকলের ঐকমত্যে অমৌলিক সিফাত মোট এগারো প্রকার। যথা–

১. اَلْاِظْهَارُ তথা স্পষ্ট করে উচ্চারণ করা।
২. اَلْاِدْغَامُ তথা মিলানো।
৩. اَلْاِخْفَاءُ তথা অস্পষ্ট করে পড়া।
৪. اَلْاِقْلَابُ তথা পরিবর্তন করে পড়া।
৫. اَلْمَدُّ তথা টেনে পড়া।
৬. اَلْقَصْرُ তথা সংক্ষেপ করে পড়া।
৭. اَلتَّفْخِيْمُ তথা মোটা করে পড়া।
৮. اَلتَّرْقِيْقُ তথা চিকন করে পড়া।
৯. اَلتَّحْرِيْكُ তথা হরকত দেওয়া।
১০. اَلسُّكُوْنُ তথা সাকিন দেওয়া।
১১. اَلسَّكْتُ তথা সাকতা করে পড়া।

সমাপনী : কুরআন মাজীদ তাজভীদসহ সুন্দর উচ্চারণে তেলাওয়াতের অন্যতম পদ্ধতি হলো সিফাত। এর মাধ্যমে আরবি হরফসমূহ মাখরাজ হতে সুন্দর স্বরে উচ্চারণ করা যায়। এটি একই মাখরাজের একাধিক হরফের উচ্চারণে আলাদা রূপ তৈরি করে। আরবি বর্ণমালার সিফাত দু'ধরনের। মৌলিক সিফাত, যেগুলো সর্বাবস্থায় হরফের সাথে যুক্ত থাকে আর অমৌলিক সিফাত, যেগুলো সর্বাবস্থায় হরফের সাথে যুক্ত থাকে না; বরং কোনো এক কারণে কতিপয় অবস্থায় হরফের সাথে যুক্ত হয় আবার অপর অবস্থায় তা থেকে পৃথক হয়ে যায়।

■ أو- اجب عن اثنين من الاسئلة التالية :

(الف) عَرِّفْ عِلْمَ اَلتَّجْوِيْدِ- وَمَا غَرَضُهُ وَمَوْضُوْعُهُ وَنَشْأَتُهُ وَتَطَوُّرُهُ؟ بَيِّنْ بِالْاِيْضَاحِ-

[ইলমুত তাজভীদ-এর সংজ্ঞা দাও। এর উদ্দেশ্য, আলোচ্য বিষয়, উৎপত্তি ও ক্রমবিকাশ কী? সুস্পষ্টভাবে বর্ণনা কর।]

উপস্থাপনা : আল কুরআনুল কারীম পথহারা বনি আদমের হেদায়াতের দিশারি। মানবজাতিকে গোমরাহির তিমির থেকে হেদায়াতের সোনালি পথে বের করে নিয়ে আসার জন্য আল্লাহ তায়ালা এ কুরআন মাজীদ নাযিল করেছেন। গৌরবান্বিত এ গ্রন্থ শুদ্ধরূপে অধ্যয়ন করা আবশ্যক। এ সম্পর্কে মহান আল্লাহ বলেন– وَرَتِّلِ الْقُرْاٰنَ تَرْتِيْلًا - (اَلْمُزَّمِّلُ : ٤); এ পবিত্র বাণী দ্বারা স্পষ্টত প্রমাণ হয় যে, আল কুরআন স্পষ্টরূপে ধীরে ধীরে সুন্দরভাবে পাঠ করা ফরয। পরিভাষায় এটাকে তাজভীদ বলে। এর মাধ্যমে আরবি বর্ণমালা উচ্চারণ, এগুলোর সিফাত ঠিকমতো আদায় করাসহ আল কুরআন তেলাওয়াতের প্রকাশ্য ও অপ্রকাশ্য ভুলত্রুটি থেকে বেঁচে থাকা যায়। হিজরী চতুর্থ শতাব্দীর শেষের দিকে ইলমুত তাজভীদের উৎপত্তি হয়ে বর্তমান সময় পর্যন্ত এ শাস্ত্রের ক্রমবিকাশ চলমান। নিচে প্রশ্নালোকে ইলমুত তাজভীদের পরিচয়, উদ্দেশ্য, আলোচ্য বিষয় এবং এর উৎপত্তি ও ক্রমবিকাশ সম্পর্কে আলোচনা করা হলো।

➲ تَعْرِيْفُ عِلْمِ التَّجْوِيْدِ :

ইলমুত তাজভীদ-এর পরিচয় : عِلْمُ اَلتَّجْوِيْدِ শব্দটি مُرَكَّب اِضَافِى তথা সম্বন্ধপদীয় যৌগিক শব্দ, যা عِلْمُ মুযাফ ও اَلتَّجْوِيْدِ মুযাফ ইলাইহ-এর সমন্বয়ে গঠিত। এ হিসেবে عِلْمُ اَلتَّجْوِيْدِ-এর দু'ধরনের পরিচয় দেওয়া যায়। যথা–

১. اَلْحَدُّ الْاِضَافِىُّ তথা সম্বন্ধপদীয় সংজ্ঞা।

২. اَلْحَدُّ اللَّقَبِىُّ তথা উপাধিগত সংজ্ঞা। নিচে উভয় প্রকার সংজ্ঞা প্রদান করা হলো–

এক. اَلْحَدُّ الْاِضَافِىُّ তথা সম্বন্ধপদীয় সংজ্ঞা : مُضَافْ ও مُضَافْ اليه-এর পৃথক পৃথক সংজ্ঞা প্রদান করাকে اَلْحَدُّ الْاِضَافِىُّ বলে। সুতরাং এখানে عِلْم ও اَلتَّجْوِيْدُ-এর পৃথক সংজ্ঞা প্রদত্ত হলো–

عِلْم-এর পরিচয় : عِلْم শব্দটি ইসমে মাসদার। এটি একবচন, বহুবচনে عُلُوْم; শব্দটি বাবে سَمِعَ থেকে ব্যবহার হয়। এর অর্থ– বিদ্যা, শাস্ত্র, জ্ঞান ইত্যাদি। এর আভিধানিক অর্থ নিম্নরূপ–

১. اَلْاِدْرَاكُ وَالْفَهْمُ তথা অনুধাবন করা ও বোঝা।
২. اِدْرَاكُ الشَّىْءِ بِحَقِيْقَتِهٖ তথা বস্তুর প্রকৃত অবস্থা সম্পর্কে উপলব্ধি করা।
৩. اَلْمَعْرِفَةُ তথা পরিচয় লাভ করা।
৪. اَلنُّوْرُ তথা আলো।
৫. اَلْاِدْرَاكُ وَالْمَعْرِفَةُ তথা অনুধাবন করা ও জানা।
৬. اَلْفَهْمُ তথা বোঝা।
৭. اَلتَّعَقُّلُ তথা হৃদয়ঙ্গম করা।

পারিভাষিক সংজ্ঞা : عِلْم-এর পারিভাষিক সংজ্ঞা প্রদানে মনীষীগণের পক্ষ থেকে একাধিক অভিমত পাওয়া যায়। যেমন–

১. আল্লামা আবদুল আযীম যারকানী (র) বলেন, আল্লাহ তায়ালা, তাঁর আয়াত ও নিদর্শনাবলি এবং মানুষ ও অন্যান্য সৃষ্টির প্রতি তাঁর কার্যাবলি অনুধাবন করার নাম عِلْم;

২. সাইয়েদ শরীফ জুরজানী (র) বলেন– اَلْعِلْمُ هُوَ الْاِعْتِقَادُ الْجَازِمُ الْمُطَابِقُ لِلْوَاقِعِ অর্থাৎ, عِلْم হলো বাস্তবতার অনুকূলে সুদৃঢ় বিশ্বাস।

৩. ইমাম গাযালী (র) বলেন– قَدْ كَانَ الْعِلْمُ يُطْلَقُ عَلَى الْعِلْمِ بِاللّٰهِ تَعَالٰى وَاٰيَاتِهٖ بِاَفْعَالِهٖ فِىْ عِبَادِهٖ وَخَلْقِهٖ অর্থাৎ, আল্লাহ তায়ালা ও তাঁর নিদর্শনাবলি এবং বান্দা ও সৃষ্টির প্রতি তাঁর কার্যাবলি সম্পর্কে জ্ঞানলাভকে عِلْم বলে।

৪. দার্শনিকদের মতে– اَلْعِلْمُ هُوَ حُصُوْلُ صُوْرَةِ الشَّىْءِ فِى الْعَقْلِ অর্থাৎ, স্মৃতিপটে কোনো বস্তুর আকৃতি অর্জিত হওয়াকে عِلْم বলে।

৫. আল্লামা ফখরুদ্দীন রাযী (র) বলেন– اَلْعِلْمُ هُوَ اَجْلَى الْبَدِيْهَاتِ অর্থাৎ, ইলম হলো তাৎক্ষণিক অর্জিত স্পষ্ট জ্ঞান।

৬. تَيْسِيْرُ الْوُصُوْلِ شَرْحُ ثَلَاثَةِ الْاُصُوْلِ গ্রন্থপ্রণেতা ড. আবদুল মুহসিন (র) বলেন–
اَلْعِلْمُ هُوَ مَعْرِفَةُ اللّٰهِ وَمَعْرِفَةُ نَبِيِّهٖ وَمَعْرِفَةُ الدِّيْنِ الْاِسْلَامِ بِالْاَدِلَّةِ-
অর্থাৎ, ইলম হলো, দলীলসহ আল্লাহ তায়ালার পরিচয়, তাঁর নবী এবং দ্বীন ইসলামের পরিচয় জানা।

৭. আল্লামা বদরুদ্দীন আইনী (র) বলেন– اِنَّهٗ صِفَةٌ مِنْ صِفَاتِ النَّفْسِ تُوْجِبُ تَمْيِيْزًا لَا يَحْتَمِلُ النَّقِيْضَ فِى الْاُمُوْرِ الْمَعْنَوِيَّةِ

اَلتَّجْوِيْد-এর পরিচয় : اَلتَّجْوِيْدُ শব্দটি বাবে تَفْعِيْل-এর মাসদার। এটি جَوْد মাদ্দাহ থেকে গঠিত। এর আভিধানিক অর্থ সম্পর্কে মনীষীগণের অভিমত নিম্নরূপ–

১. هِدَايَةُ الْقَارِىْ اِلٰى تَجْوِيْدِ كَلَامِ الْبَارِىْ গ্রন্থপ্রণেতা আল্লামা আবদুল ফাত্তাহ সাইয়েদ আজমী আল মারসাফী (র) বলেন–
اَلتَّجْوِيْدُ هُوَ ضِدُّ الرَّدَاءَةِ وَهُوَ فِى اللُّغَةِ التَّحْسِيْنُ- وَيُقَالُ لِقَارِئِ الْقُرْاٰنِ الْكَرِيْمِ الْمُحْسِنُ لِتِلَاوَتِهٖ مُجَوِّدٌ-
অর্থাৎ, তাজভীদ হলো মন্দ ও অসুন্দরের বিপরীত। এর আভিধানিক অর্থ– সুন্দর করা, সজ্জিত করা। যেমন সুন্দরভাবে কুরআন মাজীদ তেলাওয়াতকারীকে আরবিতে বলা হয় مُجَوِّدٌ;

২. اَلْبُرْهَانُ فِىْ تَجْوِيْدِ الْقُرْاٰنِ গ্রন্থপ্রণেতা আল্লামা সাদেক কামহাভী (র) বলেন– اَلتَّجْوِيْدُ لُغَةً التَّحْسِيْنُ كَمَا يُقَالُ هٰذَا شَىْءٌ جَيِّدٌ اَىْ حَسَنٌ অর্থাৎ, আভিধানিক দিক থেকে তাজভীদ শব্দের অর্থ– সুন্দর করা। যেমন কোনো সুন্দর বস্তুকে বলা হয়– هٰذَا شَىْءٌ جَيِّدٌ

৩. اَلتَّمْهِيْدُ فِىْ عِلْمِ التَّجْوِيْدِ গ্রন্থপ্রণেতা আল্লামা শামসুদ্দীন আবুল খায়ের মুহাম্মাদ ইবনে জাযারী (র) বলেন–
مَعْنَاهُ اِنْتِهَاءُ الْغَايَةِ فِىْ اِتْقَانِهٖ وَبُلُوْغُ النِّهَايَةِ فِىْ تَحْسِيْنِهٖ-
অর্থাৎ, এর অর্থ হলো, সৌন্দর্য ও পূর্ণতার চূড়ান্ত সীমায় পৌঁছা।

৪. اَلْقَوْلُ السَّدِيْدُ فِىْ اَحْكَامِ التَّجْوِيْدِ গ্রন্থপ্রণেতা আল্লামা আহমাদ হেজাযী (র) বলেন–
اَلتَّجْوِيْدُ فِى اللُّغَةِ هُوَ التَّحْسِيْنُ مُطْلَقًا وَالْمُرَادُ بِهٖ اِعْطَاءُ الْحُرُوْفِ حَقَّهَا ـ

অর্থাৎ, আভিধানিকভাবে তাজভীদ অর্থ হলো– সুন্দরকরণ। আর তা দ্বারা উদ্দেশ্য হলো– আরবি বর্ণসমূহ উচ্চারণে যথাযথ হক আদায় করা। এছাড়াও اَلتَّجْوِيْدُ শব্দটি নিম্নোক্ত অর্থেও ব্যবহার হয়ে থাকে–

৫. اَلتَّزْيِيْنُ তথা সজ্জিত করা।
৬. اَلْغَايَةُ فِى الْحُسْنِ তথা পরিপূর্ণ সুন্দরকরণ।
৭. اَلتَّرْتِيْلُ তথা স্পষ্ট ও সুন্দর তেলাওয়াত।
৮. اَلتَّجْمِيْلُ তথা সুন্দর করা।
৯. اَلتَّغَنِّىُ بِالْقُرْاٰنِ তথা সুর করে কুরআন মাজীদ তেলাওয়াত করা।
১০. ইংরেজিতে এর প্রতিশব্দ হলো– To beautify, To prettify ইত্যাদি।

পারিভাষিক সংজ্ঞা : তাজভীদের পারিভাষিক সংজ্ঞা নিম্নরূপ–

১. শায়খ আবদুল ফাত্তাহ সাইয়েদ আজমী আল মারসাফী (র) বলেন–
هُوَ فِى الْاصْطِلَاحِ اِخْرَاجُ كُلِّ حَرْفٍ مِنْ مَخْرِجِهٖ وَاِعْطَائُهٗ حَقَّهٗ وَمُسْتَحِقَّهٗ مِنَ الصِّفَاتِ ـ
অর্থাৎ, পরিভাষায় তাজভীদ হলো, প্রতিটি বর্ণকে স্বীয় উচ্চারণস্থল হতে উচ্চারণ করা এবং সিফাতের ক্ষেত্রে তার যথাযথ হক আদায় করা।

২. اَلْبُرْهَانُ فِىْ تَجْوِيْدِ الْقُرْاٰنِ গ্রন্থপ্রণেতা বলেন– اَلتَّجْوِيْدِ اِصْطِلَاحًا اِخْرَاجُ كُلِّ حَرْفٍ مِنْ مَخْرَجِهٖ مَعَ اِعْطَائِهٖ حَقَّهٗ وَمُسْتَحِقَّهٗ
অর্থাৎ, পরিভাষায় তাজভীদ হলো, প্রতিটি বর্ণকে স্বীয় উচ্চারণস্থল হতে তার যথাযথ হক আদায়সহ উচ্চারণ করা।

৩. শায়খ শামসুদ্দীন আবুল খায়ের মুহাম্মাদ ইবনে জাযারী (র) বলেন–
اَلتَّجْوِيْدُ هُوَ حُلِيَّةُ التِّلَاوَةِ وَزِيْنَةُ الْقِرَائَةِ وَهُوَ اِعْطَاءُ الْحُرُوْفِ حُقُوْقَهَا وَتَرْتِيْبُهَا مَرَاتِبَهَا وَرَدُّ الْحَرْفِ اِلٰى مَخْرَجِهٖ وَاَصْلِهٖ وَاِلْحَاقُهٗ بِنَظِيْرِهٖ وَشِكْلِهٖ وَاَشْبَاعِ لَفْظِهٖ وَتَلْطِيْفُ النُّطْقِ بِهٖ عَلٰى حَالِ صِيْغَتِهٖ وَهَيْئَتِهٖ مِنْ غَيْرِ اِسْرَافٍ وَلَا تَعَسُّفٍ وَلَا اِفْرَاطٍ وَلَا تَكَلُّفٍ ـ

৪. ড. আবু আসেম আবদুল আযীয (র) বলেন– هُوَ تَحْسِيْنُ الْقِرَاءَةِ بِالْقُرْاٰنِ الْكَرِيْمِ مُرَتِّلًا وَمُفَسِّرَةً حُرُوْفَهٗ

দুই. اَلْحَدُّ اللَّقَبِىُّ তথা পদবিগত সংজ্ঞা : مُضَاف اليه ও مُضَاف-এর একত্রে সংজ্ঞা প্রদান করাকে اَلْحَدُّ اللَّقَبِىُّ বলে। এটাকে পারিভাষিক সংজ্ঞাও বলা হয়। عِلْمُ التَّجْوِيْدِ-এর اَلْحَدُّ اللَّقَبِىُّ নিম্নরূপ–

১. শায়খ আহমাদ হেজাযী আল ফকীহ (র) বলেন– هُوَ عِلْمٌ يُبْحَثُ فِيْهِ عَنْ مَخَارِجِ الْحُرُوْفِ وَصِفَاتِهَا وَغَيْرِ ذٰلِكَ অর্থাৎ, এটি এমন এক শাস্ত্র, যার মধ্যে আরবি বর্ণসমূহের মাখরাজ, সিফাত ইত্যাদি সম্পর্কে আলোচনা করা হয়।

২. হাফেয ড. আবুল বারাকাত মুহাম্মাদ হিযবুল্লাহ (দা. বা.) বলেন–
هُوَ عِلْمٌ يُعْرَفُ بِهٖ كَيْفِيَّةُ قِرَاءَةِ الْقُرْاٰنِ الْكَرِيْمِ مُجَوَّدًا وَمُرَتَّلًا بِحَيْثُ يَصُوْنَ اللِّسَانُ عَنِ الْوُقُوْعِ فِى الْخَطَاءِ وَاللَّحْنِ عِنْدَ قِرَاءَةِ كِتَابِ اللّٰهِ تَعَالٰى ـ

৩. ইলমে কেরাতের পরিভাষায়, যে শাস্ত্র পাঠ করলে কুরআন মাজীদ শুদ্ধরূপে তেলাওয়াত করা যায় এবং এর প্রতিটি হরফ সঠিকভাবে সিফাতসহ যথাযথভাবে উচ্চারণের পদ্ধতি জানা যায় তাকে তাজভীদ বলা হয়।

৪. ড. মান্না আল কাত্তান (র) বলেন– عِلْمُ التَّجْوِيْدِ عِلْمٌ يُعْرَفُ بِهٖ كَيْفِيَّاتُ النُّطْقِ بِالْكَلِمَاتِ الْقُرْاٰنِيَّةِ অর্থাৎ, ইলমুত তাজভীদ এমন শাস্ত্র, যার মাধ্যমে আল কুরআনের শব্দাবলির উচ্চারণ পদ্ধতি জানা যায়।

➲ غَرَضُ عِلْمُ التَّجْوِيْدِ :

ইলমুত তাজভীদের লক্ষ্য উদ্দেশ্য : যে-কোনো শাস্ত্রের নির্দিষ্ট লক্ষ্য ও উদ্দেশ্য থাকে। যার মাধ্যমে উক্ত শাস্ত্রের উপকারিতা সম্পর্কে অবগত হওয়া যায়। তেমনি ইলমুত তাজভীদেরও নির্দিষ্ট غَرْض ও غَايَة রয়েছে। এ সম্পর্কে মনীষীগণের অভিমত নিম্নরূপ–

১. ড. এবিএম হিযবুল্লাহ (দা. বা.) বলেন– غَايَةُ عِلْمِ التَّجْوِيْدِ صَوْنُ اللِّسَانِ عَنِ اللَّحْنِ وَالْخَطَاءِ فِىْ كِتَابِ اللّٰهِ الْكَرِيْمِ عِنْدَ الْقِرَاءَةِ অর্থাৎ, ইলমুত তাজভীদের লক্ষ্য উদ্দেশ্য হলো, আল্লাহ তায়ালার কিতাব আল কুরআনুল কারীম তেলাওয়াতের সময় জিহ্বাকে প্রকাশ্য ও অপ্রকাশ্য ভুলত্রুটি থেকে রক্ষা করা।

২. اَلْقَوْلُ السَّدِيْدُ فِىْ اَحْكَامِ التَّجْوِيْدِ গ্রন্থপ্রণেতা শায়খ আহমাদ হেজাযী আল ফকীহ (র) বলেন–
اَلْغَايَةُ الْوَحِيْدَةُ مِنَ التَّجْوِيْدِ صَوْنُ اللِّسَانِ عَنِ الْخَطَاءِ فِىْ كَلَامِ اللّٰهِ تَعَالٰى وَقْتَ تِلَاوَتِهٖ مِنَ الزِّيَادَةِ وَالنُّقْصَانِ فِى بَعْضِ الْحُرُوْفِ وَفَائِدَتُهٗ الْفَوْزُ بِسَعَادَةِ الدُّنْيَا وَالْاٰخِرَةِ ـ

৩. هِدَايَةُ الْقَارِىْ اِلٰى تَجْوِيْدِ كَلَامِ الْبَارِىْ গ্রন্থপ্রণেতা শায়খ আবদুল ফাত্তাহ সাইয়েদ আজমী আল মারসাফী (র) বলেন–
ثَمَرَتُهٗ هِىَ صَوْنُ اللِّسَانِ عَنِ اللَّحْنِ فِىْ لَفْظِ الْقُرْاٰنِ الْكَرِيْمِ حَالَ الْاَدَاءِ ـ

৪. اَلْبُرْهَانُ فِىْ تَجْوِيْدِ الْقُرْاٰنِ গ্রন্থপ্রণেতা বলেন– غَايَتُهٗ صَوْنُ اللِّسَانِ عَنِ اللَّحْنِ فِىْ كَلَامِ اللّٰهِ تَعَالٰى

৫. ড. মান্না আল কাত্তান (র) বলেন– غَايَةُ عِلْمِ التَّجْوِيْدِ : بُلُوْغُ الْاِتْقَانِ فِىْ تِلَاوَةِ الْقُرْاٰنِ ـ اَوْ هُوَ صَوْنُ اللِّسَانِ عَنِ اللَّحْنِ فِىْ تِلَاوَةِ الْقُرْاٰنِ

➲ مَوْضُوْعُ عِلْمِ التَّجْوِيْدِ :

ইলমুত তাজভীদের আলোচ্য বিষয় : প্রতিটি শাস্ত্রেরই মৌলিক কিছু আলোচ্য বিষয় থাকে, যা জানার মাধ্যমে পাঠক তা পাঠের প্রতি আগ্রহী হয়ে ওঠে। তেমনি عِلْمُ اَلتَّجْوِيْدِ-এর মৌলিক আলোচ্য বিষয় রয়েছে। এ সম্পর্কে মনীষীগণের অভিমত নিম্নরূপ–

১. ড. এবিএম হিযবুল্লাহ (দা. বা.) বলেন– عِلْمُ التَّجْوِيْدِ مَوْضُوْعُهُ اَلْقُرْاٰنُ الْكَرِيْمُ অর্থাৎ, ইলমুত তাজভীদের আলোচ্য বিষয় হলো আল কুরআনুল কারীম।

২. শায়খ আহমাদ হেজাযী আল ফকীহ (র) বলেন– مَوْضُوْعُهُ اَلْاٰيَاتُ الْقُرْاٰنِيَةُ অর্থাৎ, ইলমুত তাজভীদের আলোচ্য বিষয় হলো আল কুরআনের আয়াতসমূহ।

৩. আল্লামা আবদুল ফাত্তাহ সাইয়েদ আজমী আল মারসাফী (র) বলেন–
مَوْضُوْعُهُ هُوَ الْكَلِمَاتُ الْقُرْاٰنِيَّةُ مِنْ حَيْثُ اِعْطَاءِ حُرُوْفِهَا حَقَّهَا وَمُسْتَحِقَّهَا مِنْ غَيْرِ تَكَلُّفٍ وَلَا تَعَسُّفٍ فِى النُّطْقِ مِمَّا يَخْرُجُ بِهَا عَنِ الْقَوَاعِدِ الْمُجْمَعِ عَلَيْهَا۔

৪. জমহুর কারীগণের মতে– اِنَّ مَوْضُوْعَ التَّجْوِيْدِ هُوَ الْقُرْاٰنُ الْكَرِيْمُ فَقَطْ অর্থাৎ, তাজভীদের আলোচ্য বিষয় শুধু আল কুরআনুল কারীম।

৫. আল্লামা মুহাম্মাদ সাদেক কামহাভী (র) বলেন– مَوْضُوْعُ التَّجْوِيْدِ الْكَلِمَاتُ الْقُرْاٰنِيَّةُ وَقِيْلَ الْحَدِيْثُ كَذَالِكَ

➲ نَشْأَةُ عِلْمِ التَّجْوِيْدِ وَتَطَوُّرُهُ :

ইলমুত তাজভীদ-এর উৎপত্তি ও ক্রমবিকাশ : عِلْمُ التَّجْوِيْدِ-এর উৎপত্তি ও ক্রমবিকাশকে আমরা দু'ভাগে ভাগ করতে পারি। যথা–
১. اَلنَّاحِيَةُ الْعَمَلِيَّةُ তথা প্রয়োগগত দিক এবং ২. نَاحِيَةُ قَوَاعِدِهِ وَقَضَايَاهُ الْعِلْمِيَّةُ তথা এর ইলমী বিধান ও নীতিমালার দিক।
নিচে এ দুটি দৃষ্টিকোণ থেকে তাজভীদের উৎপত্তি ও ক্রমবিকাশ সম্পর্কে আলোচনা করা হলো–

১. اَلنَّاحِيَةُ الْعَمَلِيَّةُ **তথা প্রয়োগগত দিক :** ইলমুত তাজভীদের প্রয়োগগত দিক থেকে বিবেচনা করলে এর উৎপত্তি শুরু হয় রাসূল (স)-এর যুগ থেকে। কারণ কুরআন মাজীদের তেলাওয়াতে তাজভীদ ও তারতীল-এর প্রয়োগ تَلَقِّى ও تَلْقِيْن-এর ওপর নির্ভরশীল। এটা এক জবান থেকে অপর জবান এরূপ ধারাবাহিকতায় চলে এসেছে। পাঠক পাঠ করেন আর শ্রোতা মনোযোগসহ তা শ্রবণ করেন। অতঃপর পরবর্তী প্রজন্ম তার তেলাওয়াত অনুসরণ করে। আর শিক্ষক তাদের ভুলত্রুটি ঠিক করে দেন। এ প্রক্রিয়াটিই আমরা রাসূল (স)-এর মাধ্যমে দেখতে পাই।

নবী কারীম (স) মহান আল্লাহর পক্ষ থেকে হজরত জিবরাঈল (আ)-এর মাধ্যমে কুরআন মাজীদ অর্জন করেছিলেন। এরপর তিনি তা মুখস্থ করে নেন এবং যেভাবে তিনি হজরত জিবরাঈল (আ) থেকে তা শুনেছিলেন ঠিক সেভাবে তা নিজ জবানে তেলাওয়াত করতেন। অতঃপর সাহাবায়ে কেরামের সামনে তা শোনাতেন, তাঁদেরকে তালকীন করতেন। সাহাবায়ে কেরাম (রা) তা মনোযোগসহ শুনতেন এবং খুব আগ্রহ নিয়ে তা তেলাওয়াত করতেন। কোনো ভুলত্রুটি হলে রাসূল (স) তা ঠিক করে দিতেন। এভাবেই মুখে মুখে প্রয়োগগত দিক থেকে ইলমে তাজভীদের উৎপত্তি হয়। এ প্রক্রিয়া রাসূল (স)-এর যুগ থেকে হিজরী তৃতীয় শতাব্দী পর্যন্ত চলতে থাকে।

এ সম্পর্কে هِدَايَةُ الْقَارِىْ اِلٰى تَجْوِيْدِ كَلَامِ الْبَارِىْ প্রণেতা আল্লামা আবদুল ফাত্তাহ সাইয়েদ আজমী আল মারসাফী (র) বলেন–
لِاَنَّهُ نَزَلَ عَلٰى سَيِّدِنَا وَنَبِيِّنَا الْقُرْاٰنُ مِنْ عِنْدِ اللّٰهِ مُجَوَّدًا وَتَلْقَّاهُ مِنَ الْاَمِيْنِ جِبْرِيْلَ عَلَيْهِ السَّلَامُ كَذٰلِكَ تَلَقَّتْهُ الصَّحَابَةُ عَنْهُ وَتَلَقَّاهُ مِنَ الصَّحَابَةِ التَّابِعُوْنَ وَهٰكَذَا اِلٰى اَنْ وَصَلَ اِلَيْنَا عَنْ طَرِيْقِ شُيُوْخِنَا مُتَوَاتِرًا وَلَا يُنْكِرُ هٰذَا اِلَّا مُكَابِرٌ اَوْ مُعَانِدٌ۔

২. نَاحِيَةُ قَوَاعِدِهِ وَقَضَايَاهُ الْعِلْمِيَّةُ **তথা এর ইলমী বিধান ও নীতিমালার দিক :** ইলমুত তাজভীদের বিধানাবলি ও নিয়মকানুনসহ ইলমী দিক বিবেচনায় এর উৎপত্তি ও ক্রমবিকাশ শুরু হয় হিজরী চতুর্থ শতাব্দীর শেষ দিক থেকে। তৎকালীন জ্ঞানবিজ্ঞানের রাজধানী ইরাক থেকে ইলমে তাজভীদের উৎপত্তির সূচনা হয়। ইসলামী সাম্রাজ্য বিস্তার লাভের ফলে আরবি ভাষার সঙ্গে অনারবি ভাষা মিশে যেতে থাকে। তা ছাড়া অনারবি মুসলমানগণ কুরআন মাজীদ তেলাওয়াতে ভুলভ্রান্তি করতে থাকেন। এরূপ অবস্থা দেখে মুসলিম শাসকগণ উদ্‌বিগ্ন হয়ে পড়েন। তাঁরা কুরআন মাজীদে বিকৃতির আশঙ্কা করতে থাকেন। অতঃপর কুরআন মাজীদের বিকৃতি ও তা তেলাওয়াতের ভুলত্রুটি দূর করার জন্য প্রথমত কুরআন মাজীদে নুকতা ও হরকতের ব্যবস্থা করেন। এরপর তাজভীদের নিয়মকানুন প্রণয়ন করা হয়। যাতে এগুলোর অনুসরণ করে কুরআন মাজীদ তেলাওয়াতকারীরা ভুলত্রুটি থেকে বেঁচে থাকতে পারেন। ইলমে তাজভীদের নিয়মকানুন প্রণয়নে যাঁরা অবদান রাখেন তাঁরা হলেন– শায়খ আবুল আসওয়াদ আদ দুয়াইলী (র), শায়খ আবু ওবায়েদ কাসেম ইবনে সালাম (র), শায়খ খলীল ইবনে আহমাদ (র), শায়খ আবু মুযাহিম খাকানী (র) প্রমুখ।

এভাবে ইলমে তাজভীদের সূচনা হয় এবং ইলমে কেরাতের ইমামগণ তাঁদের অনুসরণ করে তাজভীদশাস্ত্রের ওপর বিভিন্ন গ্রন্থ রচনা করেন।
اَلتَّجْوِيْدُ শব্দ ব্যবহার করে হিজরী চতুর্থ শতাব্দীতে সর্বপ্রথম গ্রন্থ প্রণয়ন করেন শায়খ আবুল হাসান আলী ইবনে জাফর (র)। তিনি ৪১০ হিজরীতে ইন্তেকাল করেন। তাঁর প্রণীত গ্রন্থের নাম– اَلتَّنْبِيْهُ عَلَى اللَّحْنِ الْجَلِىِّ وَاللَّحْنِ الْخَفِىِّ; এরপর স্পেনে দুটি গ্রন্থ রচিত হয়। সেগুলো হলো–

১. اَلرِّعَايَةُ فِىْ تَجْوِيْدِ الْقِرَاءَةِ وَتَحْقِيْقِ لَفْظِ التِّلَاوَةِ; এ মূল্যবান গ্রন্থটির লেখক হলেন শায়খ মাক্কী ইবনে আবি তালেব (র)। তিনি ৪৩৭ হিজরীতে ইন্তেকাল করেন।

২. اَلتَّحْدِيْدُ فِى الْاِتْقَانِ وَالتَّجْوِيْدِ; এ গ্রন্থটির লেখক হলেন শায়খ আবু আমর ওসমান ইবনে সাঈদ (র)। তিনি ৪৪৪ হিজরীতে ইন্তেকাল করেন। ইলমে তাজভীদের এ মূল্যবান গ্রন্থদ্বয়ের পর আরও কিছু গ্রন্থ রচিত হয়। তন্মধ্যে উল্লেখযোগ্য ও বহুল প্রচলিত গ্রন্থ হলো– اَلْمُوَضَّحُ فِى التَّجْوِيْدِ; এ গ্রন্থটির লেখক হলেন শায়খ আবদুল ওহাব কুরতুবী (র)। তিনি ৪৬৯ হিজরীতে ইন্তেকাল করেন। হিজরী পঞ্চম শতাব্দী পর্যন্ত এভাবে ইলমে তাজভীদের ক্রমবিকাশধারা চলতে থাকে।

হিজরী পঞ্চম শতাব্দীর পর থেকে ইলমে তাজভীদের সোনালি যুগ শুরু হয়, যা বর্তমান সময় পর্যন্ত চলমান। এ সময় তাজভীদশাস্ত্রের আধুনিক ও পরিপূর্ণ নিয়মকানুন সংবলিত শত শত গ্রন্থ রচিত হয়। বিভিন্ন দেশের বিশ্ববিদ্যালয়গুলোতে ইলমে তাজভীদের ওপর স্বতন্ত্র বিষয় চালু করা হয়। এ সময়ে প্রণীত প্রসিদ্ধ গ্রন্থাবলি নিম্নরূপ–

১. نُوْنِيَّةُ السَّخَاوِيِّ فِى التَّجْوِيْدِ : এ গ্রন্থের লেখক হলেন শায়খ আবুল হাসান ইলমুদ্দীন আলী আস সাখাভী (র)।

২. اَلْمُفِيْدُ فِىْ شَرْحِ عُمْدَةِ الْمَجِيْدِ فِىْ النَّظْمِ وَالتَّجْوِيْدِ : এ গ্রন্থের লেখক হলেন শায়খ বদরুদ্দীন মুরাদি (র)।

৩. اَلتَّمْهِيْدُ فِىْ عِلْمِ التَّجْوِيْدِ : এটি ইলমে তাজভীদের ওপর প্রণীত বিখ্যাত গ্রন্থ। এ গ্রন্থের লেখক হলেন শায়খ শামসুদ্দীন আবুল খায়ের মুহাম্মাদ ইবনে জাযারী (র)। তিনি ৮৩৩ হিজরীতে ইন্তেকাল করেন।

৪. اَلْقَوْلُ السَّدِيْدُ فِىْ عِلْمِ التَّجْوِيْدِ : এটি তাজভীদ বিষয়ে প্রণীত অন্যতম কিতাব। এর লেখক হলেন শায়খ আহমাদ হেজাযী আল ফকীহ (র)। তিনি মক্কা মোকাররমার رَئِيْسُ الْقُرَّاءِ ছিলেন।

৫. هِدَايَةُ الْقَارِىْ اِلٰى تَجْوِيْدِ كَلَامِ الْبَارِىْ : ইলমুত তাজভীদ বিষয়ে প্রণীত এ গ্রন্থটি সর্বাধিক প্রসিদ্ধ ও সর্বজন সমাদৃত কিতাব। এ বিখ্যাত গ্রন্থের লেখক হলেন শায়খ আবদুল ফাত্তাহ ইবনে সাইয়েদ আজমী আল মারসাফী (র)। তিনি মদিনা ইসলামী বিশ্ববিদ্যালয়ের 'আল কুরআন' বিভাগের সহযোগী অধ্যাপক ছিলেন। ১৪০৯ হিজরীতে তিনি ইন্তেকাল করেন।

৬. اَلْبُرْهَانُ فِىْ تَجْوِيْدِ الْقُرْاٰنِ : এ গ্রন্থের লেখক হলেন শায়খ মুহাম্মাদ সাদেক কামহাভী (র)।

৭. قَوَاعِدُ التَّرْتِيْلِ الْمُيَسَّرَةُ : এ গ্রন্থের লেখক হলেন শায়খ ফাতহা আল খাওলী (র)।

৮. قَوَاعِدُ التَّجْوِيْدِ : এ গ্রন্থের লেখক হলেন শায়খ আবদুল আযীয ইবনে আবদুল ফাত্তাহ (র)।

৯. اَلْمُخْتَصَرُ الْمُفِيْدُ فِىْ عِلْمِ التَّجْوِيْدِ : এ গ্রন্থের লেখক হলেন শায়খ মুহাম্মাদ আবদুর রহীম বদরুদ্দীন (র)।

১০. جَمَالُ الْقُرْاٰنِ : এ গ্রন্থের লেখক হলেন মাওলানা আশরাফ আলী থানভী (র)।

১১. دُرُوْسٌ فِىْ عِلْمِ التَّجْوِيْدِ : ইলমে তাজভীদ বিষয়ে প্রণীত এটি একটি উপকারী গ্রন্থ। এ গ্রন্থটির লেখক হলেন হাফেয ড. আবুল বারাকাত মুহাম্মাদ হিযবুল্লাহ। তিনি কুষ্টিয়া ইসলামী বিশ্ববিদ্যালয়ের 'আল কুরআন অ্যান্ড ইসলামিক স্টাডিজ' বিভাগের প্রাক্তন চেয়ারম্যান ও অধ্যাপক।

সমাপনী : ইলমে তাজভীদ এমন শাস্ত্র যা অধ্যয়ন করলে কতিপয় নিয়মকানুন ও পদ্ধতি জানার মাধ্যমে আল্লাহ তায়ালার বাণী আল কুরআনুল কারীম বিশুদ্ধরূপে তেলাওয়াত করা যায়। কারণ এতে কুরআন মাজীদ পাঠের পদ্ধতি নিয়ে আলোচনা করা হয়েছে। রাসূল (স)-এর যুগ থেকে হিজরী তৃতীয় শতাব্দী পর্যন্ত মুখে মুখে এর উৎপত্তি ও ক্রমবিকাশধারা চালু থাকে। এরপর চতুর্থ ও পঞ্চম শতাব্দীতে এ বিষয়ে কিছু গ্রন্থ রচিত হয়। পঞ্চম শতাব্দীর পরবর্তী যুগকে ইলমে তাজভীদের সোনালি যুগ বলা হয়।

(ب) اكتب اهمية تلاوة القران الكريم بالتجويدِ مستدلا من القران والسنة۔

[আল কুরআন ও সুন্নাহর দলীল দ্বারা তাজভীদসহ বিশুদ্ধভাবে আল কুরআনুল কারীম তেলাওয়াতের গুরুত্ব লেখ।]

উত্তর ।। **উপস্থাপনা :** আসমানি কিতাবসমূহের মধ্যে আল কুরআন সর্বশ্রেষ্ঠ। এটি সর্বকালের সকল মানুষের হেদায়াতের পথপ্রদর্শক এবং আধ্যাত্মিক ও নৈতিক প্রশিক্ষণের একমাত্র উৎস। মানবজাতির ইহকালীন শান্তি ও পরকালীন মুক্তির গ্যারান্টি এতে নিহিত। আল কুরআন একটি পরশপাথর। এর সংস্পর্শে আসলে মানুষ সোনার মানুষে পরিণত হয়। এজন্য কুরআন ও সুন্নাহতে তা তেলাওয়াতের প্রতি বিশেষ গুরুত্বারোপ করা হয়েছে। রাসূল (স) বলেন– اَلْمَاهِرُ بِالْقُرْاٰنِ مَعَ السَّفَرَةِ الْكِرَامِ الْبَرَرَةِ অর্থাৎ, আল কুরআনে দক্ষ ব্যক্তি সম্মানিত ও পুণ্যবান ফেরেশতাগণের সাথে থাকবে। কুরআন মাজীদ বিশুদ্ধরূপে তেলাওয়াতে অগণিত সাওয়াব রয়েছে। নিচে প্রশ্নালোকে তাজভীদসহ আল কুরআন তেলাওয়াতের গুরুত্ব সম্পর্কে আলোচনা করা হলো।

➲ اَهَمِّيَّةُ تِلَاوَةِ الْقُرْاٰنِ الْكَرِيْمِ بِالتَّجْوِيْدِ :

তাজভীদসহ আল কুরআনুল কারীম তেলাওয়াতের গুরুত্ব : আল কুরআন মহান আল্লাহর অমীয় বাণী, যা তিনি হজরত জিবরাঈল (আ)-এর মাধ্যমে নাযিল করেছেন। এটি মানবজাতির সংবিধান। এটা বিশুদ্ধরূপে তাজভীদ অনুযায়ী তেলাওয়াত করা ফরয। ইসলামের অন্যতম রোকন নামাজে তাজভীদসহ বিশুদ্ধরূপে কুরআন মাজীদ তেলাওয়াত করা ফরয। অন্যথা নামাজ শুদ্ধ হয় না। এজন্য মুমিনজীবনে তাজভীদসহ আল কুরআনুল কারীম তেলাওয়াতের গুরুত্ব অপরিসীম। আরবি প্রবাদে রয়েছে– كَلَامُ الْمُلُوْكِ مُلُوْكُ الْكَلَامِ; সুতরাং আল্লাহ তায়ালা যেমন রাজাধিরাজ ও মহামর্যাদাবান, তাঁর বাণীও তদ্রূপ মর্যাদাপূর্ণ। তাজভীদসহ এটি তেলাওয়াতের গুরুত্ব ও ফযিলত আল কুরআন ও হাদীস দ্বারা প্রমাণিত। আল্লাহ তায়ালা বলেন–

اِنَّ الَّذِيْنَ يَتْلُوْنَ كِتَابَ اللّٰهِ وَاَقَامُوا الصَّلٰوةَ وَاَنْفَقُوْا مِمَّا رَزَقْنَاهُمْ سِرًّا وَّعَلَانِيَةً يَّرْجُوْنَ تِجَارَةً لَّنْ تَبُوْرَ لِيُوَفِّيَهُمْ اُجُوْرَهُمْ وَيَزِيْدَهُمْ مِّنْ فَضْلِهٖ اِنَّهٗ غَفُوْرٌ شَكُوْرٌ۔ (فَاطِر : ٢٩ ـ ٣٠)

অর্থাৎ, নিশ্চয় যারা আল্লাহর কিতাব তেলাওয়াত করে, নামাজ আদায় করে এবং আমি যে রিজিক দিয়েছি তা হতে প্রকাশ্য ও গোপনে ব্যয় করে, তারা এমন ব্যবসায়ের আশা করে যাতে কখনো লোকসান হবে না। কারণ তিনি তাদেরকে তাদের প্রতিফল পূর্ণমাত্রায় প্রদান করবেন এবং নিজ অনুগ্রহে আরও বেশি দেবেন। তিনি অতি ক্ষমাশীল ও গুণগ্রাহী।

রাসূল (স) ইরশাদ করেন–

مَنْ قَرَأَ حَرْفًا مِنْ كِتَابِ اللّٰهِ فَلَهٗ بِهٖ حَسَنَةٌ وَالْحَسَنَةُ بِعَشْرِ اَمْثَالِهَا ـ لَا اَقُوْلُ الم حَرْفٌ وَلٰكِنْ اَلِفٌ حَرْفٌ وَلَامٌ حَرْفٌ وَمِيْمٌ حَرْفٌ۔ (تِرْمِذِىْ)

অর্থাৎ, যে ব্যক্তি কিতাবুল্লাহ থেকে একটি হরফ পাঠ করলে তার জন্য এর বিনিময়ে একটি সাওয়াব রয়েছে। আর এ সাওয়াব তার দশগুণ সাওয়াবের সমান। আমি বলছি না যে, الم একটি হরফ; বরং اَلِف একটি হরফ, لَام একটি হরফ এবং مِيْم একটি হরফ।

এছাড়া তাজভীদসহ আল কুরআনুল কারীম তেলাওয়াতের গুরুত্বের আরও কতিপয় দিক নিচে আলোচনা করা হলো–

১. **আল্লাহ তায়ালার নির্দেশ :** তাজভীদসহ কুরআন মাজীদ তেলাওয়াত করতে আল্লাহ তায়ালা নির্দেশ দিয়েছেন। আল্লাহ তায়ালা বলেন–
وَرَتِّلِ الْقُرْاٰنَ تَرْتِيْلًا ـ (اَلْمُزَمِّلُ : ٤)
অর্থাৎ, আপনি সুন্দর ও ধীরে ধীরে আল কুরআন তেলাওয়াত করুন। এখানে تَرْتِيْل শব্দের ব্যাখ্যায় হজরত আলী (রা) বলেন–
اَلتَّرْتِيْلُ هُوَ تَجْوِيْدُ الْحُرُوْفِ وَمَعْرِفَةُ الْوُقُوْفِ ـ

২. **অশুদ্ধ তেলাওয়াত করা গুনাহ :** তাজভীদের নিয়মকানুন অনুসরণ না করে কুরআন তেলাওয়াত করলে গুনাহ হয়। রাসূল (স) বলেন–
رُبَّ تَالٍ لِلْقُرْاٰنِ وَالْقُرْاٰنُ يَلْعَنُهٗ ـ
অর্থাৎ, আল কুরআনের এমন পাঠক আছে, কুরআন তাকে অভিশাপ দেয়।
আল্লামা শামসুদ্দীন আবুল খায়ের মুহাম্মাদ ইবনে জাযারী (র) বলেন– اَلْاَخْذُ بِالتَّجْوِيْدِ حَتْمٌ لَازِمٌ * مَنْ لَمْ يُجَوِّدِ الْقُرْاٰنَ اٰثِمٌ

৩. **সুন্দর ও সুললিত তেলাওয়াতের মাধ্যম :** তাজভীদ হলো এমন কতিপয় নিয়মকানুন জানার নাম, যা অনুসরণ করলে কুরআন মাজীদ শুদ্ধরূপে, সুন্দর উচ্চারণে, সুললিত কণ্ঠে তেলাওয়াত করা যায়। কুরআন মাজীদ সুন্দরভাবে তেলাওয়াতের প্রতি উদ্‌বুদ্ধ করে নবী কারীম (স) বলেন– مَنْ لَمْ يَتَغَنَّ بِالْقُرْاٰنِ فَلَيْسَ مِنَّا অর্থাৎ, যে সুন্দর স্বরে আল কুরআন তেলাওয়াত করে না, সে আমার দলভুক্ত নয়।

৪. **তাজভীদ শিক্ষা করা ফরয :** তাজভীদের গুরুত্বের অন্যতম দিক হলো, তা শিক্ষাগ্রহণ করা প্রতিটি মুসলমানের ওপর ফরযে কেফায়া। আর তাজভীদসহ কুরআন মাজীদ তেলাওয়াত করা প্রত্যেক মুসলিম নরনারীর ওপর ফরযে আইন। এজন্য সকল যুগের ইসলামী স্কলারগণ তাজভীদশাস্ত্রের প্রতি বিশেষ গুরুত্বারোপ করেছেন। সাধারণ মানুষকে তাঁরা তাজভীদসহ কুরআন মাজীদ শিক্ষা দিয়েছেন। অনেকে এ বিষয়ে গুরুত্বপূর্ণ গ্রন্থ রচনা করেছেন।

৫. **পুণ্য অর্জন হয় :** তাজভীদ অনুযায়ী কুরআন মাজীদ তেলাওয়াত করলে অনেক সাওয়াব অর্জন করা যায়। প্রতিটি হরফের বিনিময়ে আল্লাহ তায়ালা কমপক্ষে দশটি নেকি দান করেন। রাসূল (স) বলেন–
مَنْ قَرَأَ حَرْفًا مِنْ كِتَابِ اللّٰهِ فَلَهٗ بِهٖ حَسَنَةٌ وَالْحَسَنَةُ بِعَشْرِ اَمْثَالِهَا ـ لَا اَقُوْلُ الم حَرْفٌ وَلٰكِنْ اَلِفٌ حَرْفٌ وَلَامٌ حَرْفٌ وَمِيْمٌ حَرْفٌ ـ
অর্থাৎ, যে ব্যক্তি কিতাবুল্লাহ থেকে একটি হরফ পাঠ করল তার জন্য এর বিনিময়ে একটি সাওয়াব রয়েছে। আর এ সাওয়াব তার দশগুণ সাওয়াবের সমান। আমি বলছি না যে, الم একটি হরফ; বরং اَلِف একটি হরফ, لَام একটি হরফ এবং ميم একটি হরফ।

সমাপনী : আরবি বর্ণসমূহ সুন্দরস্বরে উচ্চরণ ও তার সিফাতসমূহ জানার নাম হলো তাজভীদ। তা শিক্ষাগ্রহণ করা ফরযে কেফায়া। আর সে অনুযায়ী কুরআন মাজীদ তেলাওয়াত করা ফরযে আইন। তাজভীদসহ সুললিত কণ্ঠে কুরআন মাজীদ তেলাওয়াত করলে প্রতিটি হরফের বিনিময়ে কমপক্ষে দশটি নেকি অর্জন করা যায়। এজন্য মুমিনজীবনে তাজভীদের গুরুত্ব অপরিসীম।

(ج) عرف المخرج ـ ثم اكتب مخارج الحروف العربية موضحا ـ
[মাখরাজ-এর পরিচয় দাও। অতঃপর আরবি হরফের মাখরাজসমূহ সুস্পষ্টভাবে লেখ।]

উত্তর ।। **উপস্থাপনা :** আল কুরআন মহান আল্লাহপ্রদত্ত সর্বশেষ ও সর্বশ্রেষ্ঠ আসমানি কিতাব। এটি পথহারা বিশ্বমানবতার সঠিক পথের দিশারি। মানবজাতির ইহকালীন কল্যাণ ও পরকালীন মুক্তি এতে নিহিত। এজন্য কুরআন মাজীদ বিশুদ্ধরূপে তেলাওয়াত করা ফরয। আল কুরআন ও সুন্নাহতে এ বিষয়ে বিশেষ গুরুত্বারোপ করা হয়েছে। এর ফলশ্রুতিতে ইলমুত তাজভীদ ও কেরাতশাস্ত্রের উদ্ভব হয়েছে। কুরআন মাজীদ বিশুদ্ধরূপে তেলাওয়াতের জন্য মনীষীগণ যেসব গুরুত্বপূর্ণ নিয়মকানুন প্রণয়ন করেছেন مَخَارِجُ الْحُرُوْفِ তন্মধ্যে অন্যতম। আরবি হরফের মাখরাজ ঠিক না হলে কুরআন মাজীদ তেলাওয়াতে লাহনে জলী তথা প্রকাশ্য ভুল হবে, যা দ্বারা নামাজ আদায় করলে নামাজ বিশুদ্ধ হবে না। এজন্য মাখরাজসংক্রান্ত নিয়মকানুনের জ্ঞানার্জন করা আবশ্যক। নিচে প্রশ্নালোকে মাখরাজসংক্রান্ত আলোচনা করা হলো।

➲ تَعْرِيْفُ الْمَخْرَجِ (مَخْرَج-এর পরিচয়) :

আভিধানিক অর্থ : مَخْرَج শব্দটি اِسْم ظَرْف-এর وَاحِد-এর সীগাহ। এর বহুবচন হলো– مَخَارِج; যা خرج মাদ্দাহ থেকে গঠিত। এর আভিধানিক অর্থ নিম্নরূপ–

১. শায়খ আবদুল ফাত্তাহ আল মারসাফী (র) বলেন– مَعْنَاهُ فِى اللُّغَةِ اِسْمٌ لِمَوْضَعِ خُرُوْجِ الْحَرْفِ اَوْ هُوَ عِبَارَةٌ عَنِ الْحَيْزِ الْمُوْلَدِ لِلْحَرْفِ অর্থাৎ, আভিধানিকভাবে এর অর্থ হচ্ছে– আরবি হরফ বের হওয়ার স্থান। অথবা তা হলো, হরফ উদ্‌গত হওয়ার বিশেষ স্থান।

২. শায়খ মুহাম্মাদ সাদেক কামহাভী (র) বলেন– مَعْنَى الْمَخْرَجِ لُغَةً مَحَلُّ الْخُرُوْجِ অর্থাৎ, মাখরাজের আভিধানিক অর্থ হলো– বের হওয়ার স্থান।

৩. مَوْضِعُ تَلَفُّظِ الْحَرْفِ তথা হরফ উচ্চারণের স্থান।

৪. مَنْشَأُ الْحَرْفِ তথা হরফের উৎসস্থল।

৫. مَكَانُ الظُّهُوْرِ لِلْحَرْفِ তথা হরফ প্রকাশ হওয়ার স্থান।

৬. مَصْدَرُ الْحَرْفِ তথা হরফের উৎপত্তিস্থল।

৭. ইংরেজিতে এর প্রতিশব্দ হলো– Place of origin.

পারিভাষিক সংজ্ঞা : مَخْرَج-এর পারিভাষিক সংজ্ঞা সম্পর্কে মনীষীগণের অভিমত নিম্নরূপ–

১. শায়খ আবদুল ফাত্তাহ আল মারসাফী (র) বলেন–
مَحَلُّ خُرُوْجِ الْحَرْفِ اَىْ ظُهُوْرِهِ الَّذِىْ يَنْقَطِعُ عِنْدَهٗ صَوْتُ النُّطْقِ بِهٖ فَيَتَمَيَّزُ بِهٖ عَنْ غَيْرِهٖ ـ
অর্থাৎ, মাখরাজ হলো, হরফ বের হওয়ার তথা প্রকাশ পাওয়ার স্থান, যে স্থানে হরফটির উচ্চারণের আওয়াজ শেষ হয়। ফলে তা অন্য হরফ থেকে আলাদা হয়ে যায়।

২. শায়খ মুহাম্মাদ সাদেক আল কামহাভী (র) বলেন– هُوَ مَحَلُّ خُرُوْجِ الْحَرْفِ وَتَمَيُّزُهٗ عَنْ غَيْرِهٖ অর্থাৎ, মাখরাজ হলো, হরফ বের হওয়া এবং তা অন্য হরফ থেকে আলাদা হওয়ার স্থান।

৩. اَلْمُعْجَمُ الْوَسِيْطُ গ্রন্থকার বলেন– هُوَ مَوْضِعُ خُرُوْجِ الْحَرْفِ وَظُهُوْرِهٖ وَتَمْيِيْزُهٗ مِنْ غَيْرِهٖ بِوَسَاطَةِ الصَّوْتِ অর্থাৎ, মাখরাজ হলো, আরবি হরফ উচ্চারণ, প্রকাশ এবং আওয়াজের মাধ্যমে অন্য হরফ থেকে আলাদা হওয়ার স্থান।

৪. فَيْضُ الْمَجِيْدِ গ্রন্থকার বলেন–
اَلْمَخْرَجُ هِىَ الْمَوَاضِعُ اَوِ الْاَمَاكِنُ اَوِ الْمَقَاطِعُ الَّتِىْ تَخْرُجُ مِنْهَا الْحُرُوْفُ وَالْمُرَادُ بِالْمَوَاضِعِ هِىَ الَّتِىْ يُوْضَعُ فِيْهَا الْحَرْفُ اَمَّا الْمَقَاطِعُ فَهِىَ الَّتِىْ يَنْتَهِىْ عِنْدَهَا النُّطْقُ بِالْحَرْفِ لِوَقْفٍ اَوْ غَيْرِهٖ۔

৫. مُعْجَمُ لُغَةِ الْفُقَهَاءِ গ্রন্থকার বলেন– مَخَارِجُ الْحُرُوْفِ مَوَاضِعُ خُرُوْجِ الْحُرُوْفِ الْهِجَائِيَّةِ مِنْ الْمّ وَظُهُوْرُهَا مُتَمَيِّزَةً
মোটকথা, আরবি হরফ উচ্চারণের স্থানকে মাখরাজ বলে।

➲ مَخَارِجُ الْحُرُوْفِ الْعَرَبِيَّةِ :

আরবি হরফের মাখরাজসমূহ : আরবি হরফ তথা বর্ণমালার সংখ্যা ২৯টি। তা মানুষের মুখের ৫টি বাগ্‌যন্ত্র ব্যবহারের মাধ্যমে উচ্চারণ করা হয়। আর এ ২৯টি হরফের মাখরাজ তথা উচ্চারণের স্থান হলো ১৭টি। এগুলোকে একত্রে مَخَارِجُ الْحُرُوْفِ الْعَرَبِيَّةِ তথা আরবি হরফ উচ্চারণের স্থান বলে। নিচে ২৯টি হরফের ১৭টি মাখরাজ উল্লেখ করা হলো–

১ম মাখরাজ : حَلْق ও মুখের جَوْف অর্থাৎ কণ্ঠনালি ও মুখের মধ্যকার শূন্যস্থান। এ মাখরাজ থেকে একটি অক্ষর উচ্চারিত হয়। যথা– আলিফ (ا)। এটা উচ্চারণ করার সময় মুখ ও হলকের কোনো অংশ অন্য কোনো অংশের সাথে সংযোগ হয় না। শুধু বাতাসের সাথে উচ্চারিত হয়।

২য় মাখরাজ : আকসায়ে হলক, অর্থাৎ কণ্ঠনালির মূল, যা বুকের দিকে আছে। এ মাখরাজ থেকে দুটি অক্ষর হামযা ও হায়ে হাওয়ায (ء - ه) উচ্চারিত হয়। যথা– اَهْ - اَءْ

৩য় মাখরাজ : আওসাতে হলক, অর্থাৎ কণ্ঠনালির মধ্যস্থল। এই মাখরাজ থেকে দুটি অক্ষর আইন ও হায়ে হুত্তি (ع - ح) উচ্চারিত হয়। যথা– اَحْ - اَعْ

৪র্থ মাখরাজ : আদনায়ে হলক, অর্থাৎ কণ্ঠনালির শেষ ভাগ। এ মাখরাজ হতে দুটি অক্ষর গাইন ও খা (غ - خ) উচ্চারিত হয়। যথা– اَخْ - اَغْ

৫ম মাখরাজ : আকসায়ে জবান, অর্থাৎ জিহ্বামূল ও সে বরাবর উপরের তালু। এ মাখরাজ হতে একটি অক্ষর উচ্চারিত হয়। কাফ (ق) যথা– اَقْ

৬ষ্ঠ মাখরাজ : জিহ্বার অর্ধাংশের মধ্যস্থল ও সে বরাবর উপরের তালু। এ মাখরাজ হতে একটি অক্ষর কাফ (ك) উচ্চারিত হয়। যথা– اَكْ

৭ম মাখরাজ : জিহ্বার ঠিক মধ্যস্থল ও উপরে মধ্য তালু। এ মাখরাজ হতে তিনটি অক্ষর ج - ش - ى উচ্চারিত হয়। যথা– اَجْ - اَشْ - اَىْ

৮ম মাখরাজ : জিহ্বার কিনারা ও উপরের আদরাস অর্থাৎ চোয়ালের দন্তপাটি বা দন্তমাড়ি। এ মাখরাজ হতে একটি অক্ষর ض উচ্চারিত হয়। যথা– اَضْ

৯ম মাখরাজ : জিহ্বার আদনা কিনারা, অর্থাৎ জিহ্বার অগ্রভাগের কিনারা ও রুবাইয়া, আনইয়াব, যাওয়াহেক নামক দন্তমাড়ি এবং উপরের তালু। এ মাখরাজ হতে একটি অক্ষর (ل) উচ্চারিত হয়। যথা– اَلْ

১০ম মাখরাজ : লামের মাখরাজের নিকটস্থ জিহ্বার আগা ও সে বরাবর উপরের ছানায়া উলিয়া নামক দন্তমাড়ি। এ মাখরাজ হতে একটি অক্ষর নূন ن উচ্চারিত হয়। যথা– اَنْ

১১শ মাখরাজ : জিহ্বার আগার পিঠ ও সে বরাবর উপরের ছানায়া উলিয়া নামক দন্তমাড়ি। এ মাখরাজ হতে একটি অক্ষর রা (ر) উচ্চারিত হয়। যথা– اَرْ

১২শ মাখরাজ : জিহ্বার আগা ও উপরের ছানায়া উলিয়া নামক দু'দাঁতের মূল। এ মাখরাজ হতে তিনটি অক্ষর ط - د - ت উচ্চারিত হয়। যথা– اَطْ - اَدْ - اَتْ

১৩শ মাখরাজ : জিহ্বার আগা ও নিচের ছানায়া সুফলা নামক দু'দাঁতের মূল অথবা আগা। এ মাখরাজ হতে তিনটি অক্ষর ص - س - ز উচ্চারিত হয়। যথা– اَصْ - اَسْ - اَزْ

১৪শ মাখরাজ : জিহ্বার আগা ও ছানায়া উলিয়া নামক দন্তের আগা। এ মাখরাজ হতে তিনটি অক্ষর ظ - ذ - ث উচ্চারিত হয়। যথা– اَظْ - اَذْ - اَثْ

১৫শ মাখরাজ : ছানায়া উলিয়া নামক দন্তের আগা ও নিচের ঠোঁটের উপরের ভাগের মধ্যস্থল। এ মাখরাজ হতে একটি অক্ষর ফা (ف) উচ্চারিত হয়। যথা– اف

১৬শ মাখরাজ : ঠোঁট। এ মাখরাজ হতে তিনটি অক্ষর ب - م - و উচ্চারিত হয়। যথা– اَبْ - اَمْ - اَوْ

১৭শ মাখরাজ : নাসিকামূল। এ মাখরাজ হতে ঐ নূন অক্ষর উচ্চারিত হয়ে থাকে, যে নূন অক্ষর ইখফা ও ইদগাম করার সময় তার আসল মাখরাজ ছেড়ে গুন্নাহর সাথে গোপন করে পড়তে হয়। যথা– اَنْتَ - مَنْ يَّشَاءُ

সমাপনী : মাখরাজ অর্থ বের হওয়ার স্থান। আরবি হরফসমূহ যেসব স্থান থেকে উচ্চারিত হয় সেসব স্থানকে মাখরাজ বলে। আরবি ২৯টি হরফ ১৭টি মাখরাজ থেকে উচ্চারিত হয়। তন্মধ্যে কোনো মাখরাজ থেকে একটি অক্ষর, কোনো মাখরাজ হতে দুটি অক্ষর আবার কোনো মাখরাজ হতে তিনটি অক্ষর পর্যন্ত উচ্চারিত হয়ে থাকে। তারতীলসহ কুরআন মাজীদ তেলাওয়াত করার জন্য মাখরাজসমূহ জানা আবশ্যক।

(د) اذكر احكام النون الساكنة والتنوين ممثلا۔

[নূন সাকিন ও তানভীনের বিধানসমূহ উদাহরণসহ উল্লেখ কর।]

উপস্থাপনা : কুরআন মাজীদ আল্লাহ তায়ালার শাশ্বত বাণী। এটি শুদ্ধরূপে তেলাওয়াত করা আবশ্যক। আল্লাহ তায়ালা বলেন– وَرَتِّلِ الْقُرْاٰنَ تَرْتِيْلًا ۔ (اَلْمُزَّمِّلُ : ٤); শুদ্ধভাবে কুরআন মাজীদ তেলাওয়াত করলে প্রতি হরফের বিনিময়ে দশটি করে নেকি পাওয়া যায়। আর অশুদ্ধভাবে তেলাওয়াত করলে স্বয়ং কুরআন মাজীদ তার পাঠককে অভিশাপ দেয়। তাজভীদশাস্ত্রবিদগণ কুরআন মাজীদ শুদ্ধভাবে তেলাওয়াতের জন্য কিছু নিয়মকানুন প্রণয়ন করেন। তন্মধ্যে নূন সাকিন ও তানভীনের বিধানসমূহ অন্যতম। নূন-এর উপর সাকিন হলে তাকে নূন সাকিন এবং দু'যবর, দু'যের ও দু'পেশকে তানভীন বলে। বিশুদ্ধরূপে কুরআন মাজীদ তেলাওয়াত করতে এগুলোর বিধানাবলি জানা থাকা আবশ্যক। নিচে প্রশ্নালোকে আলোচনা করা হলো।

➲ اَحْكَامُ النُّوْنِ السَّاكِنَةِ وَالتَّنْوِيْنِ :

নূন সাকিন ও তানভীনের বিধানসমূহ : নূন সাকিন ও তানভীনের বিধান সম্পর্কে তাজভীদশাস্ত্রবিদগণের দু'ধরনের অভিমত পাওয়া যায়। যথা–

ক. **শায়খ আহমাদ হেজাযীর অভিমত :** اَلْقَوْلُ السَّدِيْدُ فِىْ اَحْكَامِ التَّجْوِيْدِ প্রণেতা শায়খ আহমাদ হেজাযী আল ফকীহ (র) এবং اَلتَّمْهِيْدُ فِى عِلْمِ التَّجْوِيْدِ প্রণেতা শায়খ শামসুদ্দীন আবুল খায়ের মুহাম্মাদ ইবনে জাযারী (র)-এর মতে, নূন সাকিন ও তানভীনের বিধান পাঁচটি। তাঁরা বলেন–

اِعْلَمْ اَنَّ النُّوْنَ السَّاكِنَةَ وَالتَّنْوِيْنَ لَهَا خَمْسَةُ اَحْكَامٍ - وَهِىَ الْاِظْهَارُ وَالْاِخْفَاءُ وَالْاِدْغَامُ بِغُنَّةٍ وَالْاِدْغَامُ بِلَا غُنَّةٍ وَالْاِقْلَابُ -

অর্থাৎ, জেনে রাখ, নূন সাকিন ও তানভীনের বিধান পাঁচটি। তা হলো– ১. ইযহার, ২. ইখফা, ৩. ইদগামে বাগুন্নাহ, ৪. ইদগামে বেলাগুন্নাহ ও ৫. ইকলাব।

খ. **জমহুরের অভিমত :** জমহুর তাজভীদশাস্ত্রবিদ ও কারী ইমামগণের মতে, নূন সাকিন ও তানভীনের বিধান চার প্রকার। যথা– ১. اَلْاِظْهَارُ তথা স্পষ্ট করা। ২. اَلْاِدْغَامُ তথা মিলিত করা। ৩. اَلْاِقْلَابُ তথা পরিবর্তন করা এবং ৪. اَلْاِخْفَاءُ তথা গোপন করা।

নিচে উদাহরণসহ জমহুর ওলামায়ে কেরামের বর্ণিত চার প্রকার বিধান সম্পর্কে আলোচনা করা হলো–

➲ تَعْرِيْفُ الْاِظْهَارِ (اِظْهَار-এর পরিচয়) :

আভিধানিক অর্থ : اَلْاِظْهَارُ শব্দটি বাবে اِفْعَال-এর মাসদার, যা ظَهْرٌ মাদ্দাহ থেকে গঠিত। এর আভিধানিক অর্থ নিম্নরূপ–

১. اَلْبَيَانُ তথা প্রকাশ করা।
২. اَلْاِيْضَاحُ তথা স্পষ্ট করা।
৩. اَلْاِكْشَافُ তথা উন্মুক্ত করা।
৪. اَلْاِصْدَارُ তথা প্রকাশ করা।
৫. اَلنَّشْرَةُ তথা প্রচার করা।
৬. اَلْاِعْلَانُ তথা অবহিত করা।
৭. اَلْاِعْلَامُ তথা জানিয়ে দেওয়া।
৮. ইংরেজিতে এর প্রতিশব্দ হলো– To clear.

পারিভাষিক সংজ্ঞা : اِظْهَار-এর পারিভাষিক সংজ্ঞা সম্পর্কে মনীষীগণের অভিমত নিম্নরূপ–

১. اَلْقَوْلُ السَّدِيْدُ فِىْ اَحْكَامِ التَّجْوِيْدِ গ্রন্থপ্রণেতা বলেন– اَلْاِظْهَارُ اِصْطِلَاحًا اِخْرَاجُ كُلِّ حَرْفٍ مِنْ مَخْرَجِهٖ مِنْ غَيْرِ غُنَّةٍ অর্থাৎ, পরিভাষায় ইযহার হলো, প্রতিটি হরফকে গুন্নাহ ব্যতীত তার নিজস্ব মাখরাজ থেকে উচ্চারণ করা।

২. اَلْبُرْهَانُ فِىْ تَجْوِيْدِ الْقُرْاٰنِ গ্রন্থপ্রণেতা বলেন– هُوَ اِخْرَاجُ كُلِّ حَرْفٍ مِنْ مَخْرَجِهٖ مِنْ غَيْرِ غُنَّةٍ فِى الْحَرْفِ الْمُظْهَرِ অর্থাৎ, প্রতিটি হরফকে তার নিজস্ব মাখরাজ হতে স্পষ্ট হরফে গুন্নাহ ব্যতীত উচ্চারণ করা।

৩. هِدَايَةُ الْقَارِىْ اِلٰى تَجْوِيْدِ كَلَامِ الْبَارِىْ গ্রন্থপ্রণেতা বলেন–
وَمَنْ مُعَانِيْهِ فِى الْاِصْطِلَاحِ اِخْرَاجُ كُلِّ حَرْفٍ مِنْ مَخْرَجِهٖ مِنْ غَيْرِ غُنَّةٍ فِى الْحَرْفِ الْمُظْهَرِ -

৪. اَلنَّحْوُ الطَّوَالِعُ গ্রন্থপ্রণেতা আল্লামা মারগানী (র) বলেন– هُوَ فَصْلُ الْحَرْفِ الْاَوَّلِ مِنَ الثَّانِىْ مِنْ غَيْرِ سَكْتٍ عَلَيْهِ

৫. ড. এবিএম হিযবুল্লাহ (দা. বা.) বলেন–
هُوَ فَصْلُ النُّوْنِ السَّاكِنَةِ اَوِ التَّنْوِيْنِ مِنَ الْحَرْفِ الْمُجَاوِرِ لَهٗ مِنْ غَيْرِ غُنَّةٍ ظَاهِرَةٍ وَذٰلِكَ بِاِظْهَارِ النُّوْنِ وَتَحْقِيْقِهَا مِنْ مَخْرَجِهَا نُطْقًا وَاضِحًا -

৬. اَلْمُخْتَصَرُ الْمُفِيْدُ গ্রন্থপ্রণেতা বলেন– اِخْرَاجُ كُلِّ حَرْفٍ مِنْ مَخْرَجِهٖ مِنْ غَيْرِ غُنَّةٍ ظَاهِرَةٍ অর্থাৎ, প্রকাশ্য গুন্নাহ ব্যতীত প্রতিটি হরফকে স্বীয় মাখরাজ হতে উচ্চারণ করাকে ইযহার বলে।

ইযহারের হরফসমূহ : ইযহারের হরফ ৬টি। যথা– ء - ه - ع - ح - غ - خ

ইযহারের হুকুম : ইযহারের হুকুম হলো, নূন সাকিন ও তানভীনের পর ইযহারের কোনো হরফ আসলে ঐ নূন সাকিন ও তানভীনকে গুন্নাহ ব্যতীত স্পষ্ট করে পড়া ওয়াজিব। এ সম্পর্কে ড. এবিএম হিযবুল্লাহ (দা. বা.) বলেন–

اِذَا وَقَعَتِ النُّوْنُ السَّاكِنَةُ اَوِ التَّنْوِيْنَ قَبْلَ اَحَدِ هٰذِهِ الْاَحْرُفِ وَجَبَ الْاِظْهَارُ وَيُسَمّٰى اِظْهَارًا حَلَقِيًّا -

➲ اَمْثَالُ الْاِظْهَارِ :

ইযহারের উদাহরণ : ইযহারের উদাহরণ নিম্নরূপ–

ইযহারের হরফ	নূন সাকিনের সাথে	তানভীনের সাথে
১. اَلْهَمْزَةُ = ء	مَنْ اَعْطٰى - وَيَنْئَوْنَ -	كُفُوًا اَحَدٌ -
২. اَلْهَاءُ = ه	فَلَا تَنْهَرْ - اِنْ هُوَ -	سَلَامٌ هِىَ -
৩. اَلْعَيْنُ = ع	اَنْعَمْتَ - مَنْ عَمِلَ -	سَمِيْعٌ عَلِيْمٌ -
৪. اَلْحَاءُ = ح	وَانْحَرْ - مِنْ حَيْثُ -	عَطَاءً حِسَابًا -
৫. اَلْغَيْنُ = غ	فَسَيُنْغِضُوْنَ - وَمَا مِنْ غَائِبَةٍ -	اَجْرٌ غَيْرُ مَمْنُوْنٍ -
৬. اَلْخَاءُ = خ	وَالْمُنْخَنِقَةُ - مِنْ خَوْفٍ -	يَوْمَئِذٍ خَاشِعَةٍ -

➲ تَعْرِيْفُ الْاِدْغَامِ (اِدْغَام-এর পরিচয়) :

আভিধানিক অর্থ : اَلْاِدْغَامُ শব্দটি বাবে اِفْعَال-এর মাসদার, যা دَغْمٌ মাদ্দাহ ক্ষেত্রে গঠিত। এর আভিধানিক অর্থ নিম্নরূপ–

১. اِدْخَالُ الشَّيْءِ فِى الشَّيْءِ তথা একটা বস্তুকে অপর বস্তুর মধ্যে প্রবেশ করানো।

২. اِدْخَالُ الْحَرْفِ فِى الْحَرْفِ তথা এক হরফকে অপর হরফের মধ্যে প্রবেশ করানো।

৩. اَلضَّمُّ তথা মিলানো।

৪. اَلْاِلْتِقَاءُ তথা মিল করা।

৫. اَلْاِدْرَاجُ তথা প্রবেশ করানো।

৬. اِلْحَاقٌ তথা মিলিত করা।

৭. ইংরেজিতে এর প্রতিশব্দ হলো– To enter.

পারিভাষিক সংজ্ঞা : اِدْغَام-এর পারিভাষিক সংজ্ঞা সম্পর্কে মনীষীগণের অভিমত নিম্নরূপ–

১. اَلْقَوْلُ السَّدِيْدُ فِى اَحْكَامِ التَّجْوِيْدِ গ্রন্থপ্রণেতা বলেন–

اِدْخَالُ حَرْفٍ سَاكِنٍ فِىْ حَرْفٍ مُتَحَرِّكٍ بِحَيْثُ يَصِيْرَانِ حَرْفًا وَاحِدًا مُشَدَّدًا يَرْتَفِعُ اللِّسَانُ عَنْهُ اِرْتِفَاعَةً وَاحِدَةً۔

অর্থাৎ, ইদগাম হলো, সাকিনযুক্ত হরফকে হরকতযুক্ত হরফের সাথে এমনভাবে মিলানো যে উভয় হরফ তাশদীদযুক্ত এক হরফে পরিণত হয়ে যায়। জিহ্বা এ দুটি হরফকে একসাথে উচ্চারণ করে।

২. اَلْبُرْهَانُ فِىْ تَجْوِيْدِ الْقُرْاٰنِ গ্রন্থপ্রণেতা বলেন–

اِلْتِقَاءُ حَرْفٍ سَاكِنٍ بِمُتَحَرِّكٍ بِحَيْثُ يَصِيْرَانِ حَرْفًا وَاحِدًا مُشَدَّدًا يَرْتَفِعُ اللِّسَانُ عَنْهُمَا اِرْتِفَاعَةً وَاحِدَةً۔

৩. مُقَرَّرُ التَّجْوِيْدِ গ্রন্থপ্রণেতা বলেন– اِدْخَالُ حَرْفٍ سَاكِنٍ فِىْ حَرْفٍ مُتَحَرِّكٍ অর্থাৎ, সাকিনযুক্ত হরফকে হরকতযুক্ত হরফের সাথে মিলানোকে ইদগাম বলে।

৪. قَوَاعِدُ التَّجْوِيْدِ গ্রন্থপ্রণেতা বলেন– اِدْخَالُ الْحَرْفِ الْاَوَّلِ فِى الْحَرْفِ الثَّانِىْ

সারকথা, ইদগাম হলো, একটি হরফকে অন্য একটি হরফের সাথে মিলিয়ে উচ্চারণ করা। এক্ষেত্রে প্রথম হরফটি দ্বিতীয় হরফের মধ্যে এমনভাবে মিলিত হবে যাতে প্রথম হরফের মাখরাজ ও সিফাত বিলীন হয়ে দ্বিতীয় হরফের রূপ ধারণ করে এবং দ্বিতীয় হরফটি তাশদীদযুক্ত হবে।

ইদগামের হরফসমূহ : ইদগামের হরফ ছয়টি। যথা– ى - ر - م - ل - و - ن; একত্রে এগুলোকে يَرْمَلُوْنَ পড়া হয়।

ইদগামের প্রকারভেদ : ইদগাম প্রধানত দু'প্রকার। যথা–

১. اِدْغَامٌ بِغُنَّةٍ তথা গুন্নাহসহ ইদগাম।

২. اِدْغَامٌ بِلَا غُنَّةٍ তথা গুন্নাহ ব্যতীত ইদগাম।

এতদুভয়ের বর্ণনা নিম্নরূপ–

১. **اِدْغَامٌ بِغُنَّةٍ তথা গুন্নাহসহ ইদগাম :** ইদগামে বাগুন্নাহ-এর হরফ চারটি। যথা– ى - ن - م - و; একত্রে এগুলোকে يَنْمُوْ পড়া হয়। নূন সাকিন ও তানভীনের পর ইদগামে বাগুন্নাহর চারটি হরফের কোনো একটি হরফ আসলে ঐ নূন সাকিন ও তানভীনকে তার পরবর্তী হরফের সাথে গুন্নাহসহ মিলিয়ে পড়াকে اِدْغَامٌ بِغُنَّةٍ বলে।

➲ اَمْثَالُ الْاِدْغَامِ بِغُنَّةٍ :

ইদগামে বাগুন্নাহর উদাহরণ : ইদগামে বাগুন্নাহর উদাহরণ নিম্নরূপ–

ইদগামের হরফ	নূন সাকিনের সাথে	তানভীনের সাথে
ى	وَمَنْ يَّعْمَلْ۔	وُجُوْهٌ يَّوْمَئِذٍ۔
ن	فَذَكِّرْ اِنْ نَّفَعَتِ الذِّكْرٰى۔	يَوْمَئِذٍ نَّاعِمَةٍ۔
م	خُلِقَ مِنْ مَّاءٍ دَافِقٍ۔	فِىْ كِتَابٍ مُّبِيْنٍ۔
و	مِنْ وَّلِىٍّ۔	هُدًى وَّرَحْمَةً لِّلْمُحْسِنِيْنَ۔

২. **اِدْغَامٌ بِلَا غُنَّةٍ তথা গুন্নাহ ব্যতীত ইদগাম :** ইদগামে বেলাগুন্নাহ-এর হরফ দুটি। যথা– ر ও ل; নূন সাকিন ও তানভীনের পর ر ও ل-এর কোনো একটি হরফ আসলে ঐ নূন সাকিন ও তানভীনকে নিজ মাখরাজ ও সিফাত বিলীন করে গুন্নাহ ব্যতীত মিলিয়ে পড়াকে اِدْغَامٌ بِلَا غُنَّةٍ বলে।

اَمْثَالُ الْاِدْغَامِ بِلَا غُنَّةٍ :

ইদগামে বেলাগুন্নাহর উদাহরণ : ইদগামে বেলাগুন্নাহর উদাহরণ নিম্নরূপ–

ইদগামের হরফ	নূন সাকিনের সাথে	তানভীনের সাথে
ر	اَنْ رَّاٰهُ اسْتَغْنٰى۔	فَهُوَ فِىْ عِيْشَةٍ رَّاضِيَةٍ۔
ل	وَلٰكِنْ لَّا يَشْعُرُوْنَ۔	هُدًى لِّلْمُتَّقِيْنَ۔

➲ تَعْرِيْفُ الْاِقْلَابِ (اِقْلَاب-এর পরিচয়) :

আভিধানিক অর্থ : اِقْلَاب শব্দটি বাবে اِفْعَال-এর মাসদার, যা قَلْبٌ মাদ্দাহ থেকে গঠিত। এর আভিধানিক অর্থ নিম্নরূপ–

১. اَلتَّبْدِيْلُ তথা বদল করা।
২. تَحْوِيْلُ الشَّيْءِ عَنْ وَجْهِهٖ তথা কোনো বস্তুর রূপ পরিবর্তন করা।
৩. اَلتَّغْيِيْرُ তথা পরিবর্তন করা।
৪. اَلتَّصْرِيْفُ তথা রূপান্তর করা।
৫. اَلتَّحْرِيْفُ তথা রূপ পরিবর্তন করা।
৬. ইংরেজিতে এর প্রতিশব্দ হলো– To change, To reverse ইত্যাদি।

পারিভাষিক সংজ্ঞা : اِقْلَاب-এর পারিভাষিক সংজ্ঞা সম্পর্কে মনীষীগণের অভিমত নিম্নরূপ–

১. اَلْقَوْلُ السَّدِيْدُ فِىْ اَحْكَامِ التَّجْوِيْدِ গ্রন্থপ্রণেতা বলেন–
اَلْاِقْلَابُ اِصْطِلَاحًا قَلْبُ النُّوْنِ السَّاكِنَةِ اَوِ التَّنْوِيْنِ مِيْمًا مُخَفَّاةً فِى اللَّفْظِ لَا فِى الْخَطِّ حَالَةَ دُخُوْلِهَا عَلَى الْبَاءِ مَعَ مُرَاعَاةِ الْغُنَّةِ فِيْهِمَا۔
অর্থাৎ, পরিভাষায় ইকলাব হলো, নূন সাকিন অথবা তানভীন ইকলাবের হরফ باء-এর সাথে মিলিত হওয়া অবস্থায় তাকে অস্পষ্ট একটি মীম দ্বারা উভয়ের মাঝে গুন্নাহর প্রতি লক্ষ রাখাসহ উচ্চারণের ক্ষেত্রে পরিবর্তন করা। এটা লেখার ক্ষেত্রে নয়।

২. اَلْبُرْهَانُ فِىْ تَجْوِيْدِ الْقُرْاٰنِ গ্রন্থপ্রণেতা বলেন–
جَعْلُ حَرْفٍ مَكَانَ اٰخَرَ اَىْ قَلْبُ النُّوْنِ السَّاكِنَةِ وَالتَّنْوِيْنِ مِيْمًا قَبْلَ الْبَاءِ مَعَ مُرَاعَاةِ الْغُنَّةِ وَالْاِخْفَاءِ۔
অর্থাৎ, গুন্নাহ ও ইখফার প্রতি লক্ষ রাখাসহ নূন সাকিন ও তানভীনকে بَاء-এর পূর্বে ছোট একটি মীম দ্বারা পরিবর্তন করাকে ইকলাব বলে।

৩. هِدَايَةُ الْقَارِىْ اِلٰى تَجْوِيْدِ كَلَامِ الْبَارِىْ গ্রন্থপ্রণেতা বলেন–
اَلْاِقْلَابُ جَعْلُ حَرْفٍ مَكَانَ اٰخَرَ مَعَ مُرَاعَاةِ الْغُنَّةِ وَالْاِخْفَاءِ فِى الْحَرْفِ الْمَقْلُوْبِ۔

৪. فَيْضُ الْمَجِيْدِ গ্রন্থকার বলেন– اَلْاِقْلَابُ جَعْلُ حَرْفٍ مَكَانَ اٰخَرَ مَعَ مُرَاعَاةِ الْغُنَّةِ وَالْاِخْفَاءِ

৫. اَلرَّائِدُ গ্রন্থপ্রণেতা বলেন– اَلْاِقْلَابُ قَلْبُ النُّوْنِ السَّاكِنَةِ اَوِ التَّنْوِيْنِ مِيْمًا مُخَفَّاةً فِى اللَّفْظِ لَا فِى الْخَطِّ مَعَ بَقَاءِ الْغُنَّةِ

ইকলাবের হরফ : ইকলাবের হরফ একটি। যথা– ب

ড. এবিএম হিযবুল্লাহ (দা. বা.) বলেন– لَهٗ حَرْفٌ وَاحِدٌ وَهُوَ الْبَاءُ

ইকলাবের হুকুম : নূন সাকিন ও তানভীনের পর ইকলাবের হরফ ب আসলে ঐ নূন সাকিন ও তানভীনকে ছোট একটি م দ্বারা পরিবর্তন করে গুন্নাহসহ পাঠ করতে হবে। এ মীমকে মীমে কুতনী বলে। এ সময় এক আলিফ পরিমাণ দীর্ঘ গুন্নাহ করতে হবে।

➲ اَمْثَالُ الْاِقْلَابِ :

ইকলাবের উদাহরণ : ইকলাবের উদাহরণ নিম্নরূপ–

ইকলাবের হরফ	নূন সাকিনের সাথে	তানভীনের সাথে
ب	اَنْبِئُوْنِى۔ مَنْۢ بَخِلَ۔	وَاَنْتَ حِلٌّۢ بِهٰذَا الْبَلَدِ۔ لَنَسْفَعًاۢ بِالنَّاصِيَةِ۔

➲ تَعْرِيْفُ الْاِخْفَاءِ (اِخْفَاء-এর পরিচয়) :

আভিধানিক অর্থ : اَلْاِخْفَاءُ শব্দটি বাবে اِفْعَال-এর মাসদার, যা خَفْىٌ মাদ্দাহ থেকে গঠিত। এর আভিধানিক অর্থ নিম্নরূপ–

১. اَلْاِسْتَارُ তথা গোপন করা।
২. اَلسَّتْرُ তথা লুকানো।
৩. اَلْكَتَمُ তথা গোপন করা।
৪. اَلْاِدْلَاسُ তথা গোপন করা।
৫. اَلسِّرُّ তথা অপ্রকাশ্য।
৬. اَلْاِضْمَارُ তথা প্রকাশ না করা।
৭. اَلْاِبْهَامُ তথা অস্পষ্ট করা।
৮. ইংরেজিতে এর প্রতিশব্দ হলো– To hide, To cover up ইত্যাদি।

পারিভাষিক সংজ্ঞা : اِخْفَاء-এর পারিভাষিক সংজ্ঞা সম্পর্কে মনীষীগণের অভিমত নিম্নরূপ–

১. اَلْقَوْلُ السَّدِيْدُ فِىْ اَحْكَامِ التَّجْوِيْدِ গ্রন্থপ্রণেতা বলেন–
اَلْاِخْفَاءُ اِصْطِلَاحًا اَلنُّطْقُ بِحَرْفٍ سَاكِنٍ بِصِفَةٍ بَيْنَ الْاِظْهَارِ وَالْاِدْغَامِ خَالٍ عَنِ التَّشْدِيْدِ مَعَ بَقَاءِ الْغُنَّةِ فِيْهِ۔
অর্থাৎ, পরিভাষায় ইখফা হলো, তাশদীদমুক্ত কোনো সাকিনযুক্ত হরফকে ইযহার ও ইদগামের মাঝামাঝি সিফাতে গুন্নাহসহ উচ্চারণ করা।

২. اَلْبُرْهَانُ فِىْ تَجْوِيْدِ الْقُرْاٰنِ গ্রন্থপ্রণেতা বলেন–
اَلنُّطْقُ بِالْحَرْفِ بِصِفَةٍ بَيْنَ الْاِظْهَارِ وَالْاِدْغَامِ عَارٍ عَنِ التَّشْدِيْدِ مَعَ بَقَاءِ الْغُنَّةِ فِىْ الْحَرْفِ الْاَوَّلِ۔
অর্থাৎ, তাশদীদমুক্ত কোনো হরফকে ইযহার ও ইদগামের মাঝামাঝি সিফাতে প্রথম হরফে গুন্নাহসহ উচ্চারণ করাকে ইখফা বলে।

৩. قَوَاعِدُ التَّجْوِيْدِ গ্রন্থপ্রণেতা বলেন–
هُوَ اِخْفَاءُ الْحَرْفِ الْاَوَّلِ فِىْ الْحَرْفِ الثَّانِىْ مَعَ بَقَاءِ صِفَةِ الْغُنَّةِ وَهُوَ حَالَةٌ بَيْنَ الْاِظْهَارِ وَالْاِدْغَامِ۔

৪. مُقَرَّرُ التَّجْوِيْدِ গ্রন্থপ্রণেতা বলেন–
اَلْاِخْفَاءُ هُوَ حَالَةٌ مُتَوَسِّطَةٌ بَيْنَ الْاِظْهَارِ وَالْاِدْغَامِ خَالٍ عَنِ التَّشْدِيْدِ مَعَ بَقَاءِ الْغُنَّةِ فِىْ النُّوْنِ وَالتَّنْوِيْنِ۔

৫. اَلْمُخْتَصَرُ الْمُفِيْدُ গ্রন্থপ্রণেতা বলেন–
هُوَ النُّطْقُ بِحَرْفٍ سَاكِنٍ عَارٍ مِنَ التَّشْدِيْدِ عَلٰى صِفَةِ الْاِظْهَارِ وَالْاِدْغَامِ مَعَ بَقَاءِ الْغُنَّةِ فِىْ الْحَرْفِ الْاَوَّلِ۔

সারকথা, ইখফা বলতে বোঝায়, নূন সাকিন ও তানভীনকে এমনভাবে গোপন করে পাঠ করা যাতে তা ইযহার ও ইদগামের মাঝামাঝি উচ্চারিত হয়।

ইখফার হরফ : আরবি ২৯টি হরফের মধ্যে ইখফার হরফ হলো পনেরোটি। যথা– ت - ث - ج - د - ذ - ز - س - ش - ص - ض - ط - ظ - ف - ق - ك

ইখফার হুকুম : ইখফার হুকুম হলো, নূন সাকিন ও তানভীনের পর ইখফার পনেরোটি হরফ থেকে যে-কোনো একটি হরফ আসলে ঐ নূন সাকিন ও তানভীনকে গুন্নাহসহ গোপন করে পড়তে হবে। যাতে তা ইযহার ও ইদগাম উচ্চারণের মাঝমাঝি সিফাতে উচ্চারিত হয়।

اَمْثَالُ الْاِخْفَاءِ :

ইখফার উদাহরণ : ইখফার উদাহরণ নিম্নরূপ–

ইখফার হরফ	নূন সাকিনের সাথে	তানভীনের সাথে
ت	كُنْتُمْ - وَاِنْ تُبْتُمْ -	جَنَّاتٍ تَجْرِىْ -
ث	هَبَاءً مَّنْثُوْرًا - اَنْ ثَبَّتْنٰكَ -	اَزْوَاجًا ثَلَاثَةً -
ج	فَاَنْجَيْنٰهُ - مَنْ جَاءَ -	قَوْمًا جَبَّارِيْنَ -
د	وَعِنْدَهٗ - مَنْ دَخَلَهٗ -	قِنْوَانٍ دَانِيَةٍ -
ذ	لِيُنْذِرَ - مِنْ ذَكَرٍ وَّاُنْثٰى -	اِلٰى ظِلٍّ ذِىْ ثَلٰثِ شُعَبٍ -
ز	اَنْزَلْنٰهُ - مَنْ زَكّٰهَا -	نَفْسًا زَكِيَّةً -
س	مَا نَنْسَخْ - مِنْ سَيِّاٰتِكُمْ -	وَرَجُلًا سَلَمًا لِّرَجُلٍ -
ش	اَنْشَاَ جَنَّاتٍ - فَمَنْ شَاءَ فَلْيُؤْمِنْ -	عَبْدًا شَكُوْرًا -
ص	اِنْ تَنْصُرُوا اللّٰهَ -	بِرِيْحٍ صَرْصَرٍ -
ض	وَطُلْحٍ مَّنْضُوْدٍ - مِنْ ضُعْفٍ -	وَكُلًّا ضَرَبْنَا -
ط	وَمَا يَنْطِقُ - مِنْ طِيْنٍ -	صَعِيْدًا طَيِّبًا -
ظ	فَانْظُرُوْا - اِنْ ظَنَّا -	ظِلًّا ظَلِيْلًا -
ف	اَنْفِقُوْا - فَاِنْ فَاءَتْ -	خَالِدًا فِيْهَا -
ق	يُنْقِذُوْنَ - مِنْ قَبْلُ -	سَمِيْعٌ قَرِيْبٌ -
ك	اَنْكَالًا - مَنْ كَانَ -	قَوْلًا كَرِيْمًا -

সমাপনী : মহাগ্রন্থ আল কুরআনুল কারীম বিশুদ্ধরূপে তেলাওয়াত করলে তা পাঠকের পক্ষে কেয়ামত দিবসে সুপারিশ করবে। এজন্য ইলমুত তাজভীদের বিশেষজ্ঞ ইমামগণ সুনির্দিষ্ট কিছু নীতিমালা প্রণয়ন করেছেন। নূন সাকিন ও তানভীনের বিধান তন্মধ্যে অত্যন্ত গুরুত্বপূর্ণ। এ নীতিমালা অনুসরণের মাধ্যমে কুরআন মাজীদ সুন্দর উচ্চারণে পড়া যায়। সুতরাং এর বিধানসমূহ সম্পর্কে যথাযথ জ্ঞানার্জন করা জরুরি।

■ السؤال (٢) : اجب عن اثنين من الاسئلة التالية بالاختصار : ٥ × ٢ = ١٠

(الف) عرف البسملة - هل هى جزء من السور ام لا؟ بين بالايضاح -

[اَلْبَسْمَلَةُ-এর পরিচয় দাও। তা কি সূরাসমূহের অংশ না কি অংশ নয়? স্পষ্টভাবে বর্ণনা কর।]

উত্তর ।। **উপস্থাপনা :** আল কুরআন তেলাওয়াত করা সর্বোত্তম নফল ইবাদত। এজন্য কুরআন মাজীদ তেলাওয়াত করার পূর্বে শয়তানের প্রবঞ্চনা থেকে আল্লাহ তায়ালার নিকট আশ্রয়প্রার্থনার পর তাঁর নাম নিয়ে কুরআন মাজীদের তেলাওয়াত আরম্ভ করা জরুরি। এটাকে সংক্ষেপে اَلْبَسْمَلَةُ বলে। নিচে প্রশ্নালোকে اَلْبَسْمَلَةُ-এর পরিচয় এবং তা আল কুরআনের অংশ হওয়া সম্পর্কে আলোচনা করা হলো।

اَلْبَسْمَلَةُ-এর পরিচয় : اَلْبَسْمَلَةُ-এর পরিচয় নিম্নরূপ–

আভিধানিক অর্থ : اَلْبَسْمَلَةُ শব্দটি বাবে فَعْلَلَةٌ-এর মাসদার। এর শাব্দিক অর্থ হলো– قِرَاءَةُ بِسْمِ اللّٰهِ তথা বিসমিল্লাহ পড়া। এটি بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ-এর সংক্ষিপ্ত রূপ।

اَلتَّمْهِيْدُ فِىْ عِلْمِ التَّجْوِيْدِ গ্রন্থপ্রণেতা বলেন, اَلْبَسْمَلَةُ হলো اِسْم مُرَكَّبْ; যেমন বলা হয়– بَسْمَلَ الرَّجُلُ بَسْمَلَةً فَهُوَ مُبَسْمِلٌ; অনুরূপভাবে কেউ যদি لَا حَوْلَ وَلَا قُوَّةَ اِلَّا بِاللّٰهِ পড়ে তখন বলা হয়– حَوْقَلَ الرَّجُلُ; আর যখন حَىَّ عَلَى الصَّلَاةِ পড়ে তখন বলা হয়– حَيْعَلَ; بَسْمَلَة-কে সংক্ষেপে تَسْمِيَة বলা হয়।

পারিভাষিক সংজ্ঞা : بَسْمَلَة-এর পারিভাষিক সংজ্ঞা সম্পর্কে মনীষীগণের অভিমত নিম্নরূপ–

১. শায়খ আবুল খায়ের মুহাম্মাদ ইবনে জাযারী (র) বলেন– اَلْبَسْمَلَةُ عِبَارَةٌ عَنْ قَوْلِ الْقَارِئِ بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ অর্থাৎ, পাঠক بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ পড়াকে بَسْمَلَة বলে।

২. কেউ কেউ বলেন– هُوَ كَلِمَاتٌ مُرَكَّبَةٌ مَنْحُوْتَةٌ مِنْ بَسْمَلَ অর্থাৎ, بَسْمَلَة হলো, بَسْمَلَ থেকে উদ্‌গত কতগুলো যৌগিক শব্দের সমষ্টি।

بَسْمَلَة আল কুরআনের আয়াত কি না : بَسْمَلَة তথা বিসমিল্লাহ অবশ্যই আল কুরআনের আয়াত। এতে কোনো সন্দেহ ও মতভেদ নেই। এ ব্যাপারে সকল ফকীহ ও ইমাম একমত। 'বিসমিল্লাহ' আল কুরআনের আয়াত হওয়ার দলীল হলো সূরা আন নামল-এর ত্রিশ নং আয়াত। আল্লাহ তায়ালা বলেন– اِنَّهٗ مِنْ سُلَيْمَانَ وَاِنَّهٗ بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ

সমাপনী : কুরআন মাজীদ সর্বশ্রেষ্ঠ আসমানি কিতাব। এটি তেলাওয়াতের শুরুতে আউযুবিল্লাহ ও বিসমিল্লাহ পড়তে হয়। সংক্ষেপে بِسْمِ اللّٰه পড়াকে বলা হয় اَلْبَسْمَلَةُ; জমহুর কারীর মতে, اَلْبَسْمَلَةُ পড়া সুন্নাত।

(ب) ما معنى اللحن وكم قسما له؟ بين-

[اَللَّحْنُ অর্থ কী? তা কত প্রকার? বর্ণনা কর।]

উপস্থাপনা : কুরআন মাজীদ তেলাওয়াত করা সর্বোত্তম নফল ইবাদত। এটি তাজভীদসহ বিশুদ্ধরূপে তেলাওয়াত করা ফরয। কুরআন মাজীদ তেলাওয়াতে ভুল করাকে তাজভীদের পরিভাষায় 'লাহন' বলে। লাহন দু'প্রকার। লাহনে জলী তথা প্রকাশ্য ভুল এবং লাহনে খফী তথা অপ্রকাশ্য ভুল। নিচে প্রশ্নালোকে লাহন-এর পরিচয় ও প্রকারভেদ বর্ণনা করা হলো।

معنى اللحن لغة :

لَحْن-এর আভিধানিক অর্থ : اَللَّحْنُ শব্দটি مَصْدَر اِسْم; যা বাবে فَتَحَ থেকে ব্যবহার হয়। এটি একবচন, বহুবচনে اَلْحَانٌ ও لُحُوْنٌ; এর আভিধানিক অর্থ নিম্নরূপ–

১. اَلْخَطَاءُ তথা ভুল।

২. اَلسَّهْوُ তথা ত্রুটি।

৩. اَلْخَطَاءُ فِىْ النُّطْقِ তথা উচ্চারণে ভুল করা।

معنى اللحن اصطلاحا :

لَحْن-এর পারিভাষিক সংজ্ঞা : لَحْن-এর পারিভাষিক সংজ্ঞা সম্পর্কে মনীষীগণের অভিমত নিম্নরূপ–

১. শায়খ মুহাম্মাদ ইবনে জাযারী (র) বলেন– اِنَّ اللَّحْنَ خَلَلٌ يُطْرَأُ عَلَى الْاَلْفَاظِ اَىِ الْخَطَأُ فِىْ الْقِرَاءَةِ অর্থাৎ, লাহন এমন ত্রুটি, যা শব্দে দেখা দেয় অর্থাৎ কেরাতের ত্রুটিকে লাহন বলে।

২. শায়খ আবদুল ফাত্তাহ আল মারসাফী (র) বলেন– اَللَّحْنُ هُوَ الْخَطَاءُ وَالْمَيْلُ عَنِ الصَّوَابِ فِىْ الْقِرَاءَةِ অর্থাৎ, কেরাতের বিশুদ্ধতা থেকে বিচ্যুতি ও ভুল করাকে লাহন বলে।

৩. اَلْمُنْجِدُ অভিধানপ্রণেতা বলেন– اَللَّحْنُ هُوَ مُخَالَفَةُ قَوَاعِدِ الْقِرَاءَةِ الصَحِيْحةِ وَالْاِعْرَابِ وَالْبِنَاءِ অর্থাৎ, লাহন হলো, সহীহ কেরাত, ইরাব ও বাক্যগঠনের নিয়মকানুনের বিপরীত হওয়া।

মোটকথা, তাজভীদের নিয়মপদ্ধতির বিপরীত কুরআন মাজীদ তেলাওয়াত করাকে লাহন বলে।

أقسام اللحن :

লাহনের প্রকারভেদ : ড. এবিএম হিযবুল্লাহ (দা. বা.) বলেন– لَهُ نَوْعَانِ : لَحْنٌ جَلِىٌّ وَلَحْنٌ خَفِىٌّ অর্থাৎ, লাহন দু'প্রকার। যথা–

১. اَللَّحْنُ الْجَلِىُّ : اَللَّحْنُ الْجَلِىُّ শব্দটি مُرَكَّبْ تَوْصِيْفِىّ তথা গুণবাচক যৌগিক শব্দ, যা اَللَّحْنُ মাওসুফ ও اَلْجَلِىُّ সিফাত দ্বারা গঠিত। اَللَّحْنُ শব্দের অর্থ– ভুল। আর اَلْجَلِىُّ শব্দের অর্থ– প্রকাশ্য, স্পষ্ট। সুতরাং اَللَّحْنُ اَلْجَلِىُّ শব্দের অর্থ হবে– প্রকাশ্য ভুল, স্পষ্ট ভুল।

পরিভাষায়, لَحْنُ جَلِىٌّ-এর পারিভাষিক সংজ্ঞা সম্পর্কে শায়খ আবদুল ফাত্তাহ আল মারসাফী (র) বলেন–

فَالْجَلِىُّ هُوَ خَلَلٌ يُطْرَأُ عَلَى الْاَلْفَاظِ فَيَخِلُّ بِعُرْفِ الْقِرَاءَةِ سَوَاءٌ اَخَلَّ بِالْمَعْنٰى اَمْ لَمْ يَخِلَّ-

অর্থাৎ, লাহনে জলী হলো এমন ত্রুটি, যা শব্দের উচ্চারণে সৃষ্টি হয়। অতঃপর তা কেরাতের মধ্যে ত্রুটির সৃষ্টি করে। চাই এ ত্রুটি অর্থকে ত্রুটিপূর্ণ করুক অথবা না করুক।

মোটকথা, ইলমুত তাজভীদের বিপরীত মারাত্মক ও প্রকাশ্য ভুলকে লাহনে জলী বলে।

২. اَللَّحْنُ الْخَفِىُّ : اَللَّحْنُ الْخَفِىُّ শব্দটি مُرَكَّبْ تَوْصِيْفِىّ; যা اَللَّحْنُ মাওসুফ ও اَلْخَفِىُّ সিফাত দ্বারা গঠিত। اَللَّحْنُ শব্দের অর্থ– ভুল, ত্রুটি। আর اَلْخَفِىُّ শব্দের অর্থ– অস্পষ্ট, অপ্রকাশ্য। সুতরাং اَللَّحْنُ الْخَفِىُّ-এর অর্থ হলো– অপ্রকাশ্য ভুল, অস্পষ্ট ত্রুটি।

পরিভাষায়, لَحْن خَفِىّ-এর পারিভাষিক সংজ্ঞা সম্পর্কে শায়খ আবদুল ফাত্তাহ আল মারসাফী (র) বলেন– وَالْخَفِىُّ هُوَ خَلَلٌ يُطْرَأُ عَلَى الْاَلْفَاظِ فَيَخِلُّ بِالْعُرْفِ دُوْنَ الْمَعْنٰى। অর্থাৎ, লাহনে খফী হলো এমন ত্রুটি, যা শব্দের মধ্যে দেখা দেয়। অতঃপর তা অর্থের বিকৃতি না ঘটিয়ে শুধু প্রচলিত বিশুদ্ধ কেরাতের মধ্যে ত্রুটি সৃষ্টি করে।

মোটকথা, ইলমুত তাজভীদের পরিপন্থি সূক্ষ্ম ও অপ্রকাশ্য ভুলকে লাহনে খফী বলে।

সমাপনী : তাজভীদের নিয়মকানুন পরিপন্থি কুরআন মাজীদ তেলাওয়াত করাকে লাহন বলে। এটা প্রকাশ্য ও অপ্রকাশ্য উভয় ধরনের হতে পারে। প্রকাশ্য ভুলকে লাহনে জলী বলে। এটা সকলের ঐকমত্যে হারাম। আর অপ্রকাশ্য ভুলকে লাহনে খফী বলে। এর কারণে অর্থের বিকৃতি না ঘটলেও শব্দের সৌন্দর্য নষ্ট হয়। তাই এটাও নিষিদ্ধ।

(ج) اكتب احكام الميم الساكنة۔

[মীম সাকিনের হুকুমসমূহ লেখ।]

উত্তর ।। **উপস্থাপনা :** ইলমুত তাজভীদের কারীগণ বিশুদ্ধরূপে কুরআন মাজীদ তেলাওয়াতের নিমিত্ত নির্দিষ্ট কিছু নীতিমালা প্রণয়ন করেছেন। তন্মধ্যে মীম সাকিনের বিধানসমূহ অন্যতম। নিচে প্রশ্নালোকে মীম সাকিনের বিধানসমূহ বর্ণনা করা হলো।

মীম সাকিনের আহকাম : সকল কারী ও তাজভীদশাস্ত্রবিদের ঐকমত্যে মীম সাকিনের আহকাম তিন প্রকার। যথা–

ক. اَلْاِخْفَاءُ الشَّفَوِىُّ তথা মৌখিক ইখফা।

খ. اَلْاِدْغَامُ الصَّغِيْرُ তথা ছোট ইদগাম।

গ. اَلْاِظْهَارُ الشَّفَوِىُّ তথা মৌখিক ইযহার।

এ সম্পর্কে اَلتُّحْفَةُ গ্রন্থকার আল্লামা জামযুরী (র) বলেন–

اَحْكَامُهَا ثَلَاثَةٌ لِمَنْ ضَبَطَ * اِخْفَاءٌ اِدْغَامٌ وَاِظْهَارٌ فَقَطْ

মীম সাকিনের এ তিন প্রকার বিধানের আলোচনা নিম্নরূপ–

ক. اِخْفَاء شَفَوِىّ-এর পরিচয় :

আভিধানিক অর্থ : اَلْاِخْفَاءُ الشَّفَوِىُّ একটি গুণবাচক যৌগিক শব্দ, যা اَلْاِخْفَاءُ মাওসুফ ও اَلشَّفَوِىُّ সিফাত দ্বারা গঠিত। اَلْاِخْفَاءُ শব্দটি বাবে اِفْعَال-এর মাসদার, যা خَفْىٌ মাদ্দাহ থেকে গঠিত। এর শাব্দিক অর্থ নিম্নরূপ–

১. اَلْاِسْتَارُ তথা গোপন করা।

২. اَلسَّتْرُ তথা লুকানো।

৩. اَلْكَتْمُ তথা গোপন করা।

৪. ইংরেজিতে এর প্রতিশব্দ হলো– To hide, To cover up ইত্যাদি।

আর اَلشَّفَوِىُّ শব্দটি اِسْم مَنْسُوْب; যা شَفَةٌ শব্দ থেকে গঠিত। এর অর্থ হলো– মৌখিক, ওষ্ঠাগত। সুতরাং اَلْاِخْفَاءُ الشَّفَوِىُّ-এর সম্মিলিত অর্থ হলো– মৌখিকভাবে গোপন করা।

পারিভাষিক সংজ্ঞা : اِخْفَاء شَفَوِىّ-এর পারিভাষিক সংজ্ঞা সম্পর্কে মনীষীগণের অভিমত নিম্নরূপ–

১. اَلْقَوْلُ السَّدِيْدُ فِىْ اَحْكَامِ التَّجْوِيْدِ গ্রন্থপ্রণেতা বলেন–

اَلْاِخْفَاءُ الشَّفَوِىُّ لَهٗ حَرْفٌ وَاحِدٌ وَهُوَ الْبَاءُ اِذَا دَخَلَتْ عَلَيْهِ الْمِيْمُ السَّاكِنَةُ يَقَالُ لَهُ الْاِخْفَاءُ الشَّفَوِىُّ۔

অর্থাৎ, ইখফা শাফাভীর একটি হরফ بَاء-এর সাথে যখন اَلْمِيْمُ السَّاكِنَةُ যুক্ত হয় তখন তাকে اِخْفَاء شَفَوِىّ বলে।

২. هِدَايَةُ الْقَارِىْ اِلٰى تَجْوِيْدِ كَلَامِ الْبَارِىْ গ্রন্থপ্রণেতা বলেন–

اَلْاِخْفَاءُ الشَّفَوِىُّ لَهٗ حَرْفٌ وَاحِدٌ وَهُوَ الْبَاءُ فَاِذَا وَقَعَ بَعْدَ الْمِيْمِ السَّاكِنَةِ جَازَ اِخْفَائُهَا عِنْدَهٗ مَعَ الْغُنَّةِ وَيُسَمّٰى اِخْفَاءً شَفَوِيًّا۔

৩. اَلْبُرْهَانُ فِىْ تَجْوِيْدِ الْقُرْاٰنِ গ্রন্থপ্রণেতা বলেন–

فَاِذَا وَقَعَتِ الْمِيْمُ السَّاكِنَةُ وَوَقَعَ بَعْدَهَا الْبَاءُ اُخْفِيَتِ الْمِيْمُ وَيُسَمّٰى اِخْفَاءً شَفَوِيًّا لِخُرُوْجِ حُرُوْفِهٖ مِنَ الشَّفَةِ۔

খ. اِدْغَام صَغِيْر-এর পরিচয় :

আভিধানিক অর্থ : اَلْاِدْغَامُ الصَّغِيْرُ শব্দটি مُرَكَّب تَوْصِيْفِىّ তথা গুণবাচক যৌগিক শব্দ, যা الاِدْغَامُ মাওসুফ ও اَلصَّغِيْرُ সিফাত এ দুটি শব্দের সমন্বয়ে গঠিত। اَلْاِدْغَامُ শব্দটি বাবে اِفْعَالْ-এর মাসদার, যা دَغْمٌ মাদ্দাহ থেকে গঠিত। এর শাব্দিক অর্থ নিম্নরূপ–

১. اِدْخَالُ الشَّىْءِ فِىْ الشَّىْءِ তথা একটা বস্তুকে অপর বস্তুর মধ্যে প্রবেশ করানো।

২. اِدْخَالُ الْحَرْفِ فِىْ الْحَرْفِ তথা এক হরফকে অপর হরফের মধ্যে প্রবেশ করানো।

৩. اَلضَّمُّ তথা মিলানো।

৪. ইংরেজিতে এর প্রতিশব্দ হলো– To enter.

আর اَلصَّغِيْرُ শব্দটি فَعِيْل-এর ওযনে اِسْم فَاعِل مُبَالَغَة-এর সীগাহ। এটি একবচন, বহুবচনে صَغَائِر; এর শাব্দিক অর্থ– ছোট। সুতরাং اَلْاِدْغَامُ الصَّغِيْرُ-এর সম্মিলিত অর্থ হবে– ছোট ইদগাম। এর অপর নাম হলো– ইদগামে মিসলাইন।

পারিভাষিক সংজ্ঞা : اَلاِدْغَامُ الصَّغِيْرُ-এর পারিভাষিক সংজ্ঞা সম্পর্কে মনীষীগণের অভিমত নিম্নরূপ–

১. اَلْقَوْلُ السَّدِيْدُ فِىْ اَحْكَامِ التَّجْوِيْدِ গ্রন্থপ্রণেতা বলেন–

اَمَّا الْاِدْغَامُ الْمِثْلَانِ اَىِ الصَّغِيْرُ فِىْ حُكْمِ الْمِيْمِ السَّاكِنَةِ لَهٗ حَرْفٌ وَاحِدٌ وَهُوَ الْمِيْمُ اِذَا دَخَلَتْ عَلَيْهِ الْمِيْمُ السَّاكِنَةُ يُقَالُ لَهٗ اِدْغَامٌ مِثْلَانِ اَىْ صَغِيْرٌ۔

অর্থাৎ, ইদগামে মিসলাইন তথা সগীর মীম সাকিনের মতো। এর হরফ একটি তথা মীম। যখন তা মীম সাকিনের সাথে যুক্ত হয় তখন তাকে ইদগামে মিসলাইন তথা ইদহামে সগীর বলা হয়।

২. هِدَايَةُ الْقَارِىْ اِلٰى تَجْوِيْدِ كَلَامِ الْبَارِىْ গ্রন্থপ্রণেতা বলেন–

اَلاِدْغَامُ الصَّغِيْرُ لَهٗ حَرْفٌ وَاحِدٌ وَهُوَ الْمِيْمُ فَاِذَا وَقَعَ بَعْدَ الْمِيْمِ السَّاكِنَةِ سَوَاءٌ كَانَ مَعَهَا فِىْ كَلِمَةٍ اَمْ كَانَ فِىْ كَلِمَتَيْنِ وَجَبَ اِدْغَامُ الْمِيْمِ السَّاكِنَةِ فِىْ الْمِيْمِ الْمُتَحَرِّكَةِ وَيُسَمّٰى اِدْغَامًا صَغِيْرًا مَعَ الْغُنَّةِ۔

৩. اَلْبُرْهَانُ فِىْ تَجْوِيْدِ الْقُرْاٰنِ গ্রন্থ প্রণেতা বলেন–

اَلاِدْغَامُ يَكُوْنُ عِنْدَ مِيْمٍ مِثْلِهَا سَوَاءٌ كَانَتْ هٰذِهِ الْمِيْمُ اَصْلِيَّةً اَوْ مَقْلُوْبَةً وَيُسَمّٰى اِدْغَامًا صَغِيْرًا۔

গ. اِظْهَار شَفَوِىّ-এর পরিচয় :

আভিধানিক অর্থ : اَلْاِظْهَارُ الشَّفَوِىُّ শব্দটি مُرَكَّب تَوْصِيْفِىّ; যা اَلْاِظْهَارُ মাওসুফ ও اَلشَّفَوِىُّ সিফাত দ্বারা গঠিত। اَلْاِظْهَارُ শব্দটি বাবে اَفْعَال-এর মাসদার। যা ظَهْر মাদ্দাহ থেকে গঠিত। এর শাব্দিক অর্থ নিম্নরূপ–

১. اَلْبَيَانُ তথা প্রকাশ করা।
২. اَلْاِيْضَاحُ তথা স্পষ্ট করা।
৩. اَلْاِكْشَافُ তথা উন্মুক্ত করা।
৪. ইংরেজিতে এর প্রতিশব্দ হলো– To clear.

আর اَلشَّفَوِىُّ শব্দটি اِسْم مَنْسُوْب; যা شَفَةٌ শব্দ থেকে গঠিত। এর অর্থ– মৌখিক, ওষ্ঠাগত। সুতরাং اِظْهَار شَفَوِىّ-এর সম্মিলিত অর্থ হবে– মৌখিকভাবে স্পষ্ট করা।

পারিভাষিক সংজ্ঞা : اِظْهَار شَفَوِىّ-এর পারিভাষিক সংজ্ঞা সম্পর্কে মনীষীগণের অভিমত নিম্নরূপ–

১. اَلْقَوْلُ السَّدِيْدُ فِىْ اَحْكَامِ التَّجْوِيْدِ গ্রন্থপ্রণেতা বলেন–
اِذَا دَخَلَتِ الْمِيْمُ السَّاكِنَةُ عَلٰى اَحَدِ الْحُرُوْفِ السِّتَّةِ وَالْعِشْرِيْنَ يُقَالُ لَهُ الْاِظْهَارُ الشَّفَوِىُّ ـ
অর্থাৎ, যখন মীম সাকিন بَاء ও مِيْم ব্যতীত অবশিষ্ট ছাব্বিশটি হরফ থেকে যে-কোনো একটি হরফের সাথে আসে তখন তাকে اِظْهَار شفوى বলে।

২. هِدَايَةُ الْقَارِىْ اِلٰى تَجْوِيْدِ كَلَامِ الْبَارِىْ গ্রন্থপ্রণেতা বলেন–
حُرُوْفُ الْاِظْهَارِ الشَّفَوِىِّ سِتَّةٌ وَّعِشْرُوْنَ حَرْفًا ـ فَاِذَا وَقَعَ حَرْفٌ مِنْ هٰذِهِ الْاَحْرُفِ بَعْدَ الْمِيْمِ السَّاكِنَةِ سَوَاءٌ كَانَ مَعَهَا فِىْ كَلِمَةٍ وَاحِدَةٍ اَوْ فِىْ كَلِمَتَيْنِ وَجَبَ اِظْهَارُهَا وَيُسَمّٰى اِظْهَارًا شَفَوِيًّا ـ
অর্থাৎ, ইযহারে শাফাভীর হরফ ২৬টি। যখন এগুলোর কোনো একটি হরফ মীম সাকিনের পর একই শব্দে অথবা দুটি শব্দে ব্যবহার হয়, তখন ইযহার করা আবশ্যক। আর এটাকে اِظْهَار شَفَوِىّ বলে।

৩. اَلْبُرْهَانُ فِىْ تَجْوِيْدِ الْقُرْاٰنِ গ্রন্থপ্রণেতা বলেন–
اَلْاِظْهَارُ وُجُوْبًا مِنْ غَيْرِ غُنَّةٍ عِنْدَ بَقِيَّةِ الْاَحْرُفِ وَيَكُوْنُ فِىْ كَلِمَةٍ اَوْ كَلِمَتَيْنِ يُسَمّٰى اِظْهَارًا شَفَوِيًا ـ

সমাপনী : মীম সাকিন ইলমুত তাজভীদের অন্যতম আলোচ্য বিষয়। মীম সাকিনের বিধান তিন প্রকার। ইখফা শাফাভী, ইদগামে সগীর ও ইযহারে শাফাভী। বিশুদ্ধরূপে কুরআন মাজীদ তেলাওয়াত করা এবং সুন্দর সুরে তা পড়ার ক্ষেত্রে মীম সাকিনের বিধানাবলির গুরুত্ব অপরিসীম।

(د) تحدث عن نشأة علم التجويد وتطوره بالايجاز-

[عِلْمُ التَّجْوِيْدِ-এর উৎপত্তি ও ক্রমবিকাশ সম্পর্কে সংক্ষেপে আলোচনা কর।]

উত্তর ।। **উপস্থাপনা :** আল কুরআন স্পষ্টরূপে ধীরে ধীরে সুন্দরভাবে পাঠ করার বিধানাবলি সংবলিত শাস্ত্রকে ইলমুত তাজভীদ বলে। হিজরী চতুর্থ শতাব্দীর শেষের দিকে ইলমুত তাজভীদের উৎপত্তি হয়ে বর্তমান সময় পর্যন্ত এ শাস্ত্রের ক্রমবিকাশ চলমান। নিচে প্রশ্নালোকে ইলমুত তাজভীদের উৎপত্তি ও ক্রমবিকাশ সম্পর্কে আলোচনা করা হলো।

ইলমুত তাজভীদ-এর উৎপত্তি ও ক্রমবিকাশ : عِلْمُ التَّجْوِيْدِ-এর উৎপত্তি ও ক্রমবিকাশকে আমরা দু'ভাগে ভাগ করতে পারি। যথা–

১. اَلنَّاحِيَةُ الْعَمَلِيَّةُ **তথা প্রয়োগগত দিক :** ইলমুত তাজভীদের প্রয়োগগত দিক থেকে বিবেচনা করলে এর উৎপত্তি শুরু হয় রাসূল (স)-এর যুগ থেকে। কারণ কুরআন মাজীদের তেলাওয়াতে তাজভীদ ও তারতীল-এর প্রয়োগ تَلَقِّى ও تَلْقِيْن-এর ওপর নির্ভরশীল। এটা এক জবান থেকে অপর জবান এরূপ ধারাবাহিকতায় চলে এসেছে। পাঠক পাঠ করেন আর শ্রোতা মনোযোগসহ তা শ্রবণ করেন। অতঃপর পরবর্তী প্রজন্ম তার তেলাওয়াত অনুসরণ করে। আর শিক্ষক তাদের ভুলত্রুটি ঠিক করে দেন। এ প্রক্রিয়াটিই আমরা রাসূল (স)-এর মাধ্যমে দেখতে পাই।
নবী কারীম (স) মহান আল্লাহর পক্ষ থেকে হজরত জিবরাঈল (আ)-এর মাধ্যমে কুরআন মাজীদ অর্জন করেছিলেন। এরপর তিনি তা মুখস্থ করে নেন এবং যেভাবে তিনি হজরত জিবরাঈল (আ) থেকে তা শুনেছিলেন ঠিক সেভাবে তা নিজ জবানে তেলাওয়াত করতেন। অতঃপর সাহাবায়ে কেরামের সামনে তা শোনাতেন, তাঁদেরকে তালকীন করতেন। সাহাবায়ে কেরাম তা মনোযোগসহ শুনতেন এবং খুব আগ্রহ নিয়ে তা তেলাওয়াত করতেন। কোনো ভুলত্রুটি হলে রাসূল (স) তা ঠিক করে দিতেন। এভাবেই মুখে মুখে প্রয়োগগত দিক থেকে ইলমে তাজভীদের উৎপত্তি হয়। এ প্রক্রিয়া রাসূল (স)-এর যুগ থেকে হিজরী তৃতীয় শতাব্দী পর্যন্ত চলতে থাকে।

২. نَاحِيَةُ قَوَاعِدِهِ وَقَضَايَاهُ الْعِلْمِيَّةُ **তথা এর ইলমী বিধান ও নীতিমালার দিক :** ইলমুত তাজভীদের বিধানাবলি ও নিয়মকানুনসহ ইলমী দিক বিবেচনায় এর উৎপত্তি ও ক্রমবিকাশ শুরু হয় হিজরী চতুর্থ শতাব্দীর শেষ দিক থেকে। তৎকালীন জ্ঞানবিজ্ঞানের রাজধানী ইরাক থেকে ইলমে তাজভীদের উৎপত্তির সূচনা হয়। ইসলামী সাম্রাজ্য বিস্তার লাভের ফলে আরবি ভাষার সঙ্গে অনারবি ভাষা মিশে যেতে থাকে। তা ছাড়া অনারবি মুসলমানগণ কুরআন মাজীদ তেলাওয়াতে ভুলভ্রান্তি করতে থাকেন। এরূপ অবস্থা দেখে মুসলিম শাসকগণ উদ্‌বিগ্ন হয়ে পড়েন। তাঁরা কুরআন মাজীদে বিকৃতির আশঙ্কা করতে থাকেন। অতঃপর কুরআন মাজীদের বিকৃতি ও তা তেলাওয়াতের ভুলত্রুটি দূর করার জন্য প্রথমত কুরআন মাজীদে নুকতা ও হরকতের ব্যবস্থা করেন। এরপর তাজভীদের নিয়মকানুন প্রণয়ন করা হয়। যাতে এগুলোর অনুসরণ করে কুরআন মাজীদ তেলাওয়াতকারীরা ভুলত্রুটি থেকে বেঁচে থাকতে পারেন। ইলমে তাজভীদের নিয়মকানুন প্রণয়নে যাঁরা অবদান রাখেন তাঁরা হলেন– শায়খ আবুল আসওয়াদ আদ দুয়াইলী (র), শায়খ আবু ওবায়েদ কাসেম ইবনে সালাম (র), শায়খ খলীল ইবনে আহমাদ (র), শায়খ আবু মুযাহিম খাকানী (র) প্রমুখ।

এভাবে ইলমে তাজভীদের সূচনা হয় এবং ইলমে কেরাতের ইমামগণ তাঁদের অনুসরণ করে তাজভীদশাস্ত্রের ওপর বিভিন্ন গ্রন্থ রচনা করেন। اَلتَّجْوِيْدُ শব্দ ব্যবহার করে হিজরী চতুর্থ শতাব্দীতে সর্বপ্রথম গ্রন্থ প্রণয়ন করেন শায়খ আবুল হাসান আলী ইবনে জাফর (র)। তিনি ৪১০ হিজরীতে ইন্তেকাল করেন। তাঁর প্রণীত গ্রন্থের নাম– اَلتَّنْبِيْهُ عَلَى اللَّحْنِ الْجَلِيِّ وَاللَّحْنِ الْخَفِيِّ; এরপর স্পেনে দুটি গ্রন্থ রচিত হয়। সেগুলো হলো–

১. اَلرِّعَايَةُ فِىْ تَجْوِيْدِ الْقِرَاءَةِ وَتَحْقِيْقِ لَفْظِ التِّلَاوَةِ; এ মূল্যবান গ্রন্থটির লেখক হলেন শায়খ মাক্কী ইবনে আবি তালেব (র)। তিনি ৪৩৭ হিজরীতে ইন্তেকাল করেন।

২. اَلتَّحْدِيْدُ فِى الْاِتْقَانِ وَالتَّجْوِيْدِ; এ গ্রন্থটির লেখক হলেন শায়খ আবু আমর ওসমান ইবনে সাঈদ (র)। তিনি ৪৪৪ হিজরীতে ইন্তেকাল করেন। ইলমে তাজভীদের এ মূল্যবান গ্রন্থদ্বয়ের পর আরও কিছু গ্রন্থ রচিত হয়। তন্মধ্যে উল্লেখযোগ্য ও বহুল প্রচলিত গ্রন্থ হলো– اَلْمُوَضَّحُ فِىْ التَّجْوِيْدِ; এ গ্রন্থটির লেখক হলেন শায়খ আবদুল ওহাব কুরতুবী (র)। তিনি ৪৬৯ হিজরীতে ইন্তেকাল করেন। হিজরী পঞ্চম শতাব্দী পর্যন্ত এভাবে ইলমে তাজভীদের ক্রমবিকাশধারা চলতে থাকে।

হিজরী পঞ্চম শতাব্দীর পর থেকে ইলমে তাজভীদের সোনালি যুগ শুরু হয়, যা বর্তমান সময় পর্যন্ত চলমান। এ সময় তাজভীদশাস্ত্রের আধুনিক ও পরিপূর্ণ নিয়মকানুন সংবলিত শত শত গ্রন্থ রচিত হয়। বিভিন্ন দেশের বিশ্ববিদ্যালয়গুলোতে ইলমে তাজভীদের ওপর স্বতন্ত্র বিষয় চালু করা হয়। এ সময়ে প্রণীত প্রসিদ্ধ গ্রন্থাবলি নিম্নরূপ–

১. اَلتَّمْهِيْدُ فِىْ عِلْمِ التَّجْوِيْدِ : এটি ইলমে তাজভীদের ওপর প্রণীত বিখ্যাত গ্রন্থ। এ গ্রন্থের লেখক হলেন শায়খ শামসুদ্দীন আবুল খায়ের মুহাম্মাদ ইবনে জাযারী (র)। তিনি ৮৩৩ হিজরীতে ইন্তেকাল করেন।

২. اَلْقَوْلُ السَّدِيْدُ فِىْ عِلْمِ التَّجْوِيْدِ : এটি তাজভীদ বিষয়ে প্রণীত অন্যতম কিতাব। এর লেখক হলেন শায়খ আহমাদ হেজাযী আল ফকীহ (র)। তিনি মক্কা মোকাররমার رَئِيْسُ الْقُرَّاءِ ছিলেন।

৩. هِدَايَةُ الْقَارِىْ اِلٰى تَجْوِيْدِ كَلَامِ الْبَارِىْ : ইলমুত তাজভীদ বিষয়ে প্রণীত এ গ্রন্থটি সর্বাধিক প্রসিদ্ধ ও সর্বজন সমাদৃত কিতাব। এ বিখ্যাত গ্রন্থের লেখক হলেন শায়খ আবদুল ফাত্তাহ ইবনে সাইয়েদ আজমী আল মারসাফী (র)। তিনি মদিনা ইসলামী বিশ্ববিদ্যালয়ের 'আল কুরআন' বিভাগের সহযোগী অধ্যাপক ছিলেন। ১৪০৯ হিজরীতে তিনি ইন্তেকাল করেন।

৪. اَلْبُرْهَانُ فِىْ تَجْوِيْدِ الْقُرْاٰنِ : এ গ্রন্থের লেখক হলেন শায়খ মুহাম্মাদ সাদেক কামহাভী (র)।

৫. جَمَالُ الْقُرْاٰنِ : এ গ্রন্থের লেখক হলেন মাওলানা আশরাফ আলী থানভী (র)।

৬. دُرُوْسٌ فِىْ عِلْمِ التَّجْوِيْدِ : ইলমে তাজভীদ বিষয়ে প্রণীত এটি একটি উপকারী গ্রন্থ। এ গ্রন্থটির লেখক হলেন হাফেয ড. আবুল বারাকাত মুহাম্মাদ হিযবুল্লাহ। তিনি কুষ্টিয়া ইসলামী বিশ্ববিদ্যালয়ের 'আল কুরআন অ্যান্ড ইসলামিক স্টাডিজ' বিভাগের প্রাক্তন চেয়ারম্যান ও অধ্যাপক।

সমাপনী : ইলমে তাজভীদ এমন শাস্ত্র যাতে কুরআন মাজীদ পাঠের পদ্ধতি নিয়ে আলোচনা করা হয়েছে। রাসূল (স)-এর যুগ থেকে হিজরী তৃতীয় শতাব্দী পর্যন্ত মুখে মুখে এর উৎপত্তি ও ক্রমবিকাশধারা চালু থাকে। এরপর চতুর্থ ও পঞ্চম শতাব্দীতে এ বিষয়ে কিছু গ্রন্থ রচিত হয়। পঞ্চম শতাব্দীর পরবর্তী যুগকে ইলমে তাজভীদের সোনালি যুগ বলা হয়।

أو- اجب عن اثنين من الاسئلة التالية :

(الف) عرف الوقف واكتب علاماته-

[وَقْف-এর পরিচয় দাও এবং এর চিহ্নসমূহ লিপিবদ্ধ কর।]

উত্তর ।। **উপস্থাপনা :** তাজভীদশাস্ত্রবিদগণ কুরআন মাজীদ সুন্দর ও সুললিত কণ্ঠে তেলাওয়াতের সুবিধার্থে কিছু নীতিমালা প্রণয়ন করেছেন। ওয়াকফসংক্রান্ত নীতিমালা তন্মধ্যে অন্যতম। ওয়াকফ অর্থ– থামা, বিরতি দেওয়া। এটি বিরাম চিহ্নের মতো। নিচে প্রশ্নালোকে ওয়াকফের পরিচয় ও তার চিহ্নসমূহ সম্পর্কে আলোচনা করা হলো।

تعريف الوقف

وَقْف-এর পরিচয় : وَقْف-এর পরিচয় নিম্নরূপ–

আভিধানিক অর্থ : اَلْوَقْفُ শব্দটি বাবে ضَرَبَ-এর মাসদার, যা وَقْف মাদ্দাহ থেকে গঠিত। এর আভিধানিক অর্থ নিম্নরূপ–

১. শায়খ আবদুল ফাত্তাহ আল মারসাফী (র) বলেন, وَقْف-এর আভিধানিক অর্থ– اَلْكَفُّ وَالْحَبْسُ তথা বাধা দেওয়া ও আবদ্ধ করা।

২. শায়খ আহমাদ হেজাযী আল ফকীহ (র) বলেন, وَقْف-এর আভিধানিক অর্থ– اَلْكَفُّ عَنِ الشَّىْءِ مُطْلَقًا তথা কোনোকিছু থেকে ফিরিয়ে রাখা বা বাধা দেওয়া।

৩. ড. এবিএম হিযবুল্লাহ (দা. বা.) বলেন, وَقْف-এর আভিধানিক অর্থ– اَلْحَبْسُ وَالْكَفُّ তথা আবদ্ধ রাখা ও বাধা দেওয়া। যেমন বলা হয়– اَوْقَفَتِ الدَّابَّةُ; এর অর্থ হলো– حَبَسْتُهَا তথা আমি তাকে আবদ্ধ করেছি।

৪. اَلسُّكُوْنَةُ তথা থামা।

৫. اَلْاِسْتِقْرَارُ তথা স্থির হওয়া।

وقف-এর পারিভাষিক সংজ্ঞা : وَقْف-এর পারিভাষিক সংজ্ঞা সম্পর্কে মনীষীগণের অভিমত নিম্নরূপ–

১. শায়খ আহমাদ হেজাযী আল ফকীহ (র) বলেন–

هُوَ عِبَارَةٌ عَنْ قَطْعِ الصَّوْتِ عَلَى الْكَلِمَةِ زَمَنًا يَتَنَفَّسُ فِيْهِ عَادَةً بِنِيَّةِ اِسْتِئْنَافِ الْقِرَاءَةِ لَا بِقَصْدِ الْاِعْرَاضِ عَنْهَا ـ

অর্থাৎ, ওয়াকফ হলো, নতুনভাবে পড়া শুরু করার নিয়তে নিঃশ্বাস ছেড়ে শব্দের উচ্চারণ থেকে বিরতি নেওয়ার নাম, পড়া থেকে বিমুখের নিয়তে নয়।

২. শায়খ মুহাম্মাদ কামহাভী (র) বলেন–

هُوَ قَطْعُ الصَّوْتِ عَنِ الْكَلِمَةِ زَمَنًا مَا يَتَنَفَّسُ فِيْهِ الْقَارِئُ عَادَةً بِنِيَّةِ اِسْتِئْنَافِ الْقِرَاءَةِ لَا بِنِيَّةِ الْاِعْرَاضِ عَنْهَا ـ

৩. শায়খ আবদুল ফাত্তাহ আল মারসাফী (র) বলেন–

هُوَ عِبَارَةٌ عَنْ قَطْعِ الصَّوْتِ عَنْ اٰخِرِ الْكَلِمَةِ زَمَنًا يُتَنَفَّسُ فِيْهِ عَادَةً بِنِيَّةِ اِسْتِئْنَافِ الْقِرَاءَةِ لَا بِنِيَّةِ الْاِعْرَاضِ عَنْهَا ـ

৪. শায়খ মুহাম্মাদ ইবনে জাযারী (র) বলেন– اَلْوَقْفُ هُوَ الْحَبْسُ الَّذِىْ اَوْقَفَ الْقَارِئُ فِىْ تِلَاوَةِ اٰيَةِ الْقُرْاٰنِ فِىْ اٰخِرِهَا

মোটকথা, কুরআন মাজীদ পাঠকালে কোনো শব্দের শেষে বিরাম নেওয়াকে ওয়াকফ বলে।

علامات الوقف :

وَقْف-এর চিহ্নসমূহ : যেসব চিহ্ন বা নিদর্শন দ্বারা وَقْف সম্পর্কে জানা যায় সেগুলোকে عَلَامَاتُ الْوَقْفِ বলে। আল কুরআনে বিদ্যমান ওয়াকফের চিহ্নসমূহ নিম্নরূপ–

ক্রমিক	চিহ্ন	মর্ম	মর্মার্থ
১	ه	বিরাম	আয়াত সমাপ্তির বিরাম চিহ্ন।
২	م	লাযেম	বিরতি অবশ্যকর্তব্য।
৩	ط	মুতলাক	বিরতি খুব ভালো, মিলানো ঠিক নয়।
৪	ج	জায়েয	বিরতি ভালো, মিলানোও যায়।
৫	ز	মুযাওওয়ায	বিরতির চেয়ে মিলানো ভালো।
৬	ص	মুরাখখাস	বিরতির চেয়ে মিলানো ভালো।
৭	ق	কিলা আলাইহি ওয়াকফুন	মিলানো ভালো।
৮	لا	লা-ওয়াকফা	বিরতি নয়, অবশ্যই মিলাবে।
৯	س	সাকতা	নিঃশ্বাস রেখে কিঞ্চিৎ বিরতি।
১০	قف	আমর ওয়াকফ	বিরতি, মিলানো ঠিক নয়।
১১	قلے	ওয়াকফ আওলা	মিলানোর চেয়ে বিরতি ভালো।
১২	قلا	কিলালা-ওয়াকফা আলাইহি	বিরতির চেয়ে মিলানো ভালো।
১৩	وَقْفَة	ওয়াকফা	সাকতার ন্যায়, কিঞ্চিৎ দীর্ঘ বিরতি।
১৪	صل	আমর ওয়াসল	মিলানো ভালো।
১৫	صلے	ওয়াসল আওলা	মিলানো অতি উত্তম।
১৬	وَقْفُ النَّبِى	ওয়াকফুন নবী	বিরতি ভালো।
১৭	وَقْفُ غُفْرَانْ	ওয়াকফে গুফরান	বিরতিতে গুনাহ মোচন।
১৮	وَقْفُ جِبْرِيل	ওয়াকফে জিবরাঈল	বিরতিতে বরকত বৃদ্ধি।
১৯	وَقْفُ مَنْزِل	ওয়াকফে মনযিল	মিলানোর চেয়ে বিরতি ভালো।

সমাপনী : কুরআন মাজীদ তেলাওয়াতের সময় কোনো আয়াত বা শব্দের শেষে আওয়াজ ও নিঃশ্বাস বন্ধ করে থেমে যাওয়া বা বিরাম দেওয়াকে ওয়াকফ বলে। কুরআন মাজীদ সুন্দর ও সুললিত কণ্ঠে তেলাওয়াতের জন্য এসব চিহ্ন সম্পর্কে জ্ঞানার্জন করা জরুরি।

(ب) اكتب انواع صفات الحروف بالايجاز ـ

[صِفَاتُ الْحُرُوْفِ-এর প্রকারসমূহ সংক্ষেপে লেখ।]

উত্তর ।। **উপস্থাপনা :** ইলমুত তাজভীদে যেসব নীতিমালা ও নিয়মকানুন আলোচনা করা হয়েছে তন্মধ্যে সিফাতসংক্রান্ত আলোচনা উল্লেখযোগ্য। এর মাধ্যমে একই মাখরাজের একাধিক হরফের মধ্যে পার্থক্য করে আরবি হরফসমূহের উচ্চারণ সুন্দর করা যায়। এজন্য বিশুদ্ধ ও সুন্দর সুরে কুরআন মাজীদ তেলাওয়াত করার ক্ষেত্রে সিফাত সম্পর্কে জ্ঞানার্জন করা জরুরি। নিচে প্রশ্নালোকে সিফাতের প্রকারভেদ সম্পর্কে আলোচনা করা হলো।

أنواع صفات الحروف :

صِفَاتُ الْحُرُوْفِ-এর প্রকারভেদ : আরবি হরফসমূহের সিফাত প্রধানত দু'প্রকার। যথা– ১. اَلصِّفَاتُ الْاَصْلِيَّةُ এবং ২. اَلصِّفَاتُ الْعَرْضِيَّةُ; এ দু'প্রকার সিফাতের বিবরণ নিম্নরূপ–

১. اَلصِّفَاتُ الْاَصْلِيَّةُ : اَلصِّفَاتُ الْاَصْلِيَّةُ শব্দটি مُرَكَّب تَوْصِيْفِىّ তথা গুণবাচক যৌগিক শব্দ, যা اَلصِّفَات মাওসুফ ও اَلْاَصْلِيَّةُ সিফাত দ্বারা গঠিত। এর শাব্দিক অর্থ হলো– মৌলিক সিফাত। এর অপর নাম হলো– صِفَات لَازِمَة তথা আবশ্যকীয় সিফাত।

পরিভাষায়, শায়খ আবদুল ফাত্তাহ আল মারসাফী (র) বলেন–

اَمَّا الصِّفَاتُ الْاَصْلِيَّةُ فَهِيَ الْمُلَازِمَةُ لِلْحَرْفِ لَا تُفَارِقُهُ بِحَالٍ مِنَ الْاَحْوَالِ كَالْجَهْرِ وَالْاِسْتِعْلَاءِ وَالْاِطْبَاقِ وَالْقَلْقَلَةِ۔

অর্থাৎ, সিফাতে আসলিয়া হলো, হরফের সাথে মিলিত এমন গুণ, যা কোনো অবস্থায় তার থেকে বিচ্ছিন্ন হয় না। যেমন– জাহর, ইস্তিলা, ইতবাক ও কলকলা।

সিফাতে আসলিয়া আবার দু'প্রকার। যথা–

ক. اَلصِّفَاتُ الْمُتَضَادَّةُ **:** যেসব সিফাতের বিপরীত সিফাত রয়েছে সেগুলোকে اَلصِّفَاتُ الْمُتَضَادَّةُ বলে।

اَلصِّفَاتُ الْمُتَضَادَّةُ**-এর সংখ্যা :** জমহুর কারীর মতে– صِفَات مُتَضَادَّة এগারোটি। যথা–

১. اَلْهَمْسُ তথা অস্পষ্ট করা।
২. اَلْجَهْرُ তথা স্পষ্ট করা।
৩. اَلشِّدَّةُ তথা শক্ত।
৪. اَلتَّوَسُّطُ তথা মধ্যম।
৫. اَلرَّخَاوَةُ তথা নরম।
৬. اَلْاِسْتِعْلَاءُ তথা উঁচু করা।
৭. اَلْاِسْتِفَالُ তথা নিচু করা।
৮. اَلْاِطْبَاقُ তথা মিলানো।
৯. اَلْاِنْفِتَاحُ তথা পৃথক হওয়া।
১০. اَلْاِذْلَاقُ তথা জিহ্বায় ধার দেওয়া।
১১. اَلْاِصْمَاتُ তথা চুপ করানো।

খ. اَلصِّفَاتُ غَيْرُ الْمُتَضَادَّةِ **:** যে সিফাতের কোনো বিপরীত সিফাত নেই তাকে اَلصِّفَاتُ غَيْرُ الْمُتَضَادَّةِ বলে।

اَلصِّفَاتُ غَيْرُ الْمُتَضَادَّةِ **-এর সংখ্যা :** صِفَات غَيْر مُتَضَادَّة হলো নয়টি। যথা–

১. اَلصَّفِيْرُ তথা শিসধ্বনি।
২. اَلْقَلْقَلَةُ তথা নাড়াদান, কম্পন।
৩. اَللِّيْنُ তথা কোমল, নরম।
৪. اَلْاِنْحِرَافُ তথা ঝুঁকে পড়া।
৫. اَلتَّكْرِيْرُ তথা বারবার উচ্চারণ করা।
৬. اَلتَّفَشِّى তথা বিস্তৃত হওয়া।
৭. اَلْاِسْتِطَالَةُ তথা দীর্ঘায়িত হওয়া।
৮. اَلْخَفَاءُ তথা গোপন করা।
৯. اَلْغُنَّةُ তথা নাকের বাঁশির আওয়াজ।

২. اَلصِّفَاتُ الْعَرْضِيَّةُ**-এর পরিচয় :** اَلصِّفَاتُ الْعَرْضِيَّةُ শব্দটি مُرَكَّب تَوْصِيْفِىّ তথা গুণবাচক যৌগিক শব্দ, যা اَلصِّفَاتُ মাওসুফ ও اَلْعَرْضِيَّةُ সিফাত দ্বারা গঠিত। এর শাব্দিক অর্থ হলো– অমৌলিক সিফাত।

পরিভাষায়, শায়খ আবদুল ফাত্তাহ আল মারসাফী (র) বলেন–

هِيَ الَّتِيْ تُعْرَضُ لِلْحَرْفِ فِيْ بَعْضِ الْاَحْوَالِ وَتَنْفَكُّ عَنْهُ فِيْ الْبَعْضِ الْاٰخَرِ لِسَبَبٍ مِنَ الْاَسْبَابِ۔

অর্থাৎ, যে সিফাত কতিপয় অবস্থায় হরফের সাথে মিলিত হয় আবার কতিপয় অবস্থায় কোনো এক কারণে তার থেকে পৃথক হয়।

اَلصِّفَاتُ الْعَرْضِيَّةُ আবার এগারো প্রকার। যথা–

১. اَلْاِظْهَارُ তথা স্পষ্ট করে উচ্চারণ করা।
২. اَلْاِدْغَامُ তথা মিলানো।
৩. اَلْاِخْفَاءُ তথা অস্পষ্ট করে পড়া।
৪. اَلْاِقْلَابُ তথা পরিবর্তন করে পড়া।
৫. اَلْمَدُّ তথা টেনে পড়া।
৬. اَلْقَصْرُ তথা সংক্ষেপ করে পড়া।
৭. اَلتَّفْخِيْمُ তথা মোটা করে পড়া।
৮. اَلتَّرْقِيْقُ তথা চিকন করে পড়া।
৯. اَلتَّحْرِيْكُ তথা হরকত দেওয়া।
১০. اَلسُّكُوْنُ তথা সাকিন দেওয়া।
১১. اَلسَّكْتُ তথা সাকতা করে পড়া।

সমাপনী : কুরআন মাজীদ তাজভীদসহ সুন্দর উচ্চারণে তেলাওয়াতের অন্যতম পদ্ধতি হলো সিফাত। এর মাধ্যমে আরবি হরফসমূহ মাখরাজ হতে সুন্দর স্বরে উচ্চারণ করা যায়। আরবি বর্ণমালার সিফাত দু'ধরনের। মৌলিক সিফাত ও অমৌলিক সিফাত।

(ج) اكتب احكام اللحن ممثلا۔

[লাহন-এর হুকুমসমূহ উদাহরণসহ লেখ।]

উত্তর ।। **উপস্থাপনা :** কুরআন মাজীদ তেলাওয়াতে ভুল করাকে তাজভীদের পরিভাষায় 'লাহন' বলে। লাহন দু'প্রকার। লাহনে জলী তথা প্রকাশ্য ভুল এবং লাহনে খফী তথা অপ্রকাশ্য ভুল। নিচে প্রশ্নালোকে লাহন-এর বিধান বর্ণনা করা হলো।

লাহন-এর হুকুমসমূহ : প্রকারভেদ হিসেবে লাহনের হুকুমও দু'প্রকার। যেমন–

লাহনে জলীর হুকুম : লাহনে জলী-এর হুকুম বর্ণনায় মনীষীগণের অভিমত নিম্নরূপ–

১. শায়খ আবদুল ফাত্তাহ আল মারসাফী (র) বলেন– وَحُكْمُهُ اَلتَّحْرِيْمُ بِالْاِجْمَاعِ অর্থাৎ, সর্বসম্মতভাবে কুরআন মাজীদ তেলাওয়াতে লাহনে জলী করা হারাম।

২. ড. এবিএম হিযবুল্লাহ (দা. বা.) বলেন–

اِتَّفَقَ الْعُلَمَاءُ سَلَفًا وَخَلَفًا عَلٰى تَحْرِيْمِ اللَّحْنِ الْجَلِيِّ فَمَنْ وَقَعَ فِيْ اللَّحْنِ الْجَلِيِّ فَاِنَّهُ لَا تَصِحُّ قِرَاءَتُهُ وَلَا تَنْبَغِيْ الصَّلَاةُ خَلْفَهُ وَيَأْثِمُ مَعَ الْاِهْمَالِ وَيَتَرَتَّبُ عَلَيْهِ الْعِقَابُ۔

অর্থাৎ, লাহনে জলী হারাম হওয়ার ব্যাপারে পূর্ববর্তী ও পরবর্তী সকল আলেম ঐকমত্য পোষণ করেছেন। সুতরাং যে ব্যক্তি কেরাতে লাহনে জলী করবে তার কেরাত শুদ্ধ হবে না, তার পেছনে সালাত আদায় করা ঠিক হবে না, অবহেলা করে এরূপ করলে সে গুনাহগার হবে এবং তাকে শাস্তিভোগ করতে হবে।

৩. জমহুর কারী ও আলেমের মতে, কুরআন মাজীদ তেলাওয়াতে লাহনে জলী করা হারাম। এতে কবীরা গুনাহ হবে। নামাজে লাহনে জলী করলে নামাজ নষ্ট হয়ে যাবে। বারবার অবহেলাবশত এরূপ করলে তা কুফরীর দিকে নিয়ে যাবে।

লাহনে খফীর হুকুম : লাহনে খফীর হুকুম সম্পর্কে মনীষীগণের অভিমত নিম্নরূপ–

১. আল্লামা মোল্লা আলী কারী (র) বলেন–

لاَ شَكَّ اَنَّ هٰذَا النَّوْعَ مِمَّا لَيْسَ بِفَرْضٍ عَيْنٍ يَتَرَتَّبُ عَلَيْهِ الْعِقَابُ الشَّدِيْدُ وَاِنَّمَا فِيْهِ خَوْفُ الْعِقَابِ وَالتَّهْدِيْدِ۔

অর্থাৎ, কোনো সন্দেহ নেই যে, এ প্রকার লাহনে কঠিন শাস্তির ব্যবস্থা হবে না। তবে ধমক ও শাস্তির ভীতি প্রদর্শন রয়েছে।

২. শায়খ আল বারকাভী (র) বলেন–

تَحْرُمُ هٰذِهِ التَّغَيُّرَاتُ جَمِيْعُهَا لِاَنَّهَا وَاِنْ كَانَتْ لَا تُخِلُّ بِالْمَعْنٰى لٰكِنَّهَا تُخِلُّ بِاللَّفْظِ لِفَسَادِ رَوْنَقِهٖ وَذَهَابِ حُسْنِهٖ وَطَلَاوَتِهٖ۔

অর্থাৎ, কেরাতের ক্ষেত্রে এসব পরিবর্তন হারাম, কারণ তা যদিও অর্থের বিকৃতি ঘটায় না, তবুও হরফ উচ্চারণের সৌন্দর্য ও শোভা বিনষ্ট করার মাধ্যমে তা শব্দের মধ্যে ত্রুটি সৃষ্টি করে।

৩. শায়খ আবদুল ফাত্তাহ আল মারসাফী (র) বলেন– وَالْحُكْمُ فِىْ هٰذَا اللَّحْنِ بِنَوْعَيْهِ اَلتَّحْرِيْمُ اَيْضًا অর্থাৎ, লাহনের উভয় ধরনই হারাম।

সমাপনী : তাজভীদের নিয়মকানুন পরিপন্থি কুরআন মাজীদ তেলাওয়াত করাকে লাহন বলে। এটা প্রকাশ্য ও অপ্রকাশ্য উভয় ধরনের হতে পারে। প্রকাশ্য ভুলকে লাহনে জলী বলে। এটা সকলের ঐকমত্যে হারাম। আর অপ্রকাশ্য ভুলকে লাহনে খফী বলে। এর কারণে অর্থের বিকৃতি না ঘটলেও শব্দের সৌন্দর্য নষ্ট হয়। তাই এটাও নিষিদ্ধ।

(د) تحدث عن احكام الراء موضحا۔

[راء-এর বিধানসমূহ সুস্পষ্টভাবে আলোচনা কর।]

উপস্থাপনা : কুরআন মাজীদ বিশুদ্ধরূপে ও সুন্দর স্বরে তেলাওয়াতের জন্য বিশেষজ্ঞ আলেমগণ নির্দিষ্ট কিছু নিয়মকানুন প্রণয়ন করেছেন। رَاء বর্ণ সংক্রান্ত বিধানাবলি তন্মধ্যে উল্লেখযোগ্য। যবর ও পেশের কারণে আরবি 'রা' বর্ণকে মোটা করে পড়তে হয়। আর যেরের কারণে চিকন করে পড়তে হয়। নিচে প্রশ্নালোকে আলোচনা করা হলো।

রা-এর বিধানাবলি : 'রা' বর্ণ পড়ার اَحْكَام দুটি। تَفْخِيْم ও تَرْقِيْق; এ দু'প্রকার বিধানসম্পর্কিত বিবরণ নিম্নরূপ–

১. **'রা'-কে পোর উচ্চারণের নিয়মাবলি :** পোর অর্থ– মোটা বা পুষ্ট, অর্থাৎ কোনো অক্ষরকে মোটা বা পুষ্ট করে পড়াকে পোর বলে। 'রা' অক্ষর পোর পড়ার নিয়ম পাঁচটি। যথা–

ক. যেসময় ر অক্ষরের মধ্যে যবর কিংবা পেশ হয়, সেসময় 'রা' অক্ষর পোর পড়তে হয়। যেমন– رُزِقُوْا ۔ رَسُوْلٌ ইত্যাদি।

খ. যেসময় 'রা' অক্ষর সাকিন হয় এবং তার ডানের অক্ষরে যবর কিংবা পেশ থাকে, সেসময় ر অক্ষরকে পোর পড়তে হবে। যেমন– قَرْيَةٌ ۔ قِرْبَانًا ইত্যাদি।

গ. যেসময় 'রা' অক্ষর সাকিন হয় এবং তার পূর্বাক্ষরে যের থাকে, সেসময় 'রা' অক্ষরের পরে হুরুফে মুস্তালিয়া আসলে তখন সেই 'রা' অক্ষরকে পোর পড়তে হবে। যথা– فِرْقَة ۔ مِرْصَاد ۔ قِرْطَاس ইত্যাদি। হুরূফে মুস্তালিয়া ৭টি। যেমন– خُصَّ ضَغَطٍ قِظْ

ঘ. যদি 'রা' অক্ষর সাকিন হয় এবং তার ডানের অক্ষরে কাসরায়ে আরেযী থাকে, তবে সে 'রা' অক্ষরকে পোর পড়তে হবে। যেমন– اِنِ ارْتَبْتُمْ ۔ اَمِر ارْتَابُوْا ইত্যাদি।

কাসরায়ে আরেযী অর্থ– নকল যের, অর্থাৎ যে যের আগে ছিল না, কিন্তু শব্দকে ব্যাকরণমতে সহজ করার জন্য পরে দেওয়া হয়েছে, তাকে কাসরায়ে আরেযী বলে।

ঙ. যে 'রা' অক্ষরের মধ্যে ওয়াকফ করা হয়, সে 'রা' অক্ষরের ডানে ইয়া ى অক্ষর ব্যতীত অন্য কোনো অক্ষর সাকিন হলে সেই সাকিন অক্ষরের পূর্বাক্ষরে যবর কিংবা পেশ হলেও সেই 'রা' অক্ষরকে পোর পড়তে হবে। যেমন– اَلْقَدْرُ ۔ تُرْجَعُ الْاُمُوْرُ ۔ شَهْرٌ ইত্যাদি।

২. **'রা'-কে বারিক উচ্চারণের নিয়মাবলি :** বারিক অর্থ– পাতলা বা ক্ষীণ, অর্থাৎ কোনো অক্ষরকে পাতলা বা ক্ষীণ করে পড়াকে বারিক উচ্চারণ বলে 'রা' অক্ষর বারিক পড়ার অত্যন্ত প্রয়োজনীয় চারটি স্থান রয়েছে। যথা–

ক. যদি 'রা' অক্ষরের নিচে যের থাকে, তবে সে 'রা' অক্ষর বারিক পড়তে হয়। যেমন– رِزْقًا ۔ رِجَالٌ ইত্যাদি।

খ. যদি 'রা' অক্ষর সাকিন হয় এবং সে 'রা' অক্ষরের ডানের অক্ষরে যের থাকে, তবে সে 'রা' অক্ষর বারিক পড়তে হবে। যেমন– مِرْيَةٌ ۔ فِرْعَوْن ইত্যাদি।

গ. যে সময় 'রা' অক্ষরের মধ্যে ওয়াকফ করা হয়, সেসময় 'রা' অক্ষরের ডানে ইয়া (ى) সাকিন থাকলে সে 'রা' অক্ষরও বারিক পড়তে হবে। যেমন– خَيْر ۔ خَبِيْر ۔ سَعِيْر ইত্যাদি।

ঘ. 'রা' অক্ষর ব্যতীত অন্য কোনো অক্ষর সাকিন হলে সে সাকিন অক্ষরের পূর্বাক্ষরের নিচে যের থাকলে সেসময়েও 'রা' অক্ষর বারিক পড়তে হবে। যেমন– ذِكْر ۔ شِعر ۔ حِجْر ۔ عَيْن الْقِطْر ইত্যাদি।

সমাপনী : কুরআন মাজীদ সুন্দর উচ্চারণের ক্ষেত্রে 'রা' বর্ণ পোর ও বারিক পড়ার গুরুত্ব অপরিসীম। এজন্য কুরআন মাজীদ তেলাওয়াতের সময় এ বিষয়ে সজাগ থাকা জরুরি।

مجموعة (ب)

الدرجات : ٢٠

■ السؤال (٣) : اكتب من حفظك اثنين من السور التالية : ١٠ × ٢ = ٢٠

(الف) سورة الانفطار؛

সূরা আল ইনফিতার : سُوْرَةُ الْاِنْفِطَار

মক্কায় অবতীর্ণ, আয়াত : ১৯, রুকু : ১

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ

اِذَا السَّمَاءُ انْفَطَرَتْ ـ (١) وَاِذَا الْكَوَاكِبُ انْتَثَرَتْ ـ (٢) وَاِذَا الْبِحَارُ فُجِّرَتْ ـ (٣) وَاِذَا الْقُبُوْرُ بُعْثِرَتْ ـ (٤) عَلِمَتْ نَفْسٌ مَّا قَدَّمَتْ وَاَخَّرَتْ ـ (٥) يٰاَيُّهَا الْاِنْسَانُ مَا غَرَّكَ بِرَبِّكَ الْكَرِيْمِ ـ (٦) الَّذِىْ خَلَقَكَ فَسَوّٰكَ فَعَدَلَكَ ـ (٧) فِىْ اَىِّ صُوْرَةٍ مَّا شَاءَ رَكَّبَكَ ـ (٨) كَلَّا بَلْ تُكَذِّبُوْنَ بِالدِّيْنِ ـ (٩) وَاِنَّ عَلَيْكُمْ لَحٰفِظِيْنَ ـ (١٠) كِرَامًا كَاتِبِيْنَ ـ (١١) يَعْلَمُوْنَ مَا تَفْعَلُوْنَ ـ (١٢) اِنَّ الْاَبْرَارَ لَفِىْ نَعِيْمٍ ـ (١٣) وَاِنَّ الْفُجَّارَ لَفِىْ جَحِيْمٍ ـ (١٤) يَصْلَوْنَهَا يَوْمَ الدِّيْنِ ـ (١٥) وَمَا هُمْ عَنْهَا بِغَائِبِيْنَ ـ (١٦) وَمَا اَدْرٰكَ مَا يَوْمُ الدِّيْنِ ـ (١٧) ثُمَّ مَا اَدْرٰكَ مَا يَوْمُ الدِّيْنِ ـ (١٨) يَوْمَ لَا تَمْلِكُ نَفْسٌ لِّنَفْسٍ شَيْئًا ط وَالْاَمْرُ يَوْمَئِذٍ لِّلّٰهِ ـ (١٩) [ফা. অনার্স প. ২০২০]

(ب) سورة الطارق؛

সূরা আত তারিক : سُوْرَةُ الطَّارِق

মক্কায় অবতীর্ণ, আয়াত : ১৭, রুকু : ১

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ

وَالسَّمَاءِ وَالطَّارِقِ ـ (١) وَمَا اَدْرٰكَ مَا الطَّارِقُ ـ (٢) النَّجْمُ الثَّاقِبُ ـ (٣) اِنْ كُلُّ نَفْسٍ لَّمَّا عَلَيْهَا حَافِظٌ ـ (٤) فَلْيَنْظُرِ الْاِنْسَانُ مِمَّ خُلِقَ ـ (٥) خُلِقَ مِنْ مَّاءٍ دَافِقٍ ـ (٦) يَّخْرُجُ مِنْ م بَيْنِ الصُّلْبِ وَالتَّرَائِبِ ـ (٧) اِنَّهٗ عَلٰى رَجْعِهٖ لَقَادِرٌ ـ (٨) يَوْمَ تُبْلَى السَّرَائِرُ ـ (٩) فَمَا لَهٗ مِنْ قُوَّةٍ وَّلَا نَاصِرٍ ـ (١٠) وَالسَّمَاءِ ذَاتِ الرَّجْعِ ـ (١١) وَالْاَرْضِ ذَاتِ الصَّدْعِ ـ (١٢) اِنَّهٗ لَقَوْلٌ فَصْلٌ ـ (١٣) وَّمَا هُوَ بِالْهَزْلِ ـ (١٤) اِنَّهُمْ يَكِيْدُوْنَ كَيْدًا ـ (١٥) وَّاَكِيْدُ كَيْدًا ـ (١٦) فَمَهِّلِ الْكٰفِرِيْنَ اَمْهِلْهُمْ رُوَيْدًا ـ (١٧) [ফা. অনার্স প. ২০১৬, '১৯]

(ج) سورة الزلزال؛

সূরা আয যিলযাল : سُوْرَةُ الزِّلْزَال

মদিনায় অবতীর্ণ, আয়াত : ৮, রুকু : ১

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ

اِذَا زُلْزِلَتِ الْاَرْضُ زِلْزَالَهَا ـ (١) وَاَخْرَجَتِ الْاَرْضُ اَثْقَالَهَا ـ (٢) وَقَالَ الْاِنْسَانُ مَا لَهَا ـ (٣) يَوْمَئِذٍ تُحَدِّثُ اَخْبَارَهَا ـ (٤) بِاَنَّ رَبَّكَ اَوْحٰى لَهَا ـ (٥) يَوْمَئِذٍ يَّصْدُرُ النَّاسُ اَشْتَاتًا لا لِّيُرَوْا اَعْمَالَهُمْ ـ (٦) فَمَنْ يَّعْمَلْ مِثْقَالَ ذَرَّةٍ خَيْرًا يَّرَهٗ ـ (٧) وَمَنْ يَّعْمَلْ مِثْقَالَ ذَرَّةٍ شَرًّا يَّرَهٗ ـ (٨) [ফা. অনার্স প. ২০১৭, '১৮, '২১]

(د) سورة الليل ـ

সূরা আল লাইল : سُوْرَةُ اللَّيْل

মক্কায় অবতীর্ণ, আয়াত : ২১, রুকু : ১

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ

وَالَّيْلِ اِذَا يَغْشٰى ـ (١) وَالنَّهَارِ اِذَا تَجَلّٰى ـ (٢) وَمَا خَلَقَ الذَّكَرَ وَالْاُنْثٰى ـ (٣) اِنَّ سَعْيَكُمْ لَشَتّٰى ـ (٤) فَاَمَّا مَنْ اَعْطٰى وَاتَّقٰى ـ (٥) وَصَدَّقَ بِالْحُسْنٰى ـ (٦) فَسَنُيَسِّرُهٗ لِلْيُسْرٰى ـ (٧) وَاَمَّا مَنْ م بَخِلَ وَاسْتَغْنٰى ـ (٨) وَكَذَّبَ بِالْحُسْنٰى ـ (٩) فَسَنُيَسِّرُهٗ لِلْعُسْرٰى ـ (١٠) وَمَا يُغْنِىْ عَنْهُ مَالُهٗ اِذَا تَرَدّٰى ـ (١١) اِنَّ عَلَيْنَا لَلْهُدٰى ـ (١٢) وَاِنَّ لَنَا لَلْاٰخِرَةَ وَالْاُوْلٰى ـ (١٣) فَاَنْذَرْتُكُمْ نَارًا تَلَظّٰى ـ (١٤) لَا يَصْلٰهَا اِلَّا الْاَشْقَى ـ (١٥) الَّذِىْ كَذَّبَ وَتَوَلّٰى ـ (١٦) وَسَيُجَنَّبُهَا الْاَتْقَى ـ (١٧) الَّذِىْ يُؤْتِىْ مَالَهٗ يَتَزَكّٰى ـ (١٨) وَمَا لِاَحَدٍ عِنْدَهٗ مِنْ نِّعْمَةٍ تُجْزٰى ـ (١٩) اِلَّا ابْتِغَاءَ وَجْهِ رَبِّهِ الْاَعْلٰى ـ (٢٠) وَلَسَوْفَ يَرْضٰى ـ (٢١)

(ه) سورة العلق؛

সূরা আল আলাক : سُوْرَةُ الْعَلَقِ

মক্কায় অবতীর্ণ, আয়াত : ১৯, রুকু : ১

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ

اِقْرَأْ بِاسْمِ رَبِّكَ الَّذِىْ خَلَقَ ـ (١) خَلَقَ الْاِنْسَانَ مِنْ عَلَقٍ ـ (٢) اِقْرَأْ وَرَبُّكَ الْاَكْرَمُ ـ (٣) الَّذِىْ عَلَّمَ بِالْقَلَمِ ـ (٤) عَلَّمَ الْاِنْسَانَ مَا لَمْ يَعْلَمْ ـ (٥) كَلَّا اِنَّ الْاِنْسَانَ لَيَطْغٰى ـ (٦) اَنْ رَّاٰهُ اسْتَغْنٰى ـ (٧) اِنَّ اِلٰى رَبِّكَ الرُّجْعٰى ـ (٨) اَرَءَيْتَ الَّذِىْ يَنْهٰى ـ (٩) عَبْدًا اِذَا صَلّٰى ـ (١٠) اَرَءَيْتَ اِنْ كَانَ عَلَى الْهُدٰى ـ (١١) اَوْ اَمَرَ بِالتَّقْوٰى ـ (١٢) اَرَءَيْتَ اِنْ كَذَّبَ وَتَوَلّٰى ـ (١٣) اَلَمْ يَعْلَمْ بِاَنَّ اللّٰهَ يَرٰى ـ (١٤) كَلَّا لَئِنْ لَّمْ يَنْتَهِ ۙ لَنَسْفَعًا ۢ بِالنَّاصِيَةِ ـ (١٥) نَاصِيَةٍ كٰذِبَةٍ خَاطِئَةٍ ـ (١٦) فَلْيَدْعُ نَادِيَهٗ ـ (١٧) سَنَدْعُ الزَّبَانِيَةَ ـ (١٨) كَلَّا ؕ لَا تُطِعْهُ وَاسْجُدْ وَاقْتَرِبْ ـ (١٩) [ফা. অনার্স প. ২০২০]

(و) سورة الضحى؛

সূরা আদ দোহা : سُوْرَةُ الضُّحٰى

মক্কায় অবতীর্ণ, আয়াত : ১১, রুকু : ১

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ

وَالضُّحٰى ـ (١) وَالَّيْلِ اِذَا سَجٰى ـ (٢) مَا وَدَّعَكَ رَبُّكَ وَمَا قَلٰى ـ (٣) وَلَلْاٰخِرَةُ خَيْرٌ لَّكَ مِنَ الْاُوْلٰى ـ (٤) وَلَسَوْفَ يُعْطِيْكَ رَبُّكَ فَتَرْضٰى ـ (٥) اَلَمْ يَجِدْكَ يَتِيْمًا فَاٰوٰى ـ (٦) وَوَجَدَكَ ضَالًّا فَهَدٰى ـ (٧) وَوَجَدَكَ عَائِلًا فَاَغْنٰى ـ (٨) فَاَمَّا الْيَتِيْمَ فَلَا تَقْهَرْ ـ (٩) وَاَمَّا السَّائِلَ فَلَا تَنْهَرْ ـ (١٠) وَاَمَّا بِنِعْمَةِ رَبِّكَ فَحَدِّثْ ـ (١١) [ফা. অনার্স প. ২০১৭, '১৯, '২০]

مجموعة (ج)

الدرجات : ٣٠

■ السؤال (٤) : ترجم اثنين من النصوص القرانية وأجب عن الاسئلة الملحقة بها : ١٥ × ٢ = ٣٠

(الف) الهكم التكاثر ـ حتى زرتم المقابر ـ كلا سوف تعلمون ـ ثم كلا سوف تعلمون ـ كلا لو تعلمون عِلْمُ اليقين ـ لترون الجحيم ـ ثم لترونها عين اليقين ـ ثم لتسئلن يومئذ عن النعيم ـ

- **আয়াতসমূহের অনুবাদ :** আল্লাহ তায়ালা বলেন– ১. প্রাচুর্যের লালসা তোমাদেরকে গাফেল রাখে, ২. এমনকি তোমরা কবরস্থানে পৌঁছে যাও। ৩. এটা কখনো উচিত নয়। তোমরা সত্বরই জেনে নেবে। ৪. অতঃপর এটা কখনো উচিত নয়। তোমরা সত্বরই জেনে নেবে। ৫. কখনোই নয়; যদি তোমরা নিশ্চিত জানতে। ৬. তোমরা অবশ্যই জাহান্নাম দেখবে। ৭. অতঃপর তোমরা তা অবশ্যই দেখবে দিব্য প্রত্যয়ে। ৮. এরপর অবশ্যই সেদিন তোমরা নেয়ামত সম্পর্কে জিজ্ঞাসিত হবে।

١ـ حلل الكلمات الاتية : التكاثر ـ لترون ـ لتسئلن ـ تعلمون ـ

▸▸ প্রশ্ন : ১ ॥ নিচের শব্দগুলো বিশ্লেষণ কর : التكاثر ـ لترون ـ لتسئلن ـ تعلمون ـ

উত্তর ॥ **শব্দগুলোর বিশ্লেষণ :**

(১) **তাহকীক :**

اَلتَّكَاثُرُ : এটি বাবে تَفَاعُل-এর মাসদার। মাদ্দাহ ك ـ ث ـ ر জিনসে صَحِيْح অর্থ– সম্পদ ও জনবলের প্রাচুর্যে প্রতিযোগিতা করা। ধনসম্পদ ও মানবমর্যাদার জন্য একে অপরের সাথে ঝগড়া বা বাদানুবাদ করা।

لَتَرَوُنَّ : সীগাহ جَمْع مُذَكَّر حَاضِر বাহাস فِعْل مُسْتَقْبِل مَعْرُوْف ثَقِيْلَة تَاكِيْد بَانُوْن لَام تَاكِيْد বাবে فتح মাসদার الرؤية মাদ্দাহ ر ـ ء ـ ى জিনসে مُرَكَّب (نَاقِص يَائِى ও مَهْمُوْز عَيْن) অর্থ– তোমরা অবশ্যই (দোজখ) দেখবে।

لَتُسْئَلُنَّ : সীগাহ جَمْع مُذَكَّر حَاضِر বাহাস فِعْل مُسْتَقْبِل مجهول ثَقِيْلَة تَأْكِيْد وَنُوْن تَأْكِيْد لَامْ বাবে فَتَحَ মাসদার اَلسُّؤَالُ মাদ্দাহ س ـ ل أ জিনসে مَهْمُوْز عَيْن অর্থ– তোমরা অবশ্যই জিজ্ঞাসিত হবে।

تَعْلَمُوْنَ : সীগাহ جَمْع مُذَكَّر حَاضِر বাহাস فِعْل مُضَارِع مَعْرُوْف اِثْبَات বাবে سَمِعَ মাসদার اَلْعِلْمُ মাদ্দাহ ع ـ ل ـ م জিনসে صَحِيْح অর্থ– তোমরা জানবে।

٢- اكتب شأن نزول هذه السورة-

▶▶ প্রশ্ন : ২ ॥ সূরা আত তাকাসুর-এর অবতীর্ণের প্রেক্ষাপট বর্ণনা কর।

উত্তর ॥ সূরা আত তাকাসুর-এর অবতীর্ণের প্রেক্ষাপট/শানে নুযূল : সূরা আত তাকাসুর-এর শানে নুযূল বর্ণনায় একাধিক বর্ণনা পরিলক্ষিত হয়। যেমন–

১. হজরত আবু হোরায়রা (রা) হতে বর্ণিত, একদা আবদে মানাফ এবং বনু সাহম গোত্রদ্বয়ের মাঝে পরস্পরের উচ্চমর্যাদা, গর্ব অহংকার ও সংখ্যাধিক্য নিয়ে বিবাদ বাঁধে। এ বিবাদে আবদে মানাফ গোত্র বিজয় লাভ করে। অপরদিকে বনু সাহম গোত্র বিপরীতপক্ষের বিজয় মেনে নিতে পারল না। এসব কারণে বনু সাহম বলল, আমাদের সম্প্রদায়ের বহু খ্যাতিসম্পন্ন ও সম্ভ্রান্ত লোক মৃত্যুবরণ করায় এখন কবরে রয়েছে। তখন মৃতদেরকে গণনার জন্য উভয় গোত্র কবরস্থানে উপনীত হয় এবং একপর্যায়ে বনু সাহম গোত্র বিজয়ী হয়। তাদের এহেন অহমিকা ও দাম্ভিকতার অসারতা উপস্থাপনের জন্যই আল্লাহ তায়ালা অত্র সূরা নাযিল করেন।

২. হজরত ইবনে বোরায়দা (রা) হতে বর্ণিত আছে, আনসারদের দুটি গোত্র ধনসম্পদ, প্রাচুর্য ও নেতৃত্ব কর্তৃত্ব নিয়ে পরস্পর গর্ব করত। এক গোত্র অপর গোত্রকে বলত, আমাদের মধ্যে অমুক অমুক খ্যাতিমান লোক রয়েছে। দ্বিতীয় গোত্রটিও অনুরূপ প্রাচুর্য, নেতৃত্ব ইত্যাদি নিয়ে গৌরব প্রদর্শন করত। একপর্যায়ে তারা কবরস্থানে গেল এবং একটি গোত্র বলল, দেখ, আমাদের গোত্রের অমুক অমুক সর্দারের সমাধি। দ্বিতীয় গোত্রও অনুরূপ বলল। তখন আল্লাহ তায়ালা আলোচ্য সূরাটি নাযিল করেন।

(ب) الم نشرح لك صدرك - ووضعنا عنك وزرك - الذى انقض ظهرك - ورفعنا لك ذكرك - فان مع العسر يسرا - ان مع العسر يسرا - فاذا فرغت فانصب - والى ربك فارغب-

- **আয়াতসমূহের অনুবাদ :** আল্লাহ তায়ালা বলেন– ১. আমি কি আপনার বক্ষ উন্মুক্ত করে দেইনি? ২. আমি লাঘব করেছি আপনার বোঝা। ৩. যা ছিল আপনার জন্য অতিশয় দুঃসহ। ৪. আমি আপনার আলোচনাকে সমুচ্চ করেছি। ৫. অতঃপর নিশ্চয় কষ্টের সাথে স্বস্তি রয়েছে। ৬. নিশ্চয় কষ্টের সাথে স্বস্তি রয়েছে। ৭. অতএব, যখন অবসর পান পরিশ্রম করুন। ৮. আর আপনার পালনকর্তার প্রতি মনোনিবেশ করুন।

١- حلل الكلمات الاتية : نشرح - انقض - رفعنا - فانصب-

▶▶ প্রশ্ন : ১ ॥ নিচের শব্দগুলো বিশ্লেষণ কর : نشرح - انقض - رفعنا - فانصب-

উত্তর ॥ শব্দগুলোর বিশ্লেষণ :

(১) **তাহকীক :**

نَشْرَحْ : সীগাহ جَمْع مُتَكَلِّم বাহাস مُسْتَقْبِل مَعْرُوْف نَفِىْ جَحَد بَلَم فِعْل বাবে فَتَحَ মাসদার اَلشَّرْحُ মাদ্দাহ ش - ر - ح জিনসে صَحِيْح অর্থ– আমি কি প্রসারিত করে দেইনি?

اَنْقَضَ : সীগাহ وَاحِد مُذَكَّر غَائِب বাহাস اِثْبَات فِعْل مَاضِىْ مَعْرُوْف বাবে نَصَرَ মাসদার اَلنَّقْضُ মাদ্দাহ ن - ق - ض জিনসে صَحِيْح অর্থ– ভেঙে দিচ্ছিল। اَنْقَضَ ظَهْرَكَ তথা আপনার পিঠ ভেঙে দিচ্ছিল– এটি একটি আরবি বাগধারা। এর অর্থ– অতিশয় কষ্ট দিচ্ছিল।

رَفَعْنَا : সীগাহ جَمْع مُتَكَلِّم বাহাস اِثْبَات فِعْل مَاضِى مَعْرُوْف বাবে فَتَحَ মাসদার اَلرَّفْعُ মাদ্দাহ ر - ف - ع জিনসে صَحِيْح অর্থ– আমরা সুউচ্চে পৌঁছিয়েছি।

اِنْصَبْ : সীগাহ وَاحِد مُذَكَّر حَاضِر বাহাস اَمَر حَاضِر مَعْرُوْف বাবে سَمِعَ মাসদার اَلنَّصْبُ মাদ্দাহ ن - ص - ب জিনসে صَحِيْح অর্থ– একান্তে ইবাদত করুন। এতে ইঙ্গিত রয়েছে, ইবাদত ও যিকর এতটুকু করা উচিত, যাতে কিছু কষ্ট এবং ক্লান্তিও অনুভূত হয়। আরাম পর্যন্ত সীমিত রাখা উচিত নয়।

٢- كيف شرح الله صدر النبى صلى الله عليه وسلم؟ بين بالايضاح-

▶▶ প্রশ্ন : ২ ॥ রাসূলুল্লাহ (স)-এর বক্ষবিদীর্ণ করার দ্বারা উদ্দেশ্য কী?

উত্তর ॥ রাসূল (স)-এর বক্ষবিদীর্ণ দ্বারা উদ্দেশ্য : আল্লাহ তায়ালার অসীম অনুগ্রহে রাসূল (স)-এর বক্ষবিদীর্ণ করা হয়েছিল। এ বক্ষবিদীর্ণকরণ দু'উদ্দেশ্যে দু'ভাবে হয়েছিল। যেমন–

১. **দৈহিক বক্ষবিদীর্ণকরণ :** দৈহিকভাবে দু'বার রাসূল (স)-এর বক্ষ বিদীর্ণ করা হয়েছিল। যথা–

ক. যখন রাসূল (স)-এর বয়স চার বছর, তখন তিনি হজরত হালিমা (রা)-এর প্রতিপালনে ছিলেন। একদিন শিশু মুহাম্মাদ অন্যান্য শিশুর সাথে খেলাধুলা করছিলেন। এমন সময় জিবরাঈল এসে রাসূল (স)-এর বক্ষ বিদীর্ণ করে তাঁর হৃদয়কে সোনার তশতরিতে রেখে যমযমের পানি দ্বারা ধৌত করে দিয়ে গেলেন। হজরত আনাস ও আবদুল্লাহ ইবনে আব্বাস (রা) বলেন, আলোচ্য আয়াতে এ شَرْحُ الصَّدْرِ তথা বক্ষবিদীর্ণকেই বোঝানো হয়েছে।

খ. রাসূল (স)-এর বয়স যখন ২০ বছর, তখন তাঁর দ্বিতীয়বার বক্ষবিদীর্ণ করা হয়। হজরত জিবরাঈল ও মিকাঈল (আ) এ কাজে অংশ নেন। একজন যমযম কূপের পানি আনেন এবং অন্যজন রাসূল (স)-এর হৃদয় ধৌত করেন। এক্ষেত্রে রাসূল (স)-এর দেহ থেকে রক্তও বের হয়নি এবং তিনি কোনো কষ্টও অনুভব করেননি। মহানবী (স)-এর হৃদয় ধৌত করার পর তাঁর অন্তর থেকে সব হিংসাবিদ্বেষ দূরীভূত হয় এবং একটি রৌপ্য পিণ্ড আকারে তাঁর অন্তরে ভালোবাসা প্রবিষ্ট করানো হয়। অত্র আয়াতে شَرْحُ الصَّدْرِ তথা বক্ষবিদীর্ণ দ্বারা এটাও উদ্দেশ্য হতে পারে।

মোটকথা, আল্লাহ তায়ালা আলোচ্য আয়াতে বক্ষবিদীর্ণ বলতে বিশেষভাবে কোনো একটি অথবা সবগুলোকে উদ্দেশ্য করেছেন।

২. **আত্মিক বক্ষবিদীর্ণকরণ :** আত্মিক বক্ষবিদীর্ণকরণও দু'বার হয়েছিল। যথা–

ক. রাসূল (স) নবুয়তপ্রাপ্তির পূর্বে সৎপথের সন্ধান জানতেন না। সে কারণে রাসূল সর্বদা সংকোচের মধ্যে থাকতেন। যেমন আল্লাহ তায়ালা বলেন– مَا كُنْتَ تَدْرِىْ مَا الْكِتٰبُ وَلَا الْاِيْمَانُ অতঃপর আল্লাহ তায়ালা তাঁকে নবুয়ত দানের মাধ্যমে জড়তার দ্বার উন্মোচন করত তাঁর অন্তর প্রসারিত করে দিলেন। তিনি আত্মিকভাবে হয়ে উঠলেন জ্ঞানবিজ্ঞান আর উত্তম চরিত্রের এক মহাসাগর।

খ. রাসূল (স)-এর নবুয়তপ্রাপ্তির পর আল্লাহ তায়ালা অদম্য সাহস, ধৈর্য, দৃঢ়তা, সত্যের পক্ষে বলিষ্ঠ কণ্ঠস্বর দানের মাধ্যমে তাঁর অন্তর প্রসারিত করে তোলেন।

সারকথা, আল্লাহ তায়ালা দৈহিক ও আত্মিকভাবে রাসূল (স)-এর বক্ষ উন্মুক্ত ও সম্প্রসারিত করেছেন। এ বক্ষ উন্মোচনের পর তাঁর দেহ বিশুদ্ধ, নির্মল এবং হৃদয় সমুজ্জ্বল ও জ্যোতিপূর্ণ হয়েছিল।

(ج) لا يصلها الا الاشقى - الذى كذب وتولى - وسيجنبها الاتقى - الذى يؤتى ماله يتزكى - وما لاحد عنده من نعمة تجزى - الا ابتغاء وجه ربه الاعلى - ولسوف يرضى -

- **আয়াতসমূহের অনুবাদ :** ১৫. এতে নিতান্ত হতভাগ্য ব্যক্তিই প্রবেশ করবে। ১৬. যে মিথ্যারোপ করে ও মুখ ফিরিয়ে নেয়। ১৭. এ থেকে দূরে রাখা হবে আল্লাহভীরু ব্যক্তিকে। ১৮. যে আত্মশুদ্ধির জন্য তার ধনসম্পদ দান করে। ১৯. এবং তার ওপর কারও কোনো প্রতিদানযোগ্য অনুগ্রহ থাকে না। ২০. তার মহান পালনকর্তার সন্তুষ্টি অন্বেষণ ব্যতীত। ২১. সে সত্বরই সন্তুষ্টি লাভ করবে।

১- حلل الكلمات الاتية : الاشقى - كذب - يؤتى - تجزى -

▶▶ প্রশ্ন : ১ ॥ নিচের শব্দগুলো বিশ্লেষণ কর : الاشقى - كذب - يؤتى - تجزى -

॥ শব্দগুলোর বিশ্লেষণ :

(১) **তাহকীক :**

اَلْاَشْقٰى : وَاحِد مُذَكَّر বাহাস اِسْم تَفْضِيْل বাবে سَمِعَ মাসদার اَلشَّقَاوَة মাদ্দাহ ش - ق - ى জিনসে نَاقِص وَاوِى অর্থ– নিতান্ত হতভাগা, দুর্ভাগা।

كَذَّبَ : সীগাহ وَاحِد مُذَكَّر غَائِب বাহাস اِثْبَات فِعْل مَاضِى مَعْرُوْف বাবে تَفْعِيْل মাসদার اَلتَّكْذِيْبُ মাদ্দাহ ك - ذ - ب জিনসে صَحِيْح অর্থ– সে মিথ্যারোপ করেছে।

يُؤْتِىْ : সীগাহ وَاحِد مُذَكَّر غَائِب বাহাস اِثْبَات فِعْل مُضَارِع مَعْرُوْف বাবে اِفْعَال মাসদার اَلْاِيْتَاءُ মাদ্দাহ أ - ت - ى জিনসে مُرَكَّب অর্থ– সে দান করে, প্রদান করে।

تُجْزٰى : সীগাহ وَاحِد مُؤَنَّث غَائِب বাহাস اِثْبَات فِعْل مُضَارِع مَجْهُوْل বাবে ضَرَبَ يَضْرِبُ মাসদার اَلْجَزَاءُ মাদ্দাহ ج - ز - ى জিনসে ناقص يائى অর্থ– তার প্রতিদান দিতে হয়।

২- من الاشقى؟ اذكر صفاته فى ضوء هذه الايات الكريمة -

▶▶ প্রশ্ন : ২ ॥ الأشقى তথা বড় হতভাগা-এর পরিচয় কী? অত্র আয়াতে কারীমার আলো الأشقى-এর বৈশিষ্ট্য আলোচনা কর।

উত্তর।। اَلْاَشْقٰى-এর পরিচয় : اَلْاَشْقٰى তথা বড় হতভাগা। এর পরিচয় সম্পর্কে মুফাসসিরগণ বলেন– اَلْاَشْقٰى يُشِيْرُ اِلَى الشَّخْصِ الشَّقِىِّ الَّذِىْ يَتَجَنَّبُ الذِّكْرٰى وَيَدْخُلُ النَّارَ অর্থাৎ, اَلْاَشْقٰى দ্বারা এমন হতভাগা ব্যক্তিকে বোঝানো হয় যে উপদেশ গ্রহণ থেকে দূরে থাকে এবং জাহান্নামে প্রবেশ করে।

আল্লামা বায়যাভী (র) বলেন, اَلْاَشْقٰى তথা বড় হতভাগা দ্বারা কাফের উদ্দেশ্য। কারণ মুমিন ফাসেক ব্যক্তি জাহান্নামে প্রবেশ করলেও চিরকাল থাকবে না।

অত্র আয়াতে কারীমার আলোকে اَلْاَشْقٰى-এর বৈশিষ্ট্য : এই আয়াতে কারীমায় আল্লাহ তায়ালা اَلْاَشْقٰى-এর বৈশিষ্ট্য বর্ণনা করে বলেন– اَلَّذِىْ كَذَّبَ وَتَوَلّٰى অর্থাৎ, যে ব্যক্তি রাসূলগণকে অস্বীকার করে এবং ঈমান থেকে মুখ ফিরিয়ে নেয়। আল্লামা বায়যাভী (র) বলেন– اَلَّذِىْ كَذَّبَ الْحَقَّ وَاَعْرَضَ عَنِ الطَّاعَةِ অর্থাৎ, যে ব্যক্তি হক অস্বীকার করে এবং আনুগত্য থেকে মুখ ফিরিয়ে নেয়।

(د) والعصر - ان الانسان لفى خسر - الا الذين امنوا وعملوا الصلحت - وتواصوا بالحق - وتواصوا بالصبر -

আয়াতসমূহের অনুবাদ : আল্লাহ তায়ালা বলেন– ১. শপথ যুগের (সময়ের)। ২. নিশ্চয় মানুষ ক্ষতিগ্রস্ত। ৩. কিন্তু তারা নয়, যারা বিশ্বাস স্থাপন করে ও সৎকর্ম করে এবং পরস্পরকে তাকিদ করে সত্যের এবং তাকিদ করে ধৈর্যের।

১- حلل الكلمات الاتية : خسر - الصلحت - تواصوا - الصبر -

▶▶ প্রশ্ন : ১ ॥ নিচের শব্দগুলো বিশ্লেষণ কর : خسر - الصلحت - تواصوا - الصبر -

॥ শব্দগুলোর বিশ্লেষণ :

(১) **তাহকীক :**

خُسْرٌ : এটি বাবে سَمِعَ-এর মাসদার। অন্য মাসদার হলো اَلْخَسَارُ ও اَلْخُسْرَانُ - اَلْخَسَارَةُ মাদ্দাহ خ - س - ر জিনসে صَحِيْح অর্থ– ক্ষতি। উল্লেখ্য, কখনো خَسَارَة-এর সম্পর্ক মানুষের দিকে করা হয়। যেমন বলা হয়, অমুকের ক্ষতি হয়েছে, অমুক ক্ষতিগ্রস্ত হয়েছে। আবার কখনো কর্মের দিকে করা হয়।

اَلصّٰلِحٰتُ : এটি বহুবচন, একবচন– صَالِحَةٌ; অর্থ– সৎকর্ম। শব্দটি আল কুরআনের শুধু এক স্থানে 'পুণ্যবতী মহিলাগণ' অর্থে ব্যবহার হয়েছে। যেমন– اَلصّٰلِحٰتُ قٰنِتٰتٌ; এছাড়া অন্যসব স্থানে এটি সৎকর্ম অর্থে ব্যবহার হয়েছে।

تَوَاصَوْا : সীগাহ جَمْع مُذَكَّر غَائِب বাহাস اِثْبَات فِعْل مَاضِى مَعْرُوْف বাবে تَفَاعُل মাসদার اَلتَّوَاصِى মাদ্দাহ و - ص - ى জিনসে لَفِيْف مَفْرُوْق অর্থ– তারা পরস্পর একে অন্যকে উপদেশ দেয়।

اَلصَّبْرُ : শব্দটি বাবে ضَرَبَ-এর মাসদার। এর অর্থ– ধৈর্য, সহ্য, বিপদে স্থির থাকা। ইমাম রাগেব (র) বলেন, صَبْر-এর অর্থ ধৈর্য, সহ্য, বিপদে স্থির থাকা, নিজের মনকে এমন জিনিসের থেকে রক্ষা করা যাতে বুদ্ধি ও শরীয়তের দাবি রয়েছে অথবা বিবেক ও শরীয়ত যেসব কথা ও কাজ থেকে বিরত রাখার দাবি করে, তার থেকে বিরত থাকাকে صَبْر তথা ধৈর্য বলা হয়।

٢- اكتب شأن نزول هذه السورة-

▶▶ প্রশ্ন : ২ ॥ সূরা আল আসর-এর অবতীর্ণের প্রেক্ষাপট বর্ণনা কর।

উত্তর ॥ **সূরা আল আসর-এর অবতীর্ণের প্রেক্ষাপট/শানে নুযূল :** জাহেলী যুগে হজরত আবু বকর সিদ্দীক (রা)-এর সাথে কালাদা ইবনে উসায়েদ-এর ঘনিষ্ঠ সম্পর্ক ছিল। কালাদা প্রায়ই তাঁর নিকট যাতায়াত করত। আবু বকর (রা) ঈমান গ্রহণের পর একদিন কালাদা তাঁর নিকট এসে বলল, হে আবু বকর! তোমার কি মাথা খারাপ হয়ে গেছে? ব্যবসায় বাণিজ্যে তো ভাটা লেগেছে। আয় রোজগারের পথ তো প্রায় বন্ধ। তুমি কোন ধ্যানধারণায় নিমজ্জিত হয়েছ। পূর্বপুরুষদের ধর্মকর্ম ছেড়েছ এবং দুনিয়াও হারিয়েছ। তুমি উভয় দিক দিয়েই ক্ষতিতে নিপতিত।

জবাবে হজরত আবু বকর (রা) বললেন, হে নির্বোধ! যে লোক আল্লাহ তায়ালা ও তাঁর রাসূলের গোলাম হয়ে যায়, সে কখনো ক্ষতিগ্রস্ত হয় না। যারা পরকাল সম্পর্কে কোনোই চিন্তাভাবনা করে না, মূলত তারাই ক্ষতিগ্রস্ত; তারাই লোকসানে নিপতিত। যারা কেবল জাগতিক উন্নতি লাভের জন্যই সদা চিন্তামগ্ন ও ব্যস্ত থাকে, তারাই একূল ওকূল উভয় কূল হারায়। হজরত আবু বকর (রা)-এর কথার সত্যতা প্রমাণ এবং এ ঘটনাকে উপলক্ষ্য করে আলোচ্য সূরা অবতীর্ণ হয়।

■ أو- ترجم اثنين من النصوص القرانية وأجب عن الاسئلة الملحقة :

(الف) والعصر- ان الانسان لفى خسر- الا الذين امنوا وعملوا الصلحت وتواصوا بالحق- وتواصوا بالصبر-

١- فسر قوله تعالى "ان الانسان لفى خسر"-

আয়াতসমূহের অনুবাদ : আল্লাহ তায়ালা বলেন– ১. শপথ যুগের (সময়ের)। ২. নিশ্চয় মানুষ ক্ষতিগ্রস্ত। ৩. কিন্তু তারা নয়, যারা বিশ্বাস স্থাপন করে ও সৎকর্ম করে এবং পরস্পরকে তাকিদ করে সত্যের এবং তাকিদ করে ধৈর্যের।

▶▶ প্রশ্ন : ১ ॥ আল্লাহ তায়ালার বাণী– اِنَّ الْاِنْسَانَ لَفِىْ خُسْرٍ-এর তাফসীর কর।

উত্তর ॥ **আয়াতের তাফসীর :** মহান আল্লাহর বাণী– اِنَّ الْاِنْسَانَ لَفِىْ خُسْرٍ অর্থাৎ, নিশ্চয় মানুষ ক্ষতির মধ্যে রয়েছে। এখানে اَلْاِنْسَانُ তথা মানুষ বলতে মনুষ্য জাতিকে বোঝানো হয়েছে। এতদ্ব্যতীত পরবর্তী اِسْتِثْنَاء বিশুদ্ধ হবে না। পৃথিবীর সকল মানুষই এ اِنْسَان-এর অন্তর্ভুক্ত। সুতরাং যারা সূরায় বর্ণিত চারটি গুণের অধিকারী হবে না, তারা সকলেই ক্ষতিগ্রস্ত হবে।

হজরত আবদুল্লাহ ইবনে আব্বাস (রা)-এর মতে, এখানে اَلْاِنْسَانُ দ্বারা মুশরিকদের একটি বিশেষ দল উদ্দেশ্য। যেমন– ওয়ালীদ ইবনে মুগীরা, আস ইবনে ওয়ায়েল, আসওয়াদ ইবনে আবদুল মুত্তালিব প্রমুখ।

আয়াতে خُسْر শব্দটির আভিধানিক অর্থ– ক্ষতি, ধ্বংস, লোকসান, ব্যবসায় বাণিজ্যে অকৃতকার্য হওয়া ইত্যাদি। উপর্যুক্ত আয়াতেও শব্দটি এরূপ অর্থে ব্যবহার হয়েছে। ব্যবসায় বাণিজ্যে যখন ক্ষতি বা লোকসান হয়, তখনই আরবিতে বলা হয় وَقَعَتْ فِىْ خُسْرٍ অর্থাৎ, তুমি ক্ষতিতে পতিত হয়েছ।

٢- حقق كلمات الاتية : خسر، عملوا، تواصوا، الحق-

▶▶ প্রশ্ন : ২ ॥ নিচের শব্দগুলো বিশ্লেষণ কর : خسر، عملوا، تواصوا، الحق

উত্তর ॥ **শব্দগুলোর বিশ্লেষণ :**

(٢) **তাহকীক :**

خُسْرٌ : এটি বাবে سَمِعَ-এর মাসদার। অন্য মাসদার হলো اَلْخَسَارُ ও اَلْخُسْرَانُ - اَلْخَسَارَةُ মাদ্দাহ خ - س - ر জিনসে صَحِيْح অর্থ– ক্ষতি। উল্লেখ্য, কখনো خَسَارَة-এর সম্পর্ক মানুষের দিকে করা হয়। যেমন বলা হয়, অমুকের ক্ষতি হয়েছে, অমুক ক্ষতিগ্রস্ত হয়েছে। আবার কখনো কর্মের দিকে করা হয়।

عَمِلُوْا : সীগাহ جَمْع مُذَكَّر غَائِب বাহাস اِثْبَات فِعْل مَاضِىْ مَعْرُوْف বাবে سَمِعَ মাসদার اَلْعَمْلُ মাদ্দাহ ع - م - ل অর্থ– তারা আমল করেছে।

تَوَاصَوْا : সীগাহ جَمْع مُذَكَّر غَائِب বাহাস اِثْبَات فِعْل مَاضِىْ مَعْرُوْف বাবে تَفَاعُل মাসদার اَلتَّوَاصِى মাদ্দাহ و - ص - ى জিনসে لَفِيْف مَفْرُوْق অর্থ– তারা পরস্পর একে অন্যকে উপদেশ দেয়।

اَلْحَقُّ : শব্দটি বাবে ضَرَبَ-এর মাসদার। এর আভিধানিক অর্থ– সত্য, সঠিক, নির্ভুল, সুবিচার ইত্যাদি। এটি ব্যাপক অর্থবোধক শব্দ। এখানে اَلْحَقُّ দ্বারা মানুষের অধিকার রক্ষা ও তা আদায় করত পারস্পরিক উপদেশ প্রদান প্রসঙ্গে বলা হয়েছে।

(ب) انا انزلنه فى ليلة القدر- وما ادرك ما ليلة القدر- ليلة القدر خير من الف شهر- تنزل الملئكة والروح فيها باذن ربهم من كل امر- سلم هى حتى مطلع الفجر-

আয়াতসমূহের অনুবাদ : আল্লাহ তায়ালা বলেন– ১. আমি একে নাযিল করেছি কদরের রাতে। ২. কদরের রাত সমন্ধে আপনি কি জানেন? ৩. কদরের রাত হলো একহাজার মাস অপেক্ষা শ্রেষ্ঠ। ৪. এতে প্রত্যেক কাজের জন্য ফেরেশতাগণ ও রূহ অবতীর্ণ হয় তাদের পালনকর্তার নির্দেশক্রমে। ৫. এটা নিরাপত্তা, যা ফজরের উদয় পর্যন্ত অব্যাহত থাকে।

١- فسر قوله تعالى "تنزل الملئكة والروح فيها باذن ربهم من كل امر" -

প্রশ্ন : ১ আল্লাহ তায়ালার বাণী– تَنَزَّلُ الْمَلٰئِكَةُ وَالرُّوْحُ فِيْهَا بِاِذْنِ رَبِّهِمْ مِنْ كُلِّ اَمْرٍ-এর তাফসীর কর।

উত্তর : تَنَزَّلُ الْمَلٰئِكَةُ وَالرُّوْحُ ... الاية-এর দ্বারা উদ্দেশ্য/তাফসীর : আলোচ্য আয়াতে কারীমার মর্মার্থ হচ্ছে– এ রাতে ফেরেশতাকুল ও জিবরাঈল (আ) মহান আল্লাহর পক্ষ হতে অমিয় বাণী ও প্রশান্তি নিয়ে অবতরণ করেন। অত্র আয়াতে কারীমায় উল্লিখিত تَنَزَّلُ الْمَلٰئِكَةُ وَالرُّوْحُ শব্দের সঠিক উদ্দেশ্য নির্ণয়ে ওলামায়ে কেরাম বিভিন্ন অভিমত ব্যক্ত করেছেন। যেমন–

১. জমহুর আলেমের মতে, এর দ্বারা হজরত জিবরাঈল (আ)-কে বোঝানো হয়েছে।
২. অথবা, ফেরেশতাগণের এমন একটি দল উদ্দেশ্য, যাঁরা শুধু কদরের রাতে অবতরণ করে থাকেন।
৩. অথবা, رُوْح-এর অর্থ হলো, বড় ফেরেশতা, সমস্ত আসমান ও জমিন যার এক গ্রাস হবে।
৪. অথবা, এর দ্বারা মহান আল্লাহর এক বিশেষ সৃষ্টি উদ্দেশ্য; যারা মানুষও নন আবার ফেরেশতাও নন।
৫. অথবা, কারও কারও মতে, رُوْح দ্বারা রহমত ও শান্তি উদ্দেশ্য।
৬. অথবা, হজরত ঈসা (আ) উদ্দেশ্য। কেননা তাঁর এক নাম রূহ। তিনি উম্মতে মুহাম্মাদীর অবস্থা দেখার জন্য অবতরণ করেন। এখানে প্রথমোক্ত অভিমতই সর্বাধিক গ্রহণযোগ্য।

٢- تحدث عن اهمية ليلة القدر بالايجاز -

প্রশ্ন : ২ লাইলাতুল কদরের গুরুত্ব সংক্ষেপে আলোচনা কর। [ফা. অনার্স প. ২০২০]

উত্তর : লাইলাতুল কদরের গুরুত্ব : বনি ইসরাঈলের মধ্যে একজন লোক এমন ছিলেন, যিনি সারা দিন কালেমায়ে দ্বীন সমুন্নত করার উদ্দেশ্যে জিহাদে রত থাকতেন, আর রাতভর নফল ইবাদতে মশগুল থাকতেন। এভাবে তিনি একহাজার মাস কাটিয়ে দেন। রাসূল (স) এ ঘটনা সাহাবীগণের সামনে তুলে ধরলে তাঁরা হতাশ হয় যান। তখন সাহাবীগণকে সান্ত্বনা দিয়ে উম্মতে মুহাম্মাদীর শ্রেষ্ঠত্ব বর্ণনা করে আল্লাহ তায়ালা অবতীর্ণ করেন। লাইলাতুল কদরের গুরুত্ব অপরিসীম। এ সম্পর্কে মুফাসসিরগণের বক্তব্য নিম্নরূপ–

১. ইমাম যুহরী (র)-সহ একদল মুফাসসিরের মতে, কদর-এর অর্থ– মাহাত্ম্য, মর্যাদা, সম্মান ও সম্ভ্রম। অর্থাৎ এটা অতীব মাহাত্ম্যপূর্ণ, মর্যাদাশালী ও সম্মানিত রাত। এ সূরায় 'কদরের রাত হাজার মাসের চেয়েও উত্তম' কথা হতে এর সমর্থন পাওয়া যায়।
২. একদল মুফাসসিরের মতে, কদর-এর অর্থ হলো– তাকদীর। কেননা, এ রাতে আল্লাহ তায়ালা তাকদীরের ফয়সালা করার দায়িত্ব ফেরেশতাগণের নিকট সোপর্দ করে দেন।
৩. শায়খ আবু বকর (র) বলেন, এ রাতে ইবাদতের কারণে এমন লোকেরও মর্যাদা বৃদ্ধি পায়। ইতঃপূর্বে যাদের কোনো মর্যাদা ছিল না। এজন্য এ রাতকে ليلة القدر বলা হয়।

(ج) والليل اذا يغشى - والنهار اذا تجلى - وما خلق الذكر الانثى - ان سعيكم لشتى - فاما من اعطى واتقى - وصدق بالحسنى - فسنيسره لليسرى -

আয়াতসমূহের অনুবাদ : আল্লাহ তায়ালা বলেন– ১. শপথ রাত্রির, যখন সে আচ্ছন্ন করে। ২. শপথ দিনের, যখন সে আলোকিত হয়। ৩. এবং তাঁর, যিনি নরনারী সৃষ্টি করেছেন। ৪. নিশ্চয় তোমাদের কর্ম প্রচেষ্টা বিভিন্ন ধরনের। ৫. অতএব, যে দান করে এবং আল্লাহভীরু হয়। ৬. এবং উত্তম বিষয়কে সত্য মনে করে। ৭. আমি তাকে সুখের বিষয়ের জন্য সহজ পথ দান করব।

١- اكتب مميزات الليل والنهار -

প্রশ্ন : ১ রাত ও দিনের বৈশিষ্ট্যাবলি লেখ।

উত্তর : রাতের বৈশিষ্ট্যাবলি : রাতেরবেলায় সকল জীবজন্তু বিশ্রামের জন্য নিজ নিজ বাসস্থানে চলে যায়। দিনের ব্যস্ততা থেকে প্রশান্ত জীবনে পদার্পণ করে গভীর নিদ্রায় ঢলে পড়ে। যে নিদ্রা শরীরের প্রশান্তি দানকারী ও আত্মার খোরাক।

দিনের বৈশিষ্ট্যাবলি : দিনেরবেলায় রাতের সকল অন্ধকার দূরীভূত হয়। মানবজীবনে প্রাণচাঞ্চল্য ফিরে আসে। সকল মানুষ নিজ নিজ কাজে ব্যস্ত হয়ে পড়ে, পাখি ও অন্যান্য জীবজন্তু খাদ্যের সন্ধানে বাসা থেকে বেরিয়ে পড়ে। আল্লাহ তায়ালা দিন সৃষ্টি না করে শুধু রাত সৃষ্টি করলে মানুষের জীবনধারণ দুঃসাধ্য হয়ে পড়ত। অপরপক্ষে সর্বদা যদি দিন হতো তাহলে মানুষের আরাম আয়েশ বন্ধ হয়ে যেত।

٢- حلل الكلمات الاتية : يغشى، تجلى، لشتى، واتقى -

প্রশ্ন : ২ নিচের শব্দগুলো বিশ্লেষণ কর : يغشى، تجلى، لشتى، واتقى

উত্তর : শব্দগুলোর বিশ্লেষণ :

(২) **তাহকীক :**

يَغْشٰى : সীগাহ وَاحِد مُذَكَّر غَائِب বাহাস اِثْبَات فِعْل مُضَارِع مَعْرُوْف বাবে سَمِعَ يسَمِعَ মাসদার اَلْغِشَاءُ মাদ্দাহ غ - ش - ى জিনসে نَاقِص يَائِى অর্থ– আচ্ছন্ন করে ফেলে।

تَجَلّٰى : সীগাহ وَاحِد مُذَكَّر غَائِب বাহাস اِثْبَات فِعْل مَاضِى مَعْرُوْف বাবে اَلتَّفَعُّلُ মাসদার التجلى মাদ্দাহ ج - ل - و জিনসে اَلنَّاقِصُ الْوَاوِىْ অর্থ– আলোকিত হয়ে পড়ে।

لَشَتّٰى : এখানে لام-টি তাকিদের জন্য ব্যবহার হয়েছে। কারও কারও মতে, شَتّٰى শব্দটি একবচন, আবার কারও মতে, এটি شَتِيْتٌ-এর বহুবচন। অর্থ– বিভিন্ন প্রকৃতির।

وَاتَّقٰى : এখানে و-টি حَرْف عَطْف হিসেবে ব্যবহার হয়েছে। আর اِتَّقٰى শব্দটির সীগাহ وَاحِد مُذَكَّر غَائِب বাহাস اَثْبَات فِعْل مَاضِى مَعْرُوْف বাবে اَفْتِعَال মাসদার اَلْاِتَقَاءُ মাদ্দাহ و - ق - ى জিনসে لَفِيْف مُفْرُوْق অর্থ– সে ভয় করল।

(د) قل يايها الكفرون - لا اعبد ما تعبدون - ولا انتم عبدون ما اعبد - ولا انا عابد ما عبدتم - ولا انتم عابدون ما اعبد - لكم دينكم ولى دين -

আয়াতসমূহের অনুবাদ : আল্লাহ তায়ালা বলেন– ১. বলুন, হে কাফেরগণ! ২. আমি ইবাদত করি না, তোমরা যার ইবাদত কর। ৩. আর তোমরাও ইবাদতকারী নও, যার ইবাদত আমি করি। ৪. আমি ইবাদতকারী নই, যার ইবাদত তোমরা কর। ৫. তোমরা ইবাদতকারী নও, যার ইবাদত আমি করি। ৬. তোমাদের কর্ম ও কর্মফল তোমাদের জন্য এবং আমার কর্ম ও কর্মফল আমার জন্য।

١- تحدث عن خلفية نزول هذه السورة -

▶▶ প্রশ্ন : ১ ॥ এ সূরাটি নাযিল হওয়ার প্রেক্ষাপট আলোচনা কর।

উত্তর ॥ **সূরা আল কাফিরূন-এর অবতীর্ণের প্রেক্ষাপট/শানে নুযূল :** সূরা আল কাফিরূন-এর শানে নুযূল নিম্নরূপ–

১. হজরত ইবনে আব্বাস (রা) বর্ণনা করেন, মক্কার কুরাইশরা নবী কারীম (স)-কে এ বলে প্ররোচিত করছিল যে, হে মুহাম্মাদ! আমরা তোমাকে বিপুল পরিমাণ ধনসম্পদ সংগ্রহ করে দেব। ফলে তুমি মক্কার একজন ধনী লোকে পরিণত হবে। আর তুমি যে মহিলাকে বিবাহ করতে চাও, আমরা তাকে তোমার সাথে বিবাহ দিতে প্রস্তুত। তবে তোমার নিকট আমাদের নিবেদন হলো, তোমাকে আমাদের দেবতাসমূহের প্রতি বিদ্বেষ থেকে বিরত থাকতে হবে, আর তাদের ব্যাপারে কোনো বিরূপ সমালোচনাও করবে না। আর তুমি একবছর আমাদের দেবদেবীর পূজা করবে, আর আমরাও একবছর তোমাদের প্রতিপালকের ইবাদত করব। এ প্রস্তাব শুনে মহানবী (স) চুপ থাকলেন এবং বললেন, অপেক্ষা কর, দেখ! মহান আল্লাহর পক্ষ থেকে কোনো নির্দেশ আসে কি না। তখন আলোচ্য সূরা নাযিল হয়। (লুবাব)

২. হজরত সাঈদ ইবনে মাউনা (রা) বলেন, একবার ওয়ালীদ ইবনে মুগীরা, আস ইবনে ওয়ায়েল, আসওয়াদ ইবনে মুত্তালিব ও উমাইয়া ইবনে খালফসহ কুরাইশ কাফের নেতারা মহানবী (স)-এর সাথে সাক্ষাৎ করে বলল, হে মুহাম্মাদ! তুমি আমাদের মাবুদগুলোর ইবাদত কর, আমরাও তোমার মাবুদের ইবাদত করব। তুমি আমাদের অনুষ্ঠানমালায় অংশগ্রহণ কর, আমরাও তোমার অনুষ্ঠানমালায় অংশগ্রহণ করব। তখন আল্লাহ তায়ালা আলোচ্য সূরা নাযিল করেন। (খাযেন, ইবনে কাসীর)

٢- فسر الاية "لكم دينكم ولى دين" -

▶▶ প্রশ্ন : ২ ॥ لكم دينكم ولى دين আয়াতের তাফসীর কর।

উত্তর ॥ **আয়াতের তাফসীর :** আলোচ্য আয়াতের অর্থ অবলোকন করে অনেক লোক বিভ্রান্ত হয়। তারা বলে– তা দ্বারা ইসলাম অন্যান্য ধর্মাবলম্বীদের ধর্মের স্বীকৃতি দিয়েছে। যদি তাদের ধর্ম সত্যই না হবে তবে আল কুরআনে কেন একথা বলা হলো যে, তোমাদের ধর্ম তোমাদের, আমার ধর্ম আমার। এটা দ্বারা দু'ধর্মকেই পাশাপাশি অবস্থান করার এবং একে অপরের ওপর হস্তক্ষেপ না করার স্বীকৃতি পাওয়া যায়। কিন্তু دين শব্দ দ্বারা এখানে কী বোঝানো হয়েছে; তা চিন্তা না করার ফলেই তাদের মনে এ উদ্ভট চিন্তার উদয় হয়েছে। এখানে دين শব্দটি কর্মফল অর্থে ব্যবহার হয়েছে। যেমন সূরা আল ফাতিহায় আল্লাহকে مالك يوم الدين অর্থাৎ, কর্মফল দিনের কর্তা বলা হয়েছে। সুতরাং এই অর্থ গ্রহণ করলে আয়াতের মর্ম হবে– তোমাদের কর্মফল তোমরা ভোগ করবে, আমার কর্মফল আমি ভোগ করব। যেহেতু এ আয়াত ইসলামের প্রথম যুগে মক্কায় অবতীর্ণ হয়, তখন জিহাদের বিধান অবতীর্ণ হয়নি। তাই কতিপয় তাফসীরকার বলেন– এ আয়াতের বিধান দ্বারা কাফেরদেরকে ইসলামের প্রথম যুগে ধর্ম পালনের যেটুকু অবকাশের কথা ভাবা যায়, তা জিহাদের বিধান দ্বারা রহিত করা হয়েছে। দ্বীনকে ধর্ম অর্থে গ্রহণ করলে আমরা একথাও বলতে পারি যে, এটা ঠিক অনুরূপ কথার ন্যায়, যেমন আমরা ধিক্কার ও ভর্ৎসনার ক্ষেত্রে বলে থাকি– 'তোমার পথে তুমি, আমার পথে আমি'। একথা দ্বারা আমরা যেমন তার পথের স্বীকৃতি দেই না এবং সহাবস্থানেরও অবকাশ বোঝাই না; বরং তা দ্বারা পথের ভয়াবহ পরিণতির দিকেই ইঙ্গিত করা হয়। আলোচ্য আয়াতেও অনুরূপভাবে 'তোমার দ্বীন তোমার, আমার দ্বীন আমার' বলে তাদের জীবনাদর্শ ও শিরকি কর্মপন্থার ভয়াবহ পরিণতির দিকেই ইঙ্গিত করা হয়েছে। তাদের শিরকি জীবনাদর্শ ও মতবাদের স্বীকৃতি বা পাশাপাশি অবস্থানের কথা বলা হয়নি।